पुस्तक इस यात्रा के सम्बन्ध में दूसरे लोगों की लिखी हुई अब तक मेरी दृष्टि में आई हैं उन सब में यह पुस्तक बहुत अच्छी लिखी गई है, इसमें वर्तमान काल तक के सब समाचार पाये जाते हैं। स्वामी जी की इस पुस्तक में भगवान के विराट रूप के 'स्थावराणां हिमालयः' के दर्शन होते हैं।

जहां हिमालय की यात्रा करने वालों के लिए अपने पास इस पुस्तक का रखना आवश्यक है वहां धार्मिक जनता भी हिमालय जैसी पवित्र देव भूमि के समाचार से घर बैठे ही अवगत होकर अपने कर्तव्य का पालन कर सकती है।

श्री स्वामी जी महाराज ने इस पुस्तक को लिख कर जनता की एक बड़ी मांग को पूरा किया है। और यह आपका बड़ा परोपकार है, इस बृहत पुस्तक के परिश्रम को देखते हुए मूल्य ११) बहुत ही स्वल्प है। हिन्दु जनता को इससे पूर्ण लाभ उठाना चाहिए।

❀ श्रीहरिः ❀

प्रमाणिक और [सचित्र]

श्री बद्री-केदार यात्रा

परिवर्तन और परिवर्धित संस्करण

जिसमें—

हरिद्वार, मायापुरी, कनखल, ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम देव प्रयाग, श्री नगर, रूद्र प्रयाग, केदारनाथ, ऊषा मठ, तुङ्गनाथ, गोपेश्वर, चमोली; पीपल कोटि, जोशी मठ, श्री बद्रीनाथ, जमुनोत्री, गङ्गोत्री, बूढ़ा केदार, कैलाश, मान सरोवर, आदि उत्तराखंड के समस्त तीर्थों का माहात्म्य और यात्रा का वर्णन भली प्रकार से है।

छठीबार सं० २०१० मूल्य

२००० सन् १९५४ १।)

लेखक—

स्वामी "बुद्धिचन्द्र" पुरी "हिमकर"

प्रकाशक—

श्री रामेश्वर पुस्तकालय

श्रीगुरु श्री चन्द्र जी का मन्दिर

पो० कनखल (सहारननुर) यू० पी०



मुद्रक—

टैम्पल प्रेस, कनखल

इन मोटर, रेल और हवाई जहाज आदि साधनों के कारण हमारे कितने ही श्रेष्ठ तीर्थों की पवित्रता नष्ट हो गई है। क्यों कि इन आधुनिक साधनों के बल से हर प्रकार के व्यक्ति अपनी अनेक सांसारिक कामनाओं की पूर्ति के लिये इन तीर्थ स्थानों में पहुँचते हैं जिस के फल स्वरूप तीर्थों की पवित्रता नष्ट हो जाती है। यदि श्री बद्रीधाम में भी बारहों मास यात्रियों का आवागमन रहता तो इस में कोई सन्देह नहीं कि इस महान पुण्यतम तीर्थ की पवित्रता भी इन आधुनिक साधनों के कारण नष्ट हो जाती। किन्तु प्रकृति के आगे मनुष्य का वश नहीं चलता यहां वर्ष में छः मास ही यात्रा चलती है। बैशाख शुक्ल अक्षय-तृतीया के समीप २४ प्रविष्ठे से ३० प्रविष्ठे के अन्दर श्री बद्रीनाथ जी के पट खुल जाते हैं और कार्तिक के अन्त में पट बन्द हो जाते हैं। फिर बर्फ पड़ने लगती है जिस से मनुष्य का वहां रहना असम्भव हो जाता है। इस प्रकार श्री बद्रीनाथ धाम की पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहती है। यह सब वहां निवास करने वाले श्री बद्री विशाल की महिमा है।

यद्यपि श्री बद्री धाम की यात्रा के लिये मोटर लारियों की सुविधा हो गई है किन्तु लारियों में यात्रा करने वालों को उत्तरा खण्ड पर्वत माला की अलौकिक रचना देखने का कुछ भी आनन्द नहीं आता। बल्कि इस के विपरीत सड़क ऊंची नीची और घुमावदार होने के कारण मोटर में यात्रियों को घूमनी आती है और जी भी मिचलता है जिस से वे बेचैनी की की अवस्था में नेत्र बन्द किये यात्रा करते हैं। इस महान् पुण्य-

तम तीर्थ की यात्रा का पूर्ण सुखदायक फल तो पैदल यात्रा करने से ही प्राप्त होता है।

प्राचीन समय में कहीं दूर अनजाने स्थान की यात्रा करने पर पथ प्रदर्शक की आवश्यकता होती थी और आज के युग में रेल से यात्रा करने पर "टाइम टेबिल" की आवश्यकता पड़ती है और जिस स्थान पर जाया जाता है वहां का इतिहास जानने के लिये हमपथ प्रदर्शक के स्थान पर 'पथ प्रदर्शक पुस्तक' से कार्य लेते हैं। श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा करने के लिए भी हमें 'पथ प्रदर्शक पुस्तक' की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रकार की यात्रा की पुस्तकें जो इधर उधर से नकल कर के लिखी जाती हैं उन से यात्रियों को बड़ा कष्ट होता है। यदि वही पुस्तक किसी अनुभवी व्यक्ति की लिखी हुई हो तो वह सोने में सुगन्ध जैसा काम देती है।

जिस पुस्तक की आप यह भूमिका पढ़ रहे हैं वह यह पुस्तक एक ऐसे ही अनुभवी, सदाचारी सज्जन साधु की लिखी हुई है। जो तीनवार उत्तराखण्ड के तीर्थ स्थानों की यात्रा कर चुके हैं और मार्ग के समस्त स्थानों का भी भली प्रकार अध्ययन किया है, यही कारण है कि कुछ ही वर्षों में इस पुस्तक के पांच संस्करण समाप्त हो गये और अब यह छठा संस्करण आप के हाथ में है।

श्री बद्री केदार यात्रा के पांचवें संस्करण में १६८ पृष्ठ थे। इस बीच में श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा में जो परिवर्तन

हुआ है वह सब इस छठे संस्करण में भली प्रकार दिया गया है इसी से इस संस्करण में २१६ पृष्ठ हो गये हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में श्री बद्रीनाथ, केदार नाथ, गङ्गोत्री, जमुनोत्री, और इन तीर्थों के बीच में पड़ने वाले सभी तीर्थों का महात्म्य भी दिया गया है। और बीच २ में भक्ति रस पूर्ण कितने ही ऐसे भजन भी दिये गये हैं जिन्हें गा कर यात्री गण सत्सङ्ग का आनन्द भी प्राप्त कर सकते हैं और यही नहीं, प्रस्तुत पुस्तक में अनेक तीर्थ स्थानों के दर्जन से अधिक चित्र भी हैं। साथ ही मोटर लाइन का विस्तृत विवरण तथा एक बड़ा मानचित्र भी है जिस से पुस्तक बहुत ही महत्व पूर्ण होकर केवल यात्रा के उपयोगी ही नहीं बल्कि सदैव पास रखने के योग्य हो गई है।

आशा है कि यात्रीगण इस पुस्तक से सदैव लाभ उठायेंगे !

—❀—

विद्या वारिधि पुस्तकालय
हरिःद्वार
आषाढ़ शुक्ल नवमी
संवत् २०१० विक्रमी

सज्जनों का कृपा पात्र
महावीर प्रसाद मिश्र
"साहित्य भूषण"

परि क्रमेतु यो देवं बदरी नायकं परम् ।

स समुद्र वन द्वीपा दत्ता भूमिर्महात्मना ॥

प्रिय पाठक गण !

आज हम बद्री विशाल की असीम अनुम्कपा से आप के सन्मुख श्री बद्री केदार यात्रा का छठा संस्करण रख रहे हैं यह सब परम कृपालु सन्त समाज सद् ग्रहस्थ गुण ग्राही भक्तों की कृपा का फल है। जब हमने सन् १९३३ ई० में इस का प्रथम संस्करण निकाला था। उस समय हृदय में यही प्रबल इच्छा थी कि जनता भक्त मंडली अधिक से अधिक उत्तराखंड की यात्रा करें। भगवान् शङ्कर की कृपा से वहीं हुआ। लाखों प्राणियों को उत्साह मिला। सहस्रों ने अपनी सम्मति प्रदान की समाचार पत्रों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। हम उन सब के अभारी हैं, आशा है भविष्य में भी वह इसी प्रकार सहयोग का हाथ बढ़ाते रहेंगे।

इस पुस्तक की रचना केवल स्वार्थ के लिये नहीं की गई इस का लक्ष्य तो जनता जनार्दन को सत्य मार्ग में लाना है। कुछ लोगों ने (जो एक वार भी उत्तराखंड की यात्रा नहीं की) नवीन पुस्तकें लिख कर यात्रियों को धोखा दिया है और इस यात्रा की बढ़ती हुई मार्ग को रोकने की चेष्टा की है। सो यह नई बात नहीं है प्रायः ऐसे लोग सदा से करते आये हैं। उन के लिये उनकी करनी है उन को दंड देगी। साहित्य सेवी भक्त-गण नकालों से बच कर हमारा नाम देख कर पुस्तक को खरीदें कुछ लोग सन् देखते हैं कि यह अब नई छपी है। इसे ही लिया

, इस में नवीनपन होगा। नहीं लेखक के नाम पर अनुमान ा चाहिये और उस की रचना लेनी चाहिये स्कंद पुराण में र खंड की बड़ी महिमा गाई गई है। इस गये बीते जमाने ी अनेक योगी राज इधर तपस्या कर रहे हैं परन्तु उनके न यात्रा लाईन पर नहीं मिलेंगे। उन के लिये तो आप को से पृथक खोज करनी पड़ेगी सम्भव है आप के भाग्य से मार्ग में ही मिल जायें।

मोटर की दौड़ में पालकी की गोद वह आप को न नही दे सकते। उनके लिए तो आपको सात्विक प्रकृति म्र भाव से सच्चा यात्रि बन कर चलना होगा। संसार के म विकार संकल्प विकल्प त्यागने होंगे। तब कहीं श्री त कृपा से आप को महान् आत्माओं के दर्शन हो सकते याद रखिले यदि आपको महात्मा न भी मिलें, तो आप य महात्मा बन जायेंगे।

अब उतनी यात्रा इस प्रदेश की नहीं रही है जितनी कि ले थी। अब प्रत्येक व्यक्ति प्रेम पूर्वक जा सकता है। किन्तु । में प्रेम और श्रद्धा चाहिये। वे भी तो प्राणी थे जो कठिन से हिमालय की यात्रा कर चुके हैं। आप तो उत्तम समय त्पन्न हुए हैं जब कि यात्रा मार्ग सुगम हो गया है यात्रा में क लाभ हैं जो लेखनी द्वारा बतलाये नहीं जाते उत्तराखंड ।वित्र भूमि को देखने से ही आनन्द की प्राप्ति मालूम होती है।

स्वामी बुद्धिचन्द्र पुरी 'हिमकर' तीर्थयात्री

कविरत्न, काव्य मनीषी, काव्य धुरीण, साहित्य भूषण, साहित्यालंकार

बार इधर आइये। संसार में आने का यही एक मुख्य लाभ है कि भारतवर्ष के पवित्र हिमालय (कैलाश) के बन उपबनों का भ्रमण करना और भगवान् के नाम का जाप करके परम शान्ति की ओर झुकना। हमारा जीवन प्रति दिन रेल के समान जा रहा है और हम को इस की कुछ भी खबर नहीं।

आदित्यस्य गता गतैरहरहः संक्षीयते जीवतं-
व्यापारैर्बहु कार्य भार गुरुभि कालो विज्ञायते।
दृष्ट्वा मोह मयी प्रमाद मदिरा मुन्मत भूतं जगत् ॥

सूर्य के उदय और अस्त के साथ मनुष्य की आयु प्रति दिन घटती जाती है। समय भागता जाता है, पर काम काज में मस्त (पागल) रहने के कारण वह भागता हुआ नहीं दीखता। लोगों को पैदा होते बूढ़े होते, विषय ग्रस्त होते और मरते देख कर भी मन में भय नहीं होता। इस से मालूम होता है कि मोह मयी प्रमाद रूपी मदिरा (शराब) के नशे में संसार मतवाला हो रहा है।

श्री उत्तराखण्ड की पावन भूमि के पद पद पर एक झलक दीखती है। सुन्दर बनों का दर्शनीय चित्र पर्वतों से झन झन करते हुए झरने। विचित्र बन पशु और भांति २ के पक्षी और उन की मधुर बोलियां मन को मोह लेती हैं। पर्वत मालाओं में अनेक प्रकार के पेड़ भगवान् के अद्भुत कार्य का परिचयदेते हैं

प्राचीन भारत की सादगी, ऋषियों के आश्रमों का दर्शन इसी भूमि में पाया जाता है। यहां भारत में पांडवों ने इसी प्रांत को अपनाया और अपना जीवन यात्रामय बनाकर अनुपम लाभ उठाया अन्त में राज परित्याग कर स्वर्गारोहण भी इसी हिमालय में हुआ।

अरब खरब लौं द्रव्य है, उदय अस्त लों राज ।
जो तुलसी निज मरण है, तो आवे केहि काज ॥

गन्ध मादन पर्वत के सुन्दर सरोवर भीमसेन ने देखे उन का कितना सुन्दर उल्लेख महाभारत के बन पर्व में आता है। जिसे पढ़कर प्राणी सोचता है, यह सब कुछ सत्य है या असत्य परन्तु जब वह इधर आता है तो उसे अपनी गाथाओं पर विश्वास होता है।

यात्रि को हिमांचल की ओर तपस्वी बन कर जाना चाहिये, प्रभु का भजन भी तब होता है, जब प्राणी में सात्विक भावना हो। या हृदय में अवगुणों का परिणाम समूह देख कर भय उत्पन्न हो। गुरु नानक ने भी कहा है 'भय बिन भक्ति न होई'

प्यारे मित्रो ! भय बिन भगवान कभी नहीं भजे जाते, हरिः तो क्या संसार का कोई भी साधन नेम प्रेम भय के बिना नहीं होता। पत्नि-सेवक-पुत्र शिष्य-बेटी प्रजा इसी प्रकार बड़े लोगों को भी समझना चाहिये। आज संसार में जो अशान्ति है उसका कारण परस्पर भय का न होना है।

जब संसार में भय था। तब सर्व सुख शान्ति थी। जब तक वह प्राचीन प्रणाली नहीं अपनाई जायेगी तब तक कभी शान्ति हुई है, न होगी।

तपसा शक्यते गन्तु पर्वतं गन्ध मादनम् ।
मपसा चैव कुन्तेय सर्वं मोक्ष्या महेव्यम् ॥

अर्थ—हे धर्म पुत्र तपस्या करने से ही गन्ध मादन पर चढ़ा जा सकता है। अतः आप सब तपश्चर्या करें।

मक्षिका दंश मद्राकान् सिंहान् व्याघ्रान सरी सृपान।
आसात्य नियतः पार्थ नियत सतान्त पश्यति ॥

अर्थात्—इस पर्वत पर मक्षिका, डांस मच्छर, सिंह व्याघ्र सर्प आदि बहुत से जीव रहते है। वे सब ही पवित्र और सदाचारी जीवों से बच कर रहते हैं।

आज तीर्थों पर भ्रष्टाचार का दौरा क्यों हैं। प्राणी सदाचार से हीन हैं। सदाचार ही प्राणी मात्र का जीवन है। इसी को अपनाने से हम सर्व सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। कथा-कीर्तन-सत्सङ्ग तीर्थ यात्रा तो बढ़ गई है परन्तु सदाचार का अभाव है। प्रत्येक मानव समाज के रत्न को सदाचारी करना चाहिये। भगवान् के उपकारों को प्रति दिन याद रखिये।

तुम गोपाल मोसों बहुत करी।
नर देही सुमिरन को दीन्हीं, मो पापी सों कुछ न सरी।
गर्भ वास अति त्रास अधो मुख, तहां न मोरी सुधि बिसरी॥
पावक जठर जरन नहीं दीनों, कञ्चन सी मेरी देह करी।
जग में जन्म पाप बहुत कीनों, आदि अन्त लौं सब बिगरी।
"सूर" पतित तुम पतित उधारन, अपने विरह की लाज धरी॥

महात्मा सूरदास जी के भाव अपनाइये। आपके हृदय में परम शान्ति प्राप्त होगी। हम ऐसे समय में पैदा हुए हैं, जहां पद २ पर हमें ठोकरें मिलती हैं और हम कलि महाराज की लीला से बच नहीं सकते। वहां सदैव हम को गो स्वामी तुलसी दास जी के शब्दों में कहना चाहिये

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे।
काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे॥

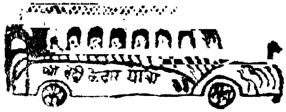
कौन देव बराय बिरद हित हठि हठि अधन उधारे।
खग मृग व्याध पषान विटप जड़ पवन कोन सुर तारे॥
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवश विचारे।
तिनके हाथ दास 'तुलसी' प्रभु कहा अपनयौ हारै॥

महानुभाव जीवन अल्प है जितना हो सके अपने समय को सन्मार्ग पर लगाईये। इस संकल्प को पहिले से अधिक सुन्दर उपयोगी बनाने का यत्न किया है। इस बार श्री केदारनाथ बद्रीनाथ जी का महात्म्य भी दे दिया गया है; और भी अनेक बातें सर्व साधारण के लाभार्थ दे दी गई हैं। बहुत परिश्रम करने पर भी यत्र तत्र प्रूफ संशोधन अशुद्धि रह गई हैं उन्हें विद्वान सुधार कर पढ़ें। श्री मान ब्रह्मचारी जी हर २ महादेव तथा श्री मान रायजादा पं० बेलीराम जी बाली श्री सनातन धर्म महा सभा के मन्त्री जी के हम अति कृतज्ञ हैं जिन्होंने हमें कुछ सुझाव दिये। और उन समाचार पत्रों विद्वानों एवं हरि भक्तों को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने हमारे उत्साह को बढ़ाया। श्री मान पं० महावीर प्रसाद जी ने भूमिका लिख कर जो उदारता का परिचय दिया है उस के लिये अनेक धन्यवाद है!

श्री गुरु श्री चन्द्र का मन्दिर
श्री रामेश्वर—पुस्तकालय
पो० कनखल (सहारनपुर)
गुरुवार १—१—५४

आपका
बुद्धिचन्द्र पुरी "हिमकर"
तीर्थ यात्रा

मोटर
लाईन



किराया
सूची

अलग २ हैं। हरिद्वार से ऋषिकेश का किराया ।।।-) आना है। ।) आना प्रति टिकट रिजर्वेशन दिया जाता है और ।।) आना चुङ्गी इस से भिन्न भिन्न स्थानों का किराया इस प्रकार है—

ऋषिकेश से धरासु, गङ्गोत्री जाने वाले।

स्टेशन	मील
नरेन्द्र नगर	१०
धागरा खाल	१८
नागनी	३२
चम्बा	३६
टिहरी	५१
शयासू	६६
धरासु	८०

नरेन्द्र नगर किराया-
लोअर ।।।) अपर १-)।।

टिहरी अपर ५।।-)।
लोअर ३।।≡)।।

धरासू अपर ८।।।)
लोअर ६।)

आगे जमुनोत्री ४८ मील रह जाती है गंगोत्री पैदल ७३½ मील जाईये।

बद्रीनाथ जी को ऋषिकेश किराया मोटर से देव प्रयाग
अपर ४।।।-)
लोअर ३।≥)

ऋषिकेश से कीर्ति नगर-
अपर ६।।।=)।

देव प्रयाग से कीर्ति नगर
लोअर ।-) अपर ।=)

श्री नगर से पीपल कोटि
लोअर ६।।।-) अपर ७।)

पीपल कोटि से आप को श्री बद्री धाम लगभग ३८।। मील रह जायेगा। सामान आदि के लिये जानकारी अधिकारियों से कीजिये। विशेष बातें पुस्तक में देखिये।

❀ शुभम् ❀

❀ श्री गणेषायनमः ❀

❀ अथ ❀

श्री बद्री केदार यात्रा–

[सचित्र]

॥ मंगला चरण ॥

गौरी श्रवः केतक पत्र भङ्ग मा कृष्य हस्तेन ददन्मुखाग्रे ।
विघ्नं मुहुर्ता कलित द्वितीय दन्त प्ररोहो हरतु द्विपास्यः ॥१॥
योगं योग विदां विधूत विविध व्यासंगशुद्धाशय-
प्रादुर्भूत सुधारस प्रसृमर ध्यानस्पदा ध्यासिनाम ॥२॥

अर्थ—पार्वती जी के कान में पहने हुए केतक पत्र को सूंढ से खींच कर, मुख के अग्र भाग से लगाते समय क्षण भर के लिये जिन के मुख से द्वितीय दांत का अंकुर सा निकलता जान पड़ा, वे भगवान गजानन मेरे विघ्न को हर लें ॥ १ ॥

जो नाना भांति के आशक्तियों से रति विशुद्ध अन्तःकरण में अमृत रस को प्रकट करने वाले दीर्घ ध्यान में तत्पर हुए योगियों के योग (प्राप्तव्य) हैं। आनन्द में तरङ्गायमान बोध जन्य मधुर अमोद की छटा से स्निध वर्ण हुए गजानन रूप में परिणत उन भूमा (पूर्ण) परमात्मा की हम उपासना करते हैं ॥ २ ॥

ॐ पूर्ण मदः पूर्ण मिदँ पूर्णात पूर्ण मुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते ॥ ३ ॥

अर्थ—ॐ वह पूर्ण है यह पूर्ण है, पूर्ण से पूर्ण होता है।
पूर्ण का पूर्ण से लेकर पूर्ण ही शेष रहता है ॥ ३ ॥

सजल जलद श्यामँ प्रेम वापी मरालँ,
अभिनव बन मालँ प्रेम वल्ली नलखी प्रवालम्।
भुवन नीलन जालं दानवा मां करालँ,
निखल मनुज पालं नौमितं नन्द बालम् ॥ ४ ॥

अर्थ—जल पूर्ण मेघ के सदृष्य कृष्ण, प्रेम वापिका के हंस, नवीन बन माला धारी, प्रेम लत्ता के पत्र भुवन कमल के जाल, दानव के लिये भयङ्कर और सम्पूर्ण जीवों के पालक श्री नन्द के बालक श्रीकृष्ण को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ४ ॥

नव-नीरद-शुन्दर-नील-वपुं,
शिति खण्ड शिखण्डित-भाल-शुभम्।
कमलाञ्जित-खञ्जन-नेत्र युगं,
तुलसीदल-दाम-सुगन्ध युतम ॥
जगदादि गुरूं बृजराज सुतं,
प्रणमामि निरन्तर श्री रमणम् ॥ ५ ॥

अर्थ—नवीन मेघ के समान जिसका सुन्दर श्याम शरीर है जिसके मस्तक पर मनोहर मोर मुकट है, लक्ष्मी जी को मुग्ध करने वाले जिनके खञ्जन के समान नेत्र हैं। तुलसी

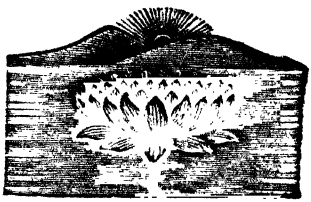
की मालाओं से जिनका सम्पूर्ण शरीर सुगन्धित हो रहा है। जगत के आदि रूप आदि गुरु जन लक्ष्मी पति श्री नन्द नन्दन को मैं सर्वदा प्रणाम करता हूँ ॥ ५ ॥

गोविन्द गोकुलादन्द वेणु वादन तत्परम् ।
राधिका रञ्जनं स्यामं वन्दे गोपाल नन्द नन्दनम् ॥६॥

अर्थ— गोकुल को आनन्द देने वाले बन्शी बजाने में लगे हुए श्री राधिका जी को प्रसन्न करने वाले और गोपाल (ग्वाल-बालों) के साथ खेलने वाले गोविन्द को मैं नमस्कार करता हूँ ॥ ६ ॥

❀ दोहा ❀

हरि भरोसे हो रहो, चलो हरि के धाम ।
मग बाधा कट जात है, "हिमकर" पूर्ण काम ॥७॥
केदार खंड पावन सदा, गंग यमुन की धार ।
"हिमकर" पावन भाग्य से, बद्रीनाथ दरबार ॥८॥



❀ प्रथम प्रकरण ❀

॥ हरिद्वार ॥

पश्चिमोत्तर प्रदेश में मायापुरी (हरिद्वार) है) जिसके विषय में हमारे सन्मुख एक श्लोक है।

अयुध्या-मथुरा-माया-काशी-काञ्ची-अविन्तिका: ।
पुरी-द्वारावती ज्ञेया, सप्तै ते मोक्ष दायिका ॥१॥

सात पुरियों में मायापुरी नामक स्थान यही है। श्री बद्री केदार की यात्रा करने वालों को प्रथम यहीं आना पड़ता है। शास्त्र तथा पुराणों में इस जगह का नाम स्वर्ग द्वार- गङ्गा द्वार- करके आया है। भारत के पवित्र उत्तराखण्ड की भूमि को स्वर्ग के नाम से पुकारते थे। देवी देवताओं के बिहार स्थान भी इसी प्रदेश में हैं। जिनका वर्णन महाभारत के बन पर्व में आता है। इस लिये इस को स्वर्ग द्वार कहते हैं। और उत्तरा खण्ड का मुख्य द्वार है पहाड़ों को छोड़ कर श्री गङ्गा जी का प्रथम २ यही दर्शन हुआ है। अर्थात् सगर पुत्रों के उद्धार करने को यहीं से गङ्गा जी खुले मैदान में आती हैं। इस लिये गङ्गा द्वार के नाम से पुकारा जाता है। हरिद्वार को हरद्वार भी कुछ लोग कहा करते हैं। शङ्कर के परमधाम केदारनाथ के लिये यही से सब लोग जाते हैं इस लिये उन्होंने हरद्वार नाम से

	भजन	पृष्ठ
१	सोती रहोगी कब तक	३६
२	ओम् दीनानाथ जी	५६
३	जय गंगे महारानी	६५
४	ब्रह्म जो व्यापक	७३
५	गङ्ग तरङ्ग	७३
६	तेरी निर्मल शीतल	७४
७	गई आयु विषयों में	७४
८	हिन्दी है	६५
९	जा दिन मन	१००
१०	दीन दयालु	११०
११	प्रीतम जान	११२
१२	म्हाने पार उतारो	११६
१३	ये मन नेक	११६
१४	समझ जा रे	२१७
१५	मो सम कौन	१४६
१६	ऐसों को उदार	१७८
१७	प्रभु की महिमा	१८४
१८	सुनिये	१८८
१९	तजो रे	१९०
२०	भक्त के	१९१
२१	मेरी बेड़ी डुबदी	१९३
२२	ऐ दिल जहां में	१९५
२३	कौन दिशा	२०५
२४	प्रेमी बद्री केदार	२१२
२५	जय जगदीश	२१६

	विषय					पृष्ठ
१	दो शब्द	०	०	०	०	५
२	प्राक्‌ कथन	०	०	०	०	१०
३	मोटर लाइन	०	०	०	०	१६
४	मङ्गलाचरण	०	०	०	०	१७
५	हरिद्वार	०	०	०	०	२०
६	आवश्यक कर्म	०	०	०	०	६६
७	ऋषिकेश को	०	०	०	०	७६
८	देव प्रयाग को	०	०	०	०	६६
९	रूद्र प्रयाग को	०	०	०	०	१०६
१०	केदारनाथ को	०	०	०	०	११८
११	केदार माहात्म्य	०	०	०	०	१२६
१२	चमोली को	०	०	०	०	२३१
१३	जोशी मठ	०	०	०	०	१३८
१४	बद्रीधाम को	०	०	०	०	१४४
१५	माहात्म्य	०	०	०	०	१५४
१६	वापिस कर्ण प्रयाग	०	०	०	०	१६३
१७	टिहरी को	०	०	०	०	१६८
१८	यमुनोत्री को	०	०	०	०	१७४
१९	गङ्गोत्री को	०	०	०	०	१८१
२०	बूढ़े केदार को	०	०	०	०	१८७
२१	त्रियुगी नारायण को	०	०	०	०	१८९
२२	कैलाश मान सरोवर	०	०	०	०	१९७
२३	देहरादून	०	०	०	०	२०२
२४	मन्सूरी	०	०	०	०	२०३
२५	चट्टियों की दूरी	०	०	०	०	२०६

श्री हरिः

❀ छठे संस्करण के सम्बन्ध में ❀

* दो शब्द *

इस पुण्य देश भारतवर्ष में मोक्ष देने वाली सप्त पुरियों के अतिरिक्त विशेष महत्वशाली और भी कितने ही प्रसिद्ध तीर्थ हैं। जिन में से एक प्रधान तीर्थ श्री बद्रीनाथ धाम भी है, श्री बद्रीनाथ धाम अन्य तीर्थों के समान भूमि पर नहीं है, यह उत्तराखण्ड की पर्वत माला का भाग हरिद्वारस्थ कनखल तीर्थ तक स्वर्ग कहलाता है। इस बद्रीनाथ धाम में स्वयं भगवान् विष्णु ने तपस्या करके पूर्णता लाभ की थी, इन्हीं विशेषताओं के कारण पद्मपुराण में अन्य सब तीर्थों की अपेक्षा श्री बद्रीनाथ धाम को पुण्यतम वैष्णव तीर्थ बतलाया है।

द्वारिकाध्वंस के पश्चात् व्यास जी के आदेशानुसार पाण्डवों ने हिमालय को प्रस्थान किया था। सो वे श्री बद्रीनाथ जी के दर्शन कर आगे जिस मार्ग से गये हैं वह मार्ग श्री बद्रीनाथ धाम की ऊपरी पर्वत माला में आज भी दृष्टि गोचर होता है और पाण्डवों के मार्ग के नाम से प्रसिद्ध भी है इस के अतिरिक्त पांडवों के आगमन के चिन्ह इस विस्तृत पर्वत माला में और भी कितने ही स्थानों पर दिखाई देते हैं।

श्री बद्रीनाथ धाम जाने का यह क्रम तब से लेकर अब से लगभग सौ वर्ष पूर्व तक इसी प्रकार का था कि पाण्डवों के अनुसार भगवद् भजन और तपस्या करते हुए जिन को भगवान् के चरणों में प्राण त्यागने होते थे वे लोग गृहस्थ आश्रम का समय समाप्त कर के त्यागी हो कर श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा

करते थे और श्री बद्रीनाथ धाम में पहुंचना, जीवित स्वर्ग में पहुँचना समझते थे, वहां से फिर लौटने की कामना न रख कर भगवान् के दर्शन और भजन करते हुए वे प्राण त्याग करते थे। इस प्रकार श्री बद्रीनाथ धाम को जाने वाले व्यक्ति में भगवान के प्रति महान श्रद्धा, विश्वास और भक्ति होती थी जिस के फल स्वरूप वे भगवान् विष्णु के परम पद को प्राप्त होते थे।
काल गति से बद्रीनाथ धाम जाने का मार्ग ज्यों २ सरल होता गया त्यों २ श्रद्धालु मनुष्य भगवान के चरण कमलों के दर्शनों को अधि काधिक संख्या में पहुँचने लगे और वहां अनेक देवताओं के दर्शनों का लाभ लेकर भी मोक्ष मार्ग का अनुसरण न कर के पुनः संसार चक्र में पिसने के लिये वापिस लौटने लगे।

भगवान् की दृष्टि में धनी और निर्धन में भेदभाव नहीं हैं। उन के लिये सब ही प्राणी समान हैं। और इस का ज्वलंत उदाहरण श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा प्रारम्भ करते ही मिल जाता था। धनी और निर्धन सब के पास एक सा ही यात्रा का साधन एक साथ ही यात्रा, एक ही रूप, एक साथ ही भोजन, शयन और एक साथ ही भगवान के दर्शन प्राप्त होते थे। किन्तु जब से श्री बद्रीनाथ धाम का मार्ग मोटर लारियों द्वारा प्रति वर्ष अधिक सुगम बनाया जाने लगा तब से धनी वर्ग मोटर लारी द्वारा यात्रा करने लगा, जिस से धनी और निर्धन का भेद दिखाई देने लगा, फिर भी अभी कई दिन का मार्ग ऐसा है जो पैदल ही पूरा करना पड़ता है और वहां फिर वही स्वभाविक एकता दिखाई देने लगती है।

पुकारना प्रारम्भ किया। और श्री बद्री धाम वैष्णवों का होने से वैष्णव इसे हरिद्वार कहते हैं। किसी समय यह महा-भयानक बन था परन्तु अब आप जिधर देखेंगे उधर भव्य मन्दिर दिखलाई देंगे सुन्दर पक्की सड़कें, मनोहर बाजार आदि पथिक के मन को हर लेते हैं। स्टेशन से निकलते ही आप को मोटर, तांगा, रक्षा, प्रचुर संख्या में जमाव दीखेगा। यहां से हरिः की पैड़ी एक मील है। पण्डा लोग आप को उसी समय मिल जाएंगे। हरिःद्वार आज एह अच्छे करबे के रूप में है।

हमारे अभाग्य से जब सन १९४७ में देश के दो टुकड़े हुए, तब ८० सहस्र के लगभग यहां पीड़ित जनता थी। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी कैम्प, बिड़ला कैम्प, पीड़ित सभा कैम्प उन का पालन पोषण कर रहे थे। सरकार की ओर से रानी पुर कैम्प में कई मीलों में पीड़ित थे हमारी सरकार ने जो सहायता की उसकी तुलना हम क्या करें। परन्तु खेद के साथ लिखा जाता हैकि पिड़ितों ने उस का मोल न पाया स्वार्थियों ने अपने हाथ खूब रंगे।

अब पहिले से अधिक आबादी हो गई है। यात्रियों के ठहरने को अनेक धर्मशालायें हैं। जिन में यात्री ठहर सकते हैं। रेलवे स्टेशन सन् १९३८ ईसवी के कुम्भ पर बहुत लम्बा चौडा बन गया है। और यात्रियों की सुविधा के लिये अनेक प्लेट फार्म भी बन गये थे। उनकी लम्बाई चौडाई भी बढ़ गई थी। मेले की भीड़ को छांटने के लिये कई फाटक (द्वार) हैं। स्टेशन के पर जाने के लिये दो बड़े फाटक हैं। एक गोलाईदार सड़क है

जिस में सब्ज टुकडा है और २४ घण्टे फुव्वारा चलता है। इसी स्थान पर रेलवे पुलिस स्टेशन है। गत हरिद्वार के कुम्भ सन् १६५० में स्टेशन के अन्दर और भी सुधार हुआ है। यात्रियों को भींगना न पड़े लोहे के गार्डर और टीन की चद्दरों से मजबूत छतें बना दी हैं। बाहर एक बडी सराय है जिस में यात्री ठहर सकता है। खान-पान की अनेक दुकानें हैं।

आगे चल कर आपको संत गरीब दासीयों का आश्रम है। कुछ ही कदम पर तीन रास्ते आ जाते हैं यहां पर एक प्राचीन बट वृक्ष था उसे काटकर मृत्युञ्जय भगवान की मूर्ति बनवाई गई है। २४ घन्टे जल धारा चलती रहती है। इसके विषय में "मन्त्र महो निद्धि" में आता है एक मन्त्र बह निम्न लिखत है।



हस्तांभोज युगस्थ कुम्भयुगलादूद्धृत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोयुगेनदधतं स्वांके सकुम्भो करौ।

अक्षसृग मृगहस्त मंबुज गतं मूर्ध्दस्थ चन्द्रस्त्रवत् ,
पीयोषन्नतनु भजे सगिरिजं मृत्यु जयँ अम्बकम् ॥

श्री भगवान पार्वती सहित तीन नेत्रवाले अमृतमयु तव शरीर वाले महामृत्युंजय को प्रणाम करता हूँ। जिस मृत्युं-जय के वे हस्त द्रव्य में स्थिल जो कलश उन के जल से शिर में अजस्त्र सेक करते हुवे और दोनों कोड़ में हाथों में कुम्भ धारण करने वालें तथा रूद्राक्ष की माला मृग चर्म हस्त कमलों में धारण करने वाले तथा जिनके मस्तक पर चन्द्र में से अमृत का झरना लगा है एसे वहां मृत्युंजय को प्रणाम है।

इसी जगह से दाहने हाथ कनखल को सड़क जाती है। कनखल यहां से लगभग १॥) मील और दक्ष घाट दो मील है। आगे आप को भाटिया भवन और सिद्धाश्रम को सड़क जाती है। इसी जगह चित्रा टाकीज है और एक गोयल होटल है। संसार चन्द जी का मकान और पंचाहर्ती मारवाड़ी धर्मशाला है। दाहने हाथ मुरलीधर बसंती देवी की धर्मशालायें हैं। पास ही में हिमालय डिपो हिमालय प्रेस है। जिसके संचालक पं० हरिशंकर शिवशङ्कर जी हैं। यहां शुद्ध शिलाजीत मिलता है। आगे पास ही नानक आश्रम कलगी धर आश्रम है। ललतारो नदी का पुल पार करके श्री गंगा सभा की भूमि है। अभी तक कोई मकान नही बन पाया। गंगा सभा पंडा समाज की है। भारत भर के यात्रियों से दान लेने है। खेद है कि इन से एक भवन नहीं बन सकता।

बायें हाथ हिन्दू प्रेस है इस के संचालक संत हरिश्चन्द उदासीन हैं।आप हिन्दु साप्ताहिक पत्र निकालते हैं। पास में जच्चा ग्रह और सब सुख राशनिंग टाउन हाल है। आगे बेरागियों का श्री सुदर्शन आश्रम है। यही से दाहने हाथ को भोला गिरीरोड़ जाता है। इसी पर श्री मान पं० शिव चन्द्र जी वैद्य शास्त्री आयुर्वेद भारत खंड का मकान है। आप के पास ही श्री सनातन धर्म प्रति निधि सभा पंजाब का शाखा कार्यालय है। श्री गो स्वामी त्याग मूर्ति श्री १०८ महान विद्वान् गणेशदत्त जी के उद्योग से दानी पुरुषों की सहायता से श्री गीता भवन बना है जिस को देखने मेंनई देहली के बिड़ला मंदिर की याद आतीं है। हरिद्वार में ये भवन अपने ढंग का अनोखा है। इस में वेद मन्त्र गीता मन्त्र ऋषियों के चित्रों को देखकर मन प्रफुल्लत हो जाता है। श्री भगवान की विशाल मूर्ति है और सायं प्रातः कथा होतीं है। भक्त गण लाभ उठाकर जीवन सफल करते हैं,

इसी के पिछली ओर श्री माया देवी का मन्दिर है। जिसका जीरणोद्धार श्री मान् १०८ महन्त बैजनाथगिरि जी की प्रेरणा से सेठ श्रीमान् केशवदेव ने किया। केदार खण्ड में लिखा है।

माया भगवती साक्षात्सृष्टि स्थितत्यन्त कारिणी।
तक्षेत्रं हि मया प्रोक्तँ भव मुक्ति प्रदायकम् ॥१०॥
पुरा दक्षो महातेजा ब्रह्म पुत्रो मुनीश्वर।
तस्येयँ दुहिता यत्र सती नाम्ना मनोहरा ॥११॥

यस्याः समरण मन्त्रेण सर्व दुखै प्रमुच्यते ॥
यया सर्व मिदं व्याप्तं जगद्वै सचरा चरम् ॥ १२ ॥
तत्क्षेत्र दर्शनात्सद्यो न च भूयोऽभिजायते ॥
येन दृष्ट मिदं क्षेत्रं फलं तस्यजी जीवितेम् ॥ १३ ॥

अर्थ -संसार की रचना स्थिति और विनाश करने वाली, साक्षात माया भगवती जहां उपस्थित हैं। उसी क्षेत्र को मुक्तिदायक कहा है ॥ १० ॥ प्रथम ब्रह्मा जी के पुत्र दक्ष प्रजापति थे। उन्हीं की पुत्री सती का नाम मनोहर माया-देवी है ॥ १ ॥ इनका स्मरण मात्र करने से, मनुष्य समस्त दुःखों में छूट जाता है। और इन्ही ने इस संसार (चराचर) को व्याप्त कर रखा है ॥ १२ ॥ इस क्षेत्र के दर्शन करने मात्र से फिर संसार जन्म नहीं लेता जिसने इस क्षेत्र का दर्शन किया है उसी का जीवन सफल है। के. खंड अ० १०२

माया क्षेत्र की यही अधिष्ठात्री देवी हैं। यहां के दर्शन किये बिना यात्रा सफल नहीं होती। यह सब से प्राचीन मन्दिर है। इसी के नाम से मायापुरी है।

पीछे वही सड़क लीजिये दायें भार्गव की दुकान जो स्टेशनरी पेपर एजेन्ट हैं। ललितारौ के पास पश्चम रोड़ पर हैजा हस्पताल है आगे भैरव जी का मन्दिर है। उस के आगे कुछ दूरी पर बिल्वकेश्वर महादेव हैं। आगे कुछ कदमों पर गौरी कुंड है। यात्रि को यहां स्नान करके शङ्कर पर जल चढ़ाना चाहिये। केदार खंड में लिखा है इस पर्वत का नाम बिल्व पर्वत है। यहां एक गुप्त गुफा में रचीक नाम मुनि निवास करते हैं।

शिव धारा संमाख्याता शिवदा तत्र पर्वते।
तस्यां नरः सकृत्स्नात्वा शिवे न सदृशो भवेत ॥१४॥
तत्रैको बिल्व वृक्षस्तु तस्याधः शिवलिंग कम् ॥
यस्य दर्शन मात्रेत्र शिवतां यात्रि मानवः ॥ १५ ॥

अर्थ—इसी पर्वत पर शिव नाम की धारा है, उस में एक बार स्नान करने से मनुष्य शिव तुल्य हो जाता है ॥ १४ ॥ उसी स्थान पर एक विल्व वृत्त है. उस के नीचे शिव लिङ्ग विराजमान है, उस के दर्शन मान से मनुष्य शिव तुल्य हो जाता है ॥ १५ ॥ केदारखंड अध्याय श्लोक ८३-८४ यहां दक्षिण दिशा में अश्वतर नाम का नाग रहता है, जिस के मस्तिष्क में मणि है। वह पाताल से आता जाता है और अनेक रूप धारण कर लेता है।

भार्गव दुकान के पास सरदारनी नानकी बाई की धर्मशाला है। आगे नखलऊ वाले सेठ मोतीराम की धर्मशाला, सहारनपुर के सेठ भीखामल की धर्मशाला है। बायीं ओर जनाना हस्पताल और बड़ा शरकारी हस्पताल है। दाहिने हाथ ऋषिकेश को जाने वाली मोटरों का अड्डा है। इसी के पास श्री पञ्च जूना-अखाड़ा दस नाम सन्यासियों का है। इसी को भैरव अखाड़ा भी कहते हैं। ये भी प्राचीन स्थान है। ललितारौ से लेकर बिरला रोड़ तक इसी अखाड़े की जमीन थी, जो ब्रिटिश शासन में ले ली गई।

आगे सेठ चन्डीमल राय बहादुर की सिन्धी धर्मशाला है। जो श्री १०८ श्रीमान पूज्य पाद महन्त हरिनाम दास जी

श्री बद्री केदार यात्रा सचित्र—

श्री साधुबेला तीर्थ के गद्दीधर

श्री १०८ स्वामी हरिनामदास जी उदासीन



जन्म वि० सं० १९२७
पौष कृष्णा १०

ब्रह्मलीन वि० सं० २००६
पौष कृष्णा ८

महाराज श्री साधुबेला सक्खर निवासी की प्रेरणा से बनी थी। श्री श्रद्धेय महन्त जी वर्तमान समय के राजा भोज थे। आप गुण ग्राही उदार आत्मा धर्मात्मा पूर्ण ज्ञानी थे। आप सच्चे आदर्श यती महान विद्वान अनेक ग्रन्थ लेखक थे। आप हिन्दी-हिन्दु हिन्दु स्थान के लिये बहुत कुछ बलिदान किया। आपने मलेच्छ देश में रह कर धर्म तथा राष्ट्र भाषा का प्रचार किया। आपने भारत का खूब भ्रमण किया था। आप जहां भी जाते प्रचारकों को साथ रखते थे। अन्नदान, विद्या दान में तो आप संसार में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। आप हरिद्वार, प्रयाग के कुम्भों पर विशाल छावनी लगाते थे। आप गत पौष कृष्णा ८ वि० सं० २००६ को ब्रह्मलीन हो गये ! आपका जन्म वि० सं० १६३७ पौष कृष्ण १० का था।

पाकिस्तान बबने के पहिले ही आप श्री साधुबेला को त्याग श्री काशी धाम में आ गये थे। स्वामी जी का श्री साधु बेला मठ बी० २।२६ भदैनी काशी में है। वर्तमान श्री पीठाधीश्वर [महन्त] श्री १०८ स्वामी गणेषदास जी महाराज हैं। हम आशा करते हैं वह पूज्य स्वामी जी के आदर्श पर चलेंगे। श्रीमान पं० सुतीक्षण मुनि जी और श्री मान कोठारी १०८ श्री गुरु चरनदास जी अपना शुद्ध सहयोग देकर विद्वान महन्त जी के उत्साह की वृद्धि और कार्य की पूर्ति करेंगे। इसी के सन्मुख सरकारी हस्पताल है यहीं से ऋषिकेश को मोटर लारी जाती है। किराया ॥-) तेरह आना लगता है। हर समय मोटर तैयार मिलती है। गाडी से ॥≥) नौ आने लगते हैं। दिन में तीन गाडी

जाती हैं और तीन आती हैं। हस्पताल के पास बड़ा डाक घर है इसी के सन्मुख बिरला रोड है, उसी पर श्रीराम लीला मैदान भैरो अखाडा भार्गव भवन आदि रमणीक स्थान हैं। भल्ला रोड़ पर पन्नालाल भवन तथा कोहाट धर्मशाला श्री भामन मल की धर्मशाला है, आगे पास ही विष्णु घाट में ये सड़क मिल जाती है।

पीछे डाक घर हरिद्वार की बडी कोतवाली है, इसी के पास सरकारी प्राईमरी स्कूल है और विश्वनाथ भवन और सन्मुख सारस्वत गोड़िया मठ है, आगे लुधियाने वाले की धर्मशालातथा सेठ खुशीराम की धर्मशाला है। आगे वृन्दावन की धर्मशाला है और तांगा रक्शा अड्डा है। इसी के पास राजा मोतीराम हैदराबद वालों की धर्मशाला नरसिंह भवन है जो जो अपने ढङ्ग अनोखा है। पास ही में पालीवाल धर्मशाला पाठशाला है।

नरसिंह भवन के सन्मृख श्रीमान सेठ सूरजमल की धर्मशाशला है। ये सब से पुरानी धर्मशला है आप के नाम को भारत का कौन प्राणी नहीं जानता। जयपुर के कारीगरों का नमूना है इसी धर्मशाला में सप्त समुद्रेश्वर महादेव हैं जिनका प्रत्येक यात्री को दर्शन करना चाहिये। केदार खंड में कहा है—

गंगाये पश्चिमे तीरे कुशावर्ती दधः शरे।
सप्त सासुद्रिक नाम तीर्थ परम पावनाम् ॥ १६ ॥
अत्र स्नात्वा महा भाग शिव लोके महीयते।
पुरातत्र समुद्रैश्चदधि तो भगवाड़ि छ्वः ॥ १७ ॥

हरिद्वारे महा तीर्थे श्रेष्ठ देव विराजते ।
समुद्रेशो महादेवः सर्व काम फल प्रदः ॥ १८ ॥

अर्थ—सकन्ध जी ने कहा हे नारद जी, गङ्गा के तीर कुशावर्त से नीचे एक बाण के प्रमाण की दूरी पर सप्त सामुद्रिक नाम एक परम पवित्र तीर्थ है। जो कि अब राम घाट नाम से प्रसिद्ध है ।। १६ ॥

हे महा भाग ! स्नान करने वाले शिव लोक से पूजित होते हैं। प्राचीन समय में यहां समुद्र ने भगवान शिवजी की आराधना करके अगस्त ऋषि के श्राप से मुक्ति पाई ॥ १७ ॥

हरिद्वार जैसे तीर्थों में देवस्थान है वहां सप्त समुद्रेश्वर नामक महादेव विद्यमान हैं वे समस्त कामनाओं के पूर्ण करने वाले हैं इसी जगह अनेक औषधालय हैं। यहीं नीचे सब्जी-मण्डी को रास्ता जाता है। बायें ऊपर अमृतसर वालों की धर्म शाला है। रेलवे लाइन के पार अनेक धर्मशालाएं हैं पर उसमें यात्री कोई नहीं ठहर सकता। श्री गङ्गा डिपो प्राचीन कम्पनी है। जो अनेक औषधियों को बेचती है। नीचे फिर आगे मुल-तानी औषधालय पञ्जाब नैशनल बैङ्क है। कुछ कदम पर सेठ किरोड़ी मल की धर्मशाला है। उस के सन्मुख बीकानेर वालों की धर्मशाला है। आगे नाथों का गलीचा और दोनों जोगी-बाड़े हैं। शिकार पुर वालों की धर्मशाला और यहीं ऊपर भागी रथी वाचनालय है। इसी के ऊपर लाडवे वालों की धर्मशाला है। दाहिने हाथ श्री गङ्गा सभा कार्यालय है। बाये हाथ बिलास पुर की धर्मशाला है। बरेली वालों की धर्मशाला. इसी के पास

तांगा अड्डा है। इस के पास चारों ओर किराये पर मकान मिल जाते हैं। सरदार कृपाराम की विशाल धर्मशाला है जहां उन के अपने जिजमान ठहिरते हैं।

अब आप को श्री गङ्गा जी का मुख्य घाट ब्रह्म कुण्ड हरि की पैड़ी मिलेगी। यहां किसी समय पहाड़ी थी उस के ऊपर मकान भी थे। जो सम्वत् १९९४ में गिरा कर पक्का सङ्ग-मर मर का घाट बनवाया गया यात्रियों की सुविधा के लिये घाट को विशाल बना दिया गया है। पश्चिम की तरफ पहाड़ काट कर विशाल मकान बन गये हैं।

गङ्गा जी की धारा में जो मन्दिर है उस को मान-सिंह राजा की छत्री (मढ़ड़ी) कहना चाहिये। उस समय उसने पौड़ियां भी बनवाई थी जो गिरा दी गई हैं। इस समय यहां चार मन्दिर हैं श्रद्धालु जन प्रेम से दर्शन करते हैं दाहिने हाथ श्री गङ्गा मन्दिर बारह खम्भा मन्दिर श्री शङ्करा-चार्य जी का मन्दिर नव गृह मन्दिर है। यात्रि का चित्त घाट पर पहुँचते ही प्रसन्न हो जाता है। ये सब मन्दिर ठेके पर चढ़ते हैं। और यही कारण है कि अनाधिकारी लोगों के प्रवेश से मन्दिरों की मर्यादा नष्ट हो गई है। किसी किसी मन्दिर में तो खण्डित मूर्तियां भी हैं जो शास्त्र के विरुद्ध हैं।

गङ्गा जी के बीच में एक विशाल प्लेटफार्म है जिस पर पहुंचने को पुल पार करना पड़ता है। पुल दो हैं एक पश्चिम की ओर से दूसरा दक्षिण की ओरसे। दक्षिण पुल को पार करते ही आप को एक कोठी मियेगी। इस पर धर्म प्राण महान विद्वान

स्वर्गीय पूज्य पाद पं० मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा रखी है यह काम श्री गङ्गा सभा के द्वारा है। भक्त गण स्नान दान हरि चर्चा पूजा पाठ करते हैं। श्री मान राजा बलदेव प्रसाद जी बिड़ला की ओर से घण्टा घर बना है। नवीन घाट बन जाने पर स्त्रियों के लिये नवीन घाट पृथक बन गया है। जिस में कुछ महिला स्नान करती हैं। परन्तु वह इतना गन्दा रहता है कि जाने को जी नहीं चाहता। मल पूण्य लूटने वाली मल मूत्र वहीं कर देती हैं। प्रत्येक माता बहिन से प्रार्थना है कि वह श्री गङ्गा घाट पर पवित्रता का ध्यान रक्खें नगर पालिका का भी कर्तव्य है कि वह ध्यान देवे।

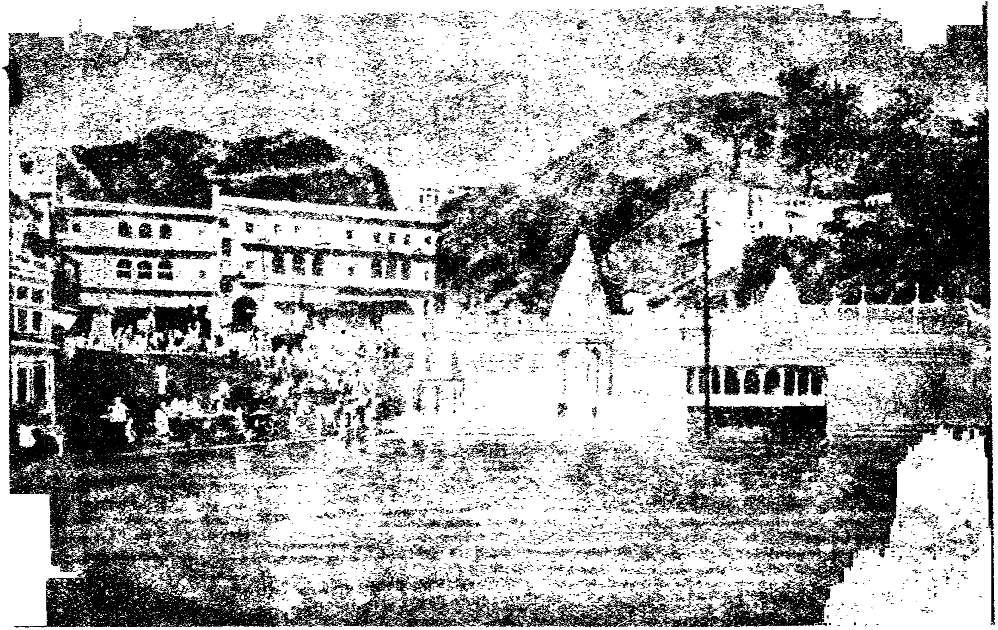
हरि की पैड़ी पर श्री गङ्गा सभा का ही प्रबन्ध है। इन की ओर से दो स्थानों पर कथा होती है एक पर श्रीमान पं० सीताराम जी शास्त्री व्याख्यान भास्कर। लगभग ६ ७ साल से लेखक भी इन को सहयोग देता है। दूसरी कथा कनखल निवासी श्री पं० मनसा राम जी व्यास करते हैं। छः साल तक इन को भी लेखक ने सहयोग दिया है।

गङ्गा जी के दक्षिण भाग में दूर तक एक लम्बा प्लेटफार्म है। सर्व प्रथम आपको ऋषिकुल की कथा मिलेगी। जिस के व्यास श्री मान पं० आत्माचन्द जी शास्त्री पुराण कोविन्द हैं। आप बड़े ही सज्जन पुरुष हैं, आप के कहने का ढङ्ग बहुत अच्छा है। जनता आपकी कथा से बहुत कुछ लाभ प्राप्त कर सकती है। बारह मास कथा होती है यदि हरि की पैड़ी पर लाउड स्पीकर द्वारा कथा हो तो बहुत ही अच्छा हो।

यहां पर मकान गिरा कर एक नया मार्ग बनाया है। सरकार की इच्छा थी मेले के अवसर पर जनता हट कर निकल जाये। परन्तु सीढ़ियों के ऊंचे होने से यात्रियों को गिरने का सङ्कट है। पास में ज्ञान गोदड़ी प्राचीन स्थान है। जहां सिखों के श्री गुरु ग्रिन्थ साहब का प्रकाश है, आगे आपको चाट की दुकानें मिलेंगी। जहां सहस्रों रुपयों की चाट बिक जाती है। ये स्थान यात्रियों के पाठ पूजा कथा वार्ता विश्राम के लिये बने थे। अब सब दुकानों से भर जाते हैं। पास ही में राष्ट्रीय तिरङ्गा झण्डा लहराता मिलेगा। जिस के पीछे देश भक्तों ने जेल काटी और जानें दीं। इस को आज सुभाष घाट कहते हैं। नेता जी जी की विशाल प्रतिमा संग मरमर की खड़ी है। जिस के चारों ओर नेता जी की जीवन झांकी अंकित की गई है। इस में श्री मान महन्त शान्तानन्द जी का भी सहयोग है।

सेवा सम्मति बाल चर मंडल धर्मार्थ औषधालय के दफ्तर हैं। जान की बाई अनाथालय श्री महावीर दल आदि संस्थाओं की ओर से कथा होती है। वट वृक्ष के नीचे साधु सन्तों का अन्न क्षेत्र है। एक सद गृहस्थ पं० जी की भी कथा होती है।

आगे आप को पुष्प बाजार मिलेगा, गङ्गा माता की आरती के लिये पुष्पबत्ती मिलेंगे, इसी को गौ घाट भी कहते हैं, जहां गौ घाती को स्नान कराया जाता है, प्रथम भंगी उसे जूते मारता है, तब पाप निवृति होता है। पास ही गली में पश्चिम को जाकर दक्षिण की ओर कुशावृत घाट है, जिसको



ब्रह्मकुण्ड हरि की पैड़ी।

इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने बनवाया है। यहां पर १०००० दस हजार वर्ष एक पैर पर खड़े होकर श्री दत्ता त्रैय-जी ने तप किया था। भगवती श्री गङ्गा जी जब आईं, तो अपनी तेज धारा से। इन के कमण्डल, आसन, कुशा आदि सब को बहा कर ले चलीं। परन्तु गुरु जी के तप से आगे न बढ़ सकीं। भागीरथ की प्रार्थना से गुरु जी ने नेत्र खोले। क्या देखते हैं श्री गङ्गा जी के प्रवाह में उन की वस्तु तैर रही हैं क्रोध में आकर गङ्गा जी को सुखाने लगे। तब ब्रह्मा जी की प्रार्थना से शान्त हुए। और कहने लगे आज से सभी देवता यहां निवास करो, जो अपने पितरों के निमित कर्म किया जाय उस से अक्षय तृपति हो। हमारे कमण्डल आदि को जो घुमाया है। इस से इस स्थान का नाम कुशावर्त घाट होगा। पित्रों को पिण्डदान देने से उन का फिर जन्म न होगा। श्री बद्रीनाथ की यात्रा करने वाले को यहां अवश्य पिण्ड दान करना चाहिये। केदार खण्ड में कहा है—

कुशावर्तं महा तीर्थं दक्षिणो ब्रह्म तीर्थतः।
तत्र स्नात्वा महाभाग न च भूयो भि जायते॥ १९॥
स्नानं दानं जपो होमा स्वाध्याय पितृ तर्पणम्।
यदत्र क्रियते कर्म तत्तत्यात कोटि संख्यकम्॥ २०॥

अर्थ—दक्षिण की और कुशावर्त तीर्थ है। हे महा भाग उस में स्नान करने से मनुष्य फिर जन्म धारण नहीं करता॥ १९॥ क्या स्नान, क्या दान, क्या जप, क्या होम, क्या स्वाध्याय

(वेद पाठ) और क्या पितृर्पण ये अथवा और भी जो कुछ यहां कर्म किया जाता है। वह सब करोड़ गुणा होता है।

के० खण्ड अध्याय ११२

ब्रह्मकुण्ड में सदैव कमर के ऊपर जल रहता है। उस में एक धारा भीमगोड़े से आती है, और दूसरी बड़ी धार से। यह बड़ी धारा ही आगे जाकर गङ्ग नहर बन जाती है। और गङ्गा जी की मुख्य धारा दूदिया बांध से ऊपर रह जाती है। जो नील पर्वत के नीचे जाने से नीलधारा कहलाती है।

राजा श्वेतकेतु के तप से ब्रह्मा जी प्रकट हुए। इसी से इसका नाम ब्रह्मकुंड पड़ा। प्राचीन समय में यह स्थान कुण्डाकार था। यहां पर सर्व प्रथम देवों के साथ ब्रह्मा जी ने गङ्गा का स्वागत किया। इस लिये भी ब्रह्मकुंड कहते हैं।

प्रथम घाटों का अच्छा ध्यान किया जाता था। पहिले जब श्री पञ्जाब महाबीर दल की शाखा खुली थी। उस समय वीर साबुन दातान कपड़े धोने का पूरा ध्यान रखते थे। हमने उस समय इञ्चार्ज श्रीमान पं० चिरञ्जीव लाल शर्मा जी की प्राथना पर सहयोग दिया। लगातर दस वर्ष तक अवैतनिक प्रचार किया। और सम्वत १९९६ विक्रमी में त्याग दिया।

जो संस्थाएं सुधार के नाम पर खड़ी हुईं। अब उन के पांव जम गये हैं। उन को इस समय घाटों का ध्यान नहीं। ग्रीष्म काल में गङ्गा जी के नाम पर चिल्लाते तो बहुत हैं। परन्तु गङ्गा जी के लिये करते कुछ नहीं। हिन्दु जनता भोली है अपरचित है, वह सब कुछ गङ्गा जी के नाम पर देती है। सेवकों

का कर्तव्य है कि दातन करने वालों को कपड़ा धोने वालों को रोकें। सरकार से ऐसा कानून बनवावें जिस से ऐसी हरकतें न होने पावें। प्रत्येक यात्री का धर्म है न आप साबुन लगावें और न किसी को लगाने देवें। रोकने वालों की मदद करें।

किसी समय जहां भयानक हिंसक जीव बनों में दहाड़ते थे। चारों ओर गम्भीर बन था, जिस में शान्त चित ब्रह्म वेता त्रिकाल दर्शी मुनि निवास करते थे। तप के प्रभाव से गाय सिंह एक घाट पर पानी पीते थे। आज वहां बिजली की चकाचौंध चांदनी है। बाजार सुन्दर और मनोहर हैं। जहां पवित्र भूमि पर शयन करते थे, ब्रह्मचर्य ही जिन का प्रधान बृत था। आज वहां अनेक सद् गृहस्थ रहते। उत्तरा खण्ड की तपो भूमि भोग भूमि में परिवर्तित हो गई है। ऐसा कौन सा अत्याचार एवं पाप जो यहां नहीं होता। सतियों के सत यहां लूटे जाते हैं। यात्रियों की जेब यहां काटी जाती हैं। धन के लिये विष का प्रयोग यहां होता है। अनेक ऐसे लोग हैं जो यहां मद मांस का सेवन करते हैं। भारत सरकार ने मादक वस्तुओं पर प्रतिबन्ध लगा रखा है। इस के लिये लाखों रुपया बर्बाद हुआ। पुलिस ने कई स्थानों पर छापे मार कर अपराधियों को दण्ड दिया तो भी ये व्यसन हिंदु जाति से जाता नहीं। जो मजदूर प्रतिदिन सरकार और पूजी पतियों से अर्थ के लिए झगड़ते हैं। वही अपनी कमाई को मादक पदार्थों में नष्ट कर रहे हैं।

प्याज लहसुन का सेवन तो खुल्लम खुला हो रहा है। जिसे 'साधु सन्त' कहलाने वाले त्यागी महात्मा भी खाते हैं।

खेद है कि जिस ने सब कुछ त्याग कर परमार्थ का मार्ग पकड़ा और हमारे देश के पथ प्रदर्शक हैं जब वे इस का त्याग न करें तो लोग कैसे करेंगे। हमने कई आश्रमों में देखा है प्याज को बहुत प्रेम से बनाया खाया जाता है। यदि साधु समाज इस अहार को त्याग नहीं करता तो वह निश्चय रखें, वह दिन दूर नहीं है जब कि हिन्दु समाज की दृष्टि में इन का कुछ भी मोल नहीं रहेगा।

हम श्री गङ्गा सभा, विद्वत् परिषद्, महावीर दल और अन्य संस्थाओं से सविनय प्रार्थना करते हैं कि वह पवित्र भूमि से उक्त दोष को हटाने का प्रयत्न करें। यदि इन दोषों को वे दूर न कर सकें तो उनका होना न होना समान ही है। अनेक माताएं तथा देवियां स्नान करने के समय अपने शरीर को ढकने में अपेक्षा करती हैं। अथवा अपने तन पर इतना बारीक कपड़ा रखती हैं। जिस में प्रत्येक अङ्ग दीखता है। जहां तक हो सके मोटे कपड़े से स्नान करना चाहिये। बहुत सी स्त्रियां अनुचित रूप में प्लेट फार्म पर घूमती हैं। और लोग उन्हें घूर २ कर देखते हैं। शोक! लज्जा स्त्री जाति का भूषण था। भारतीय ललना आज उसी को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं।

गाना नं० (१)

सोती रहोगी कब तक भारत के नाम वाली ॥
आखें उठा के देखो मिटने निशान वाली ॥ टेक ॥
इक दिन कहाती थी तुम भारत की वीर माता।

भूली हो तेज अपना देवी के नाम वाली ॥ २ ॥
गैरों ने तुमको लूटा, किस नींद में पड़ी हो ।
तनकी खबर नहीं है भारी गुमान वाली ॥ ३ ॥
झुकते थे देव दानव, करते थे दर्श मुनि जन ।
पतिवृत धर्म के ऊपर, तनको जलाने वाली ॥४॥
अर्जुन से वीर योद्धा, श्रद्धालु बलि से दाता ।
"बुद्धिचन्द्र" पूज्य माता, उनकी कहाने वाली ॥५॥

प्रत्येक यात्रि को कुछ दिन ज्वालापुर, कनखल आदि स्थान पर रह कर तीर्थ दर्शन करना चाहिये। बद्रीकाश्रम जाने वाले यात्रियों को तो अवश्य कुछ दिन निवास करना चाहिये। विश्वनाथ महादेव (पञ्चकेश्वर) जी के दर्शन और कुशाव्रत घाट पर पितरों के निमित पिंड दान करना ।

गंगा द्वारे कुशावर्त बिल्व के नील पर्वते ॥
सनात्वा कनखले तीर्थे पुनर्जन्म न विद्यते ॥ २१ ॥
सर्भे देवा सगंधर्वा यक्ष किन्नर तापसः ।
तिष्ठन्ति यत्र तीर्थ हि सर्वे ते मुक्ति लालसः ॥ २२ ॥

अर्थ—गङ्गा द्वार (हरिद्वार) कुशावर्त, बिल्वकेश्र नील पर्वत और कनखल में स्नान करने से जन्म नहीं होता, उक्त तीर्थ में मुक्ति की अभिलाषा करके सब देवता गन्धर्व पक्ष किन्नर तपस्वी निवास करते हैं ॥ २२ ॥ के० खंड ।

ब्रह्मकुण्ड के ऊपर विदुर को मैत्रय ऋषि ने श्री मद्भागवत का परायण सुनाया था । दो मील पश्चिम पहाड़ी पर श्री मनसा देवी का मन्दिर है। उनके दर्शन कीजिये उसका जीर्णोद्धार कैलाशवासी श्री १०८ श्री मान महन्त शान्तानन्द जी महाराज (श्री श्रवणनाथ मठ) ने कराया है। इस से आगे उतराई पर सूर्य कुण्ड का स्नान करना चाहिये, आप उधर से ही उत्तर की ओर रास्ते से उतराई पर नीचे हरि की पैड़ी के तांगा अड्डे पर पहुंच जावेंगे।

हरि की पैड़ी के नीचे बाजार है इसी को बड़ा बाजार कहते हैं सरदार अर्जुनसिंह की पुस्तक दुकान है जहां ये यात्रा मिलती है। उस के आगे कर्मसिंह की दुकान है यहां भी आप को ये यात्रा मिलेगी, आगे चल कर सरस्वती रूद्राक्ष पुस्तकालय मिलेगा, जहां सब प्रकार की पुस्तकें और रूद्राक्ष शुद्ध आप को मिलेंगी यह पुस्तक यहां भी आप को मिलेगी, लेखक की और भी पुस्तकें आपको मिलेंगी, इस बाजार में आप को सब प्रकार का सामान लिलेगा।

ठण्डे कूवे से आप को मोती बाजार मिलेगा, यहीं पास श्री पं० गगूंमल केदार नाथ का प्राचीन पुस्तकालय मिलेगा जहां सर्व प्रकार की संस्कृत भाषा की पुस्तकें मिलेंगी यहां पर भी आप को श्री यात्रा पुस्तक मिलेगी, आगे चल कर श्री विद्या बारधि पुस्तकालय मिलेगा, श्री स्वनाम धन्य पं० ज्वालाप्रसाद मुरादा बाद निवासी को कौन नहीं जातता आप अनेक ग्रन्थों के टीकाकार एवं रचियता यजुर्वेद भाषकार थे। आप ही के

कनिष्ट सुपुत्र पं० महावीर प्रसाद जी इस के अध्यक्ष हैं। यहां सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलेंगी।

चार दुकान छोड़ कर श्री श्रवणनाथ जी का मठ मिलेगा आप अन्दर जाकर दर्शन कीजिए। श्री गङ्गा जी का मन्दिर श्री कृष्ण मन्दिर तथा श्री पञ्चकेश्वर महादेव जीके दर्शन हैं। इस इस के पीछे श्री श्रवणनाथ श्री गङ्गा जी का घाट है। और एक सुन्दर बड़ा हाल है, और ऊपर एक बड़ा भारी वाचनालय है, जिस में सभी भाषा के दैनिक मासिक साप्ताहिक पत्र आते हैं और सभी ग्रथों का उत्तम संग्रह है। आप एक बार अवश्य अवलोकन कीजिये।

इस का श्रेय श्री १०८ श्री श्री महन्त शान्तानन्द जी नाथ को है। जिन का कैलास वास हो गया। आपने श्री गुरूदेव श्रीमान १०८ महन्त पूर्णनाथ जी के पीछे मठ को चार चांद लगा दिये। आपने अल्प काल में ही प्रशंसनीय कार्य किये। आप कार्यों में सहयोग देते थे। आपने राष्ट्रीय संस्था कांग्रेस की और नेताओं की अच्छी सेवा की। आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन कराया और न जाने आप क्या २ कार्य करते। परन्तु दुर्भाग्य से आप एक दुखद घटना से सदा के लिये हमारी आंखों से ओझल हो गये। ऐसे महान उदार पुरुष का जाना हमें खटकता है।

आप के स्थान पर इस समय पूज्य पाद श्रद्धेय श्री १०८ महामण्डलेश्वर परिव्राजकाचार्य श्री मोहनानन्द जी महाराज हैं। आप भी मिलनसार विद्वान हैं, आप से हम को बहुत कुछ आशा है। अगे सब्जी मण्डो है नाना प्रकार के फल, और

शाक मिलते हैं। पास में सीमेंट की धर्मशाला अमृतसर वालों की है। आगे राम घाट तथा विष्णु घाट है। यहां कई धर्मशाला हैं, सरकार ने पहाड़ से आने वाले नाले का पानी जो प्रति वर्ष बाजार को मट्टी से पाट देता था। अब उसे सड़क के नीचे नाला खोद कर तमाम वर्षा के पानी को ललतारौ नदी में डाल दिया है जिस से सङ्कट टल गया है। जिस से पानी का बहाव कम हो जाये। और यहां मकान बन सकें। अयुध्या हाउस और कुछ प्राचीन मन्दिर हैं। आगे श्री स्वामी १०८ भोला गिरी जी की धर्मशाला पाठशाला है। बिडला जी का मकान सेठ श्री केशवदेव जी का मकान और लक्ष्मी नारायण अन्न क्षेत्र है। इसी के पास श्री पञ्च जूना अखाड़ा नागा लोगों का है। कुछ कदम चल कर आप को मद्रासी धर्मशाला कन्या हाई स्कूल बिडला घाट है। इसी के पास श्री भोला गिरी जी का विशाल मन्दिर है। यहां स्वामी जी एक छप्पर में रहते थे। ऊंचा सा स्थान था रास्ता नीचे था इस समय दर्शनीय महा विशाल मन्दिर हैं। आगे ललितारौ पार करके गूदड अखाड़ा है। इसी के पास श्री श्रवणनाथ का विशाल बगीचा था। उसे बेच कर श्री श्रवणनाथ नगर बन गया है। लोगों ने जमीन ले कर अपने २ स्थान बना लिये हैं। सर्व प्रथम सेठ जेसाराम डेरा इसमाइल खां निवासी का भाटिया भवन है, जो बहुत ही सुन्दर है। आगे श्री १०८ पूज्य पाद श्री भागवता नन्द जी का सिद्धाश्रम है। इस के पीछे बम्बई वाली श्री रामाबाई की धर्मशाला है। पास ही में जय भारत श्री साधु महाविद्यालय है जिसे कैलाशवासी श्री महन्त शान्तानन्द जी

नाथ ने बनवाया है। सन्मुख विद्यालय की बाटिका है। गणेष-घाट और अनेक मकानों के पश्चात् मोदी भवन और स्वामी पं॰ गंगेश्वरानन्द जी महाराज का आश्रम है। आप उदासीन सम्प्रदाय के अच्छे महान् विद्वान और श्री कृष्ण भक्त हैं।

थोड़ी दूर पर चरण पादिका और श्री पञ्च दस नाम निरञ्जनी अखाड़ा है। आपकी अच्छी जायदाद और जमींदारी है। विशाल पक्का घाट गङ्ग नहर पर है। हरिद्वार स्टेशन से आने वाली सड़क से लेकर गङ्गा नहर तक इसी अखाड़े के मकान हैं। गन्दे नालों का पानी खेंच कर बाहर फेंकने वाली मशीन भी यहीं लगी है।

यहां से दो सड़कें हो जाती हैं, एक मायापुर को और एक कनखल को। तीसरी वह सड़क जो स्टेशन से आती है। जिसका वर्णन हम प्रथम कर चुके हैं। इस जगह गङ्गा नहर का बड़ा भारी पुल है जिस पर बड़ी २ मशीनें लगी हैं। जो समय २ पर जल को कम ज्यादा करती हैं। गङ्गा नहर सन् १८४२ से कटनी शुरु हुई और सन् १८५४ में- ईसवी की आठवीं अप्रैल को समाप्त हुई। इस की लम्बाई २२२॥ कोस है। इस को बनाने में २ करोड़ २४ लाख २२ हजार रुपये खर्च हुए। इस के इञ्जीनियर श्री काली साहब कटनो थे। इस की फतह गढ़ से दो शाखा हो जाती हैं। एक पश्चिम मुख होकर मेरठ को बुलन्द शहर अलीगढ़ अकबरा बाद को जाती है। यहां से फिर दो शाखा होकर, एक इटावा दूसरी कानपुर में जा कर गङ्गा में मिली हैं। गङ्गा नहर शरद ऋतु में भर कर चलती हैं। चौमासे

में यह कम चलती है। इसका पाट बहुत चौड़ा है, आगे जाकर इस से बहुत नहरें निकल जाती हैं। और अन्त में कानपुर गङ्गा जी मिल जाती है।

गङ्गा जी और कनखल धार के बीच डाक बङ्गला है। इस के पास एक पुल है जिस के द्वारा यात्री श्री गङ्गा के पार जा सकता है जिसे नील धारा कहते हैं। आगे चल कर टोल चौकी है। यही से चण्डी मन्दिर को रास्ता जाता है। लगभग १॥ मील गङ्गा पार काली मन्दिर श्री चण्डकेश्वर महादेव के दर्शन हैं। नील पर्वत के नीचे नील धारा का स्नान है।

चण्डिका तीर्थ राजेहि सकृत स्नातो महामुने।
स धन्या पुरुषो लौके सफलं तस्यजीवनिम् ॥२३॥ के० खं

अर्थ जो मनुष्य चण्डिका तीर्थ राज में एकवार भी कभी स्नान कर चुका है। लोक में उसको धन्य है उसका जीवन सफल है। उसके आगे १॥ मील की चढ़ाई पर चंडी माता का मन्दिर है मार्ग में धन्ने भक्त का चौंतरा है। गरमी में दानी सेठों की ओर से पानी का प्याऊ लगता है। यह मन्दिर महाराज सुचेतसिंह रियासत जम्मू ने बनवाया है।

मन्दिर ऊंची पहाड़ी की घाटी पर बना है। इसे सिद्ध स्थान कहते हैं। पास में सन्मुख दूसरी पहाड़ी पर अंजना देवी का मन्दिर है। यहां से हरिद्वार का सुन्दर दृष्य दिखाई देता है हिमाचल की ऊंची २ चोटियां दिखलाई देती हैं। सघन कजली बन की झांकी मन को मोह लेती है। पहाडों की टेढ़ी मेढ़ी घाटी

पेड़ों से लदे सुन्दर विभागों का आनन्द तो देखते ही बनता है।

यहां से एक मार्ग दक्षिण को ढलान से जाता है। बस यहीं उतर कर श्री गौरीशङ्कर महादेव के दर्शन हैं मार्ग में उत्तर को जो मार्ग जाता है उसे त्याग दीजिये। यह स्थान बहुत रमणीक है। साधु महात्मा रहते हैं ग्रीष्म काल में श्री गङ्गा जी लहरें देती हैं। यहां से कनखल तक गङ्गा जी का बड़ा भारी पाट है। बीच में पाट हैं श्री गङ्गा जी की अनेक धारा हैं। जिन का दर्शन आप ऊपर से कर सकते हैं। गौरी शङ्कर से दो फर्लाङ्ग ऊपर नीलेश्वर महादेव हैं।

अस्य वै गिरीराजस्य नाम वै संभ विष्यति।
नील पर्वत इति वै स्मरणाच्छिव दायकः ॥ २४ ॥
अत्र वै निवाशयामि त्वया सह गणेश्वरः ।
नीलेश्ववर इति ख्यातो भक्तांनां प्रीति वर्द्धनः ॥ २५ ॥

अर्थ—इस का नाम नील पर्वत होगा। इसके स्मरण मात्र से कल्याण की प्राप्ति होगी। हे गण राज ! मैं तुम्हारे साथ इस क्षेत्र में निवास करूंगा, हमारा नाम नीलेश्वर होगा। और भक्तों की प्रीति भी इस नाम से अधिक वृद्धि को प्राप्त होगी। (के० खं० अध्याय ६)

इस प्रकार ये मनोहर पवित्र इतिहासक स्थान हैं। दर्शन करके नीचे आ जाइये। गङ्गा धार पार करके आप सड़क २ घाट पर आ जावें। यदि श्रावण भादों मास हो तो गौरीशङ्कर के उत्तर भाग जिस मार्ग आप चण्डी से आये हैं। उसी के पास

बायें हाथ को पगडण्डी जाती है। उसी के आसरे पहाड़ २ चंडी घाट पहुँच जावेंगे।

टोल चौकी से आगे आपको एक नई सड़क मिलेगी जो अभी बनी है। प्रथम गूदर अखाड़ा दस नाम सन्यासियों का है इन्होंने अभी जमीन वेची है। इस में कई मकान नये बने हैं। आगे श्रीकृष्ण निवास आश्रम है। श्री १०८ पूज्य पाद परिव्राजकाचार्य महा मण्डलेश्वर श्री कृष्णानन्द कैलाश वासी ने बनवाया था। इस के वर्तमान महन्त श्री १०८ स्वामी पूर्णानन्द जी मण्डलेश्वर हैं। बहुत ही सुन्दर मन्दिरों के दर्शन हैं। आश्रम के बनते समय टीले में से महादेव निकले उसका नाम पातालेश्वर रखा गया।

आगे कुछ कदम चल कर आप को श्री सूरत गिरी जी का बङ्गला (गरोशानन्द आश्रम) मिलेगा। ये बहुत हीप्राचीन स्थान है। इस के वर्तमान महन्त पूज्य पाद श्री १०८ परिव्राजका चार्य महान विद्वान् महांमण्डलेश्वर स्वामी महेश्वरानन्द जी महाराज हैं। वर्तमान कोठारी स्वामी केवलानन्द जी हैं। आप बहुत ही सज्जन सन्त सेवी मिलनसार हैं।

इस के सन्मुख स्वामी चेतनानन्द आश्रम है। कुछ कदम चल कर मङ्गलगिरी जी का आश्रम। उस के आगे श्री १०८ स्वामी भागवतानन्द जी महामण्डलेश्वर का भारतीय विद्यालय है। इसके सन्मुख पतित पावन महादेव का प्राचीन मन्दिर है। आगे घण्टा कोठी नामक स्थान है। जहां जगत प्रसिद्ध परिव्राजका चार्य श्रीं १०८ पूज्य पाद जगद्गुरु महामण्डलेश्वर स्वामी

विद्यानन्द जी गीता-व्यास- आकर निवास करते हैं। यहां पर किसी समय १८ मन का घण्टा था। इसी से इस का नाम घंटा कोठी है। पतित पावन से लेकर यहां तक श्री पञ्च दस नाम निरबाणी अखाड़े की सम्पत्ति है।

पास ही में बस्तीराम की पाठशाला और अन्न क्षेत्र है आगे महानंद और पहाड़ी बाजार कनखल आ जाता है।

अब हम आपको चौकी टोल से आगे का परिचय देते हैं। दो मकान छोड़ कर परमानन्द भण्डार सिन्धी आश्रम मिलेगा। आप योग क्रिया में सिद्ध हस्त हैं। आप पर सिन्ध-प्रान्त के लोग अच्छी श्रद्धा रखते हैं। आप बर्ष के मध्य में अपने सिद्ध गुरू की वरसि करते हैं, उस समय स्त्री जाति के लिये आना निशेध है।

बायें हाथ गुरुकुल बाटिका है, इसी में पं० दीनदयालु शास्त्री जी के उद्योग से आर्य हाई स्कूल है, इस के दाहिने हाथ श्री गुरु बाबा श्रीचन्द जी का प्राचीन मन्दिर है। श्री गुरु नानक देव के ज्येष्ठ पुत्र हैं। उदासीन सम्प्रदाय के आचार्य हैं, आप को शङ्कर अवतार बतलाया जाता है।

गुरु जी ने यहां पर धूना लगाया था, अपने समय में गुरु जी ने अनेकों चमत्कार दिखलाये। यह आश्रम अमृत सर के ब्रह्म बूटा अखाड़े की सम्पत्ति है, यहां का जल बहुत शीतल है जगद्गुरु के दर्शन कर विश्राम कीजिये। लगभग १४ वर्ष से हमारा यहीं निवास रहता है। इस के वर्तमान अधिकारी ज्ञानी गोविन्द दास जी हैं, आप वैद्य भी हैं सर्व प्रकार की औषधि

देते हैं, आप को यात्रा पुस्तक यहां भी मिल सकती है।

आगे बायें हाथ को सड़क कृष्णाश्रम सूरतगिरि के बङ्गले जाती है, अब बायें हाथ कान नाथ का बगीचा है, उस के पास श्री मान भगवन्तराय जैन की रसायन शाला है। इन का देश-रक्षक औषधालय मालेर कोटला पंजाब में प्रसिद्ध था। गत चार वर्षों से आप यहां कार्य कर रहे हैं, दूर २ देशों में आपकी औषधि जाती है।

इस के सन्मुख गङ्गा जी का मदिर है। और पास ही में पं० वीरभद्र भृगु संहिता वाले रहते हैं। श्री १०८ जगत राम संतराम का आश्रम मिलेगा वर्तमान महन्त स्वामी नीकूराम जी हैं। आप अच्छे पुरुषार्थी हैं।

आगे चल कर दाहिने हाथ श्री १०८ स्वामी अवधूत चेतन देव जी की कुटिया है, यह कहने को तो कुटिया है परन्तु लाखों की सम्पत्ति है, यह आश्रम दो भागों में बंटा है। एक भाग में सद् गृहस्थ और दूसरे में महात्मा लोग, दो कूप ठण्डे जल के लगे हैं। अंदर द्वार के पास गद्दी भण्डार कुठार कार्यालय है बीच में जगद्गुरु ग्रन्थ साहब का प्रकाश है श्री अवधूत जी का भी मन्दिर है।

यहां एक बड़ा पुस्तकालय है जिस में अनेक ग्रन्थों का संग्रह है प्रतिदिन सायंकाल कथा होती है और दोनों समय भोजन सन्तों को मिलता है, प्रत्येक यात्री को दर्शन करना चाहिये।

पास ही उदासीन सम्प्रदाय के नये अखाड़े की छावनी है, कुम्भ पर्व पर अखाड़ा आकर ठहरता है। कुछ कदम पश्चिम

की और ज्वालापुर की ओर जाती है। इसी पर श्री रामा कृष्ण मिशन है। श्री राम कृष्ण परम हँस के नाम को कौन नहीं जानता . जिन के शिष्य स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका में जा कर वेदान्त का झन्डा लहराया। यहां पर साधु संत दीन गरीब की चिकित्सा मुफ्त होती है। सेवा करना एक मात्र ध्येय है। आगे बायें हाथ श्री दत्त कुटी है। श्री पं० श्री दत्त जी ऋषिकेश पञ्चायती क्षेत्र श्री बाबा काली कमली वाले के प्रधान कार्य करता ने बनवाई है,

सन्मुख राज स्थान वान प्रस्थाश्रम है। यही सड़क हरिजन बस्ती होकर आगे ज्वालापुर को चली जाती है। पीछे आप को हरि हरा आश्रम मिलेगा। यह श्री पंच जूना अखाड़ा दस नाम के आचार्य श्री १०८ पूज्य पाद स्वामी परमानन्द जी महाराज मण्डलेश्वर का है। यहां या कूप जल शीतल स्वादिष्ट है। और मन्दिर दर्शनीय है एक रूद्राक्ष का पेड़ भी है।

इस के बाई ओर निरबाणी अखाडे की छावनी है। जिस में कुम्भ पर दस नाम श्री पञ्च निरबाणी अखाड़ा ठहिरता है। आगे सेठ सूरजमल की धर्मशाला है। इस में एक पुस्तक वाचनालय है। आगे आप पहाड़ी बाजार पहुँच गये। कई कदम चलने के बाद आप बांई हाथ।श्री गुरु अमर दास जी तीसरी पात शाही का गुरु द्वारा मिलेगा। इसी स्थान गुरु जी के फूल (अस्थीयां) दबाये गये थे। गंगा जी पर पक्का घाट है। जहां प्राचीन काल में सती होती थी। और अधिक लोग अपनी मृत आत्माओं की अस्थीयां यहां ही आकर डालते हैं।

चौक बाजार में श्री दस नाम पञ्च निर्वाणी अखाड़ा है। इसका प्रधान कार्यालय प्रयाग दारा गञ्ज में है। इस अखाड़े की भी बड़ी सम्पति है। इस अखाड़े के नागाओं में मादक पदार्थों का सेवन नहीं होता। चौक के दाहिनी ओर उदासीन नया अखाड़ा है। और बांयी ओर निर्मल अखाड़ा है। पास ही में सब्जी मण्डी है। जो रोड़ दक्ष को जाती है। उस की बाईं ओर उदासीन बड़ा अखाड़ा और राज घाट है।

जहां महाराजा लांढोरा का श्री कृष्ण जी का मन्दिर है जो यात्री को श्री वृन्दावन की याद दिलाता है। घाट बहुत ही अच्छा स्थान व रमणीक है। पास में और भी दो चार मन्दिर हैं। ज्वालापुर कनखल का पास ही शमशान घाट है। यहां से चार कदम ही वैरागियों का आश्रम है। शिव जी का मन्दिर

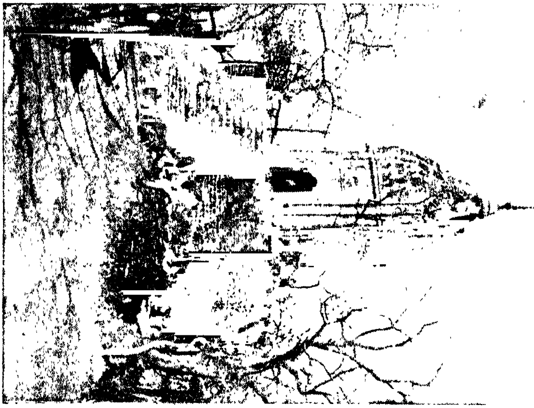
आगे आप बाजार में पहुंच जावेंगे। वहां से बायें हाथ चलिये कनखल का डाकखाना। और उसी के पास श्री राम-प्रकाश स्वामी जी का श्री राम औषधालय है। दक्ष घाट को आप सीधी सड़क जायेंगे। दाहिना हाथ चलने पर सम्मुख श्री मुनि मण्डल है। जो श्रीमान् १०८ पूज्य पाद पं० केशवानन्द जी का आश्रम है जो अपने समय के एक महान् विद्वान थे। इस समय महन्त श्री १०८ स्वामी सुरेशानन्द जी हैं।

थोड़ी ही दूर श्री दक्ष घाट श्री दक्षेश्वर महादेव हैं। यह यहां का प्रसिद्ध तीर्थ है। प्राचीन वट वृक्ष अनेक छोटे २ मन्दिर हैं। उत्तर की ओर श्री गङ्गा जी जमीन काट रही थी। वर्तमान सरकार ने कई लाख रुपया खर्च कर एक बांध बनवाया

की राजधानी का घेरा ४८ कोस का
[शा में श्री सीतला देवी का मन्दि
हनुमान जी का मन्दिर है। कहते
राक्षस, माया का आश्रम बना कर बैठा
जी ने सञ्जीवनी बूटी लेने जाते
न मील सतीकुण्ड है। जहां शङ्कर
म हुई थी दक्ष की कन्या माया देवी
ी के साथ हुआ था।
न तुलसी कृत रामायण शिव पुर

र निकल कर रजबाहा पर श्री
ान १०८ मौनी जी महाराज विद्वान
सन्त पुरा निर्मित आश्रम है रज
कृपालुद [illegible] ी का आश्रम है। श्र

श्री बद्री केदार यात्रा



चण्डीदेवी का मन्दिर

दक्ष प्रजापति श्री मन्दिर

ही वैरागियों का आश्रम है। शिव जी
ो आप बाजार में पहुंच जावेंगे। व
खल का डाकखाना। और उसी के
मी जी का श्री राम औषधालय है।
सड़क जायेंगे। दाहिना हाथ चलने
है। जो श्रीमान् १०८ पूज्य पाद पं०
है जो अपने समय के एक महान्
त श्री १०८ स्वामी सुरेशानन्द जी हैं
ी ही दूर श्री दत्त घाट श्री दत्तेश्व
ा प्रसिद्ध तीर्थ है। प्राचीन वट वृक्ष
उत्तार की ओर श्री गङ्गा जी जमीन
कार ने कई लाख रुपया खर्च कर एव

ऊपर पुराने बान्ध के पास जिस से गङ्गा जी की धारा का वेग ही बदल दिया अनेक प्राचीन मकान श्री गङ्गा जी बहा कर ले गई।

दक्षेश्वर दक्ष प्रजापति द्वारा स्थापित शिव ज्योतिर्लिङ्ग है। श्रावण मास में बड़ा भारी मेला लगता है। शिवरात्री पर तो कहना ही क्या है। कनखल महाराज दक्ष की राजधानी थी। दक्षेश्वर का मन्दिर छोटा है, दक्ष मान भङ्ग से संसार को उपदेश देने के हेतु, अब तक मोरी के द्वारा नीचे होकर जाना पड़ता है। यह मन्दिर भी अन्य मन्दिरों की भांति बड़ा हो सकता है। परन्तु कुछ देव की मर्यादा ही ऐसी हैं

महाराज दक्ष की राजधानी का घेरा ४८ कोस का था। मन्दिर के दक्षिण दिशा में श्री सीतला देवी का मन्दिर है। पश्चिम की ओर श्री हनुमान जी का मन्दिर है। कहते हैं कि यहीं पर काल नेमि राक्षस, माया का आश्रम बना कर बैठा था। जिस को श्री हनुमान जी ने सञ्जीवनी बूटी लेने जाते समय मारा था यहां से पौन मील सतीकुण्ड है। जहां शङ्कर प्रिया-'सती' दक्ष सुता भस्म हुई थी दक्ष की कन्या माया देवी सती का विवाह महादेव जी के साथ हुआ था।

जिसका वर्णन तुलसी कृत रामायण शिव पुराण में विशेष है।

कनखल बाजार निकल कर रजबाहा पर श्री हनुमान गढ़ी है। जहां श्री मान १०८ मौनी जी महाराज विद्वान महात्मा रहते हैं। दायें हाथ सन्त पुरा निर्मल आश्रम है रजबाहे के पार श्री १०८ स्वामी कृपालुदास जी का आश्रम है। आगे श्री

दादू बाग है महात्मा दादू जी का मन्दिर दर्शनीय है। कुछ ही कदम आगे शुकदेव कुटी और श्रवणनाथ के वर्तमान महन्त श्री १०८ पूज्य पाद स्वामी मोहना नन्द जी की ओर से श्रवण नाथ बाटिका बनी है। यहीं से कृष्ण नगर, सतीकुण्ड, गुरुकुल महा विद्यालय, आप को मिलेंगे। रजबाहा के पार शाक्त आश्रम और मुक्ति पीठ है। यहीं से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय है।

जिसका श्री श्रद्धानन्द द्वार दूर से ही यात्रियों का स्वागत करता है ये आर्य समाज की प्रधान संस्था है। स्वर्गीय-महात्मा मुन्शीराम जी (श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द) जी महाराज इसके संस्थापक हैं। ये प्रथम गङ्गा पार कांगड़ी गांव में था। वहां जब १९२४ में बहती आई। तब सब भवन नष्ट हो गये। और वहां से उठा कर गुरुकुल को यहां लाया गया। आज भी कांगड़ी में कुछ चिन्ह इस की याद दिलाते हैं।

पहिले यह स्थान बहुत ही बेकार था। पर गुरुकल ने इस को चार चांद लगा दिये। आज सुन्दर २ भवन छात्रावास यात्रि निवास विशाल औषधालय, चिकित्सालय, वाचनालय और बिड़ला जी का वेद भवन जिस के ऊपर के भाग में प्रदर्शनीय है आपका मन देखते ही गद गद हो जाएगा। आप एकबार अवश्य इस स्थान को देखें। औषधि निर्माण शाला, पाकशाला, शिल्पशाला, प्रकाशन विभाग, औषध विभाग, सब प्रथक २ हैं। श्री मान रामेशवेदी जी द्वारा अनेक आयुर्वेद की पुस्तकों का प्रकाशन हो रहा है।

ब्रह्मचारियों का अच्छा प्रबन्ध है। गुरुकुल की अपनी गौ शाला है। बालकों के लिये वायु मण्डल अच्छा है, छुआछूत का कोई विचार नहीं सब जाति के लड़के पढ़ते हैं। जिस लक्ष्य को लेकर इस की स्थापना हुई थी उस से हट कर ये व्यापार की ओर लग गया है। गङ्ग नहर पर घाट है और विद्यालय में नल लगे हैं।

श्रद्धानन्द औषधालय में दूर २ से प्रति दिन रोगी आते हैं और उनकी धर्मार्थ चिकित्सा होती है। अच्छे २ डाक्टर भी काम करते हैं। इस के आगे कुछ थोड़ी दूर पर श्री महाविद्यालय है। जिस के सञ्चालक महान् विद्वान पं० नरदेव शास्त्री वेद तीर्थ हैं। यहीं से आप ज्वालापुर को भी जा सकते हैं। वापिस पीछे आने पर आपको गङ्ग नहर का पुल पार करना पड़ेगा।

वापिस पुल पर आइये जहां से आप चले थे। पुल के पार दो सड़कें आप को मिलेंगी। बांई ओर की सडक आर्य नगर को होकर ज्वालापुर को जाती है। आर्य नगर के पहिले राम नगर आता है जो शरणार्थियों की बस्ती है। पास ही में सत्य ज्ञान निकेतन श्री १०८ परिव्राजक स्वामी सत्यदेव जी का आश्रम है। स्वामी जी ने इसको   में काशी की नागरी प्रचारिणी सभा को दान कर दिया है। सभा ने इस को पश्चिम उत्तर भारत का हिन्दी प्रचार केन्द्र बनाया था। परन्तु सन १९४७ ई० में पाकिस्तान बन जाने से वह योजना सफल न हो सकी। एक विशाल पुस्तकालय है जिस में सब प्रकार की पुस्तकें देखने को मिलती हैं।

ज्वालापुर कोई तीर्थ स्थान नही है। हां हरिद्वार का पंडा समाज यहां निवास करता है। हिन्दुओं से मुसलमानों की आबादी अधिक है एक जैनियों का मन्दिर दर्शनीय है। दक्षिण की ओर गङ्गा की नहर है। एक लम्बा सा बाजार है। इसे भी देखना आवश्यक है। ज्वाला पुर थाना रेलवे स्टेशन है।

जहां से आप चले हैं उस पुल के पास दाहिनी रोड से श्री अवधूत मण्डल निराकारी सन्तों का का अश्रम है। इस में श्री रघुनाथ जी का मन्दिर है। मूर्ति बहुत ही भव्य-सुनन्दर है देखते ही मन मुग्ध हो जाता है। इस आश्रम के दो विभाग हैं, एक में सद् गृहस्थ और दूसरे में सन्त महात्मा रहते हैं आश्रम के वर्तमान महन्त मिलनसार गुण ग्राही जनता जनार्दन की सेवा करने वाली है। यहां से पौन मील पर ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम है। श्री सनातन धर्म की यह प्रधान संस्था है, जिस के संचालक अनेक विद्वान, और जन्म दाता माननीय पूज्य पाद श्री पं० मदन मोहन मालवीय हैं। वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० नन्दलाल शास्त्री हैं। आप संसद के सदस्य भी हैं और राम-राज परिषद् के प्रधान मन्त्री भी आपके सहयोग से ऋषिकुल की हम उन्नति चाहते हैं।

प्राचीन प्रणाली के अनुसार यहां पठन पाठन होता है ऋषिकुल विद्यालय, ऋषिकुल आयुर्वेद विद्यालय पास २ ही में है ऋषिकुल का वार्षिक उत्सव मेष की संक्रान्ति पर होता है। जिस में देश २ के विद्वान आते हैं। अपने २ उपदेशों से

जनता जनार्द्दन को कृतार्थ करते हैं। दानी पुरुषों को इस आश्रम की सेवा करनी चाहिये। जब से इस आश्रम ने जन्म लिया है। तब से इस की उन्नति नहीं हुई जितनी होनी चाहिए।

दानी पुरुषों को इस संस्था की सहायता करनी चाहिये। गंगा नहर पर पक्का घाट भी है। यज्ञ शाला और शिव जी का मन्दिर है। ब्रह्मचारियो का जीवन बहुत अच्छा है। उन की शिक्षा दीक्षा का पूरा ध्यान दिया जाता है।

आगे स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का आनन्द आश्रम मिलेगा आपने भी बहुत प्रचार किया है। आपने कई पत्र निकाले और मर गये। अब भी आप का साप्ताहिक वीर केसरी निकलता है। आर्थिक दशा ठीक न होने से कभी कभी दर्शन होते हैं। अच्छा होता स्वामी जी अब इन झंझठों से अलग हो जाते।

आगे चलकर श्री योगाश्रम है जहां संस्कृत विद्यालय था। बहुत सुन्दर मकान है। नाथ संप्रदाय का मान नीय मठ। समीप में ब्रह्मलीन श्री १०८ पूज्य पाद स्वामी बालक राम उदासीन जी का आश्रम है। जिसके वर्तमान महन्त श्री १०८ स्वामी पं० राम स्वरूप जी हैं। आप नवयुवक महान विद्वान् प्रभाव शाली वक्ता हैं। आश्रम में एक विशाल पुस्तकालय है। जिस में प्राचीन हस्त लिखित ग्रिथ हैं। पास ही में आगे देवपुरा निर्मल सम्प्रदाय का आश्रम है।

यहां से एक रोड़ गंगा नहर कोतवाली हाई स्कूल म्यूनिस्पलबोर्ड नारायणी शिला को जाती है। इस क्षेत्र को मायापुरी कहते हैं।

सकंध पुराण में कहा है कि पश्चिम की और एक परम पवित्र शिला है। समस्त पापों का बिनाश करने वाली, उस शिला का नारायणी शिला नाम है। जो मनुष्य भक्ति से श्रद्धा पूर्वक उस शिला के ऊपर श्राद्ध करता है। वह मातृ वंषज सो पितरों को, एवं वंषज भी सौ पुरखाओ का तथा अपने आपको अवश्य उद्धार करता है।

बारह वर्ष के बाद यहां कुम्भ का पर्व (मेला) लगता है जिस में लगभग ४० चालीस लाख नर नारि जमां हो जाते हैं। सर्व प्रान्तों के प्राणी जमां हो जाते हैं। शास्त्रों में लिखा है:—

सहस्त्र कार्तिके स्नानं माघे स्नानं शता निच।
वैशाखे मर्मदा कोटि कुम्भ स्नानेन तत्फलम् ॥

अर्थ—कार्तिक स्नान एक हजार, माघ मास का सौ स्नान और वैशाख स्नान एक करोड़ जो फल होता है। वह फल एक कुम्भ स्नान का है।

पद्मिनी नायको मेषे कुम्भ राशि गतो गुरु।
गंगा द्वारे (हरि:द्वारे) भवेद योग कुम्भ नामातदोच्यते ॥
स्कंद के० खं०

अर्थ—मेख का सूर्य हो कुम्भ का बृहस्पति—
तब हरि:द्वार का कुम्भ होता है। ये अनेक पुण्य के देने वाला है।

अश्व मेध फलं चैव लक्ष गौदानजं फलम्।
प्राप्नोति स्नान मात्रेण गंगायाँ कुम्भ गेगुरौ ॥

अश्व मेद्ध सहस्त्राणि वाज पेय शतानिच।
लक्ष्यं प्रदक्षिणा: प्रथिव्या कुम्भ स्नानेन तत्फलम्॥

अर्थ—एक हजार अश्व मेद्ध यज्ञ एक १०० सौ वाज पेय यज्ञ, अथवा एक लाख पृथिवी की परिक्रमा का जो फल है वही एक कुम्भ स्नान का फल है।

यह कुम्भ पर्व परम्परा से चला आता है। सदैव इस में जन माल की हानि होती है। श्री जगद्गुरु आद्यशङ्करा चार्य जी ने इस को प्रचार का केन्द्र बना दिया। सर्व कुम्भों पर संत समाज अकट्ठा होकर। देश का कल्याण सोचते थे। और पश्चात् सर्व देशों में भ्रमण करके प्रचार करते थे। परन्तु आज इस से विपरीत कार्य हो रहा है। भगवान् शङ्कर के उपदेशों का पालन नहीं हो रहा। सर्व का लक्ष्य आज धन संग्रह है। आडम्बर में लाखो रुपया खर्च हो जाता है। साधु समाज में अनधिकारी लोग घुस आये हैं। जिन से देश का अहित हो रहा है। गो स्वामी जी ने कहा है।

नारि मोई घर सम्पति नासी। मूंड मुडाए भये सन्यासी॥

इस समय तो सर्व जीव ही पथ भ्रष्ट हो रहे हैं। संसार में कर्म की उलटी गंगा बह रही है।

कुम्भ पर्व पर बड़ी भयानक घटनाऐं दैवी कोप से हो जाती हैं। कभी हैजा पड़ता है तो कभी लोग दब कर मर जाते हैं। इस की शांति के लिये यात्रियों को भगवद् भजन दान पुन के साथ सदाचार से रहना चाहिये। हम आप को कुछ घटनाओं की याद दिलाते हैं। संवत् १४५४ विक्रमी में कुम्भ पर

अमीर तंबूर ने आक्रमण किया। मन्दिरों को तोड़ा मूर्तियों को खंडित किया। हरि की पैड़ी के पास जो डाट वाली हवेली है। इस में एक बिशाल मन्दिर था। जिस की नीम और कुछ भाग अब भी दीखता है। ऊपर मकान बन गये हैं। यात्रियों का धन लूटा अगिनित मनुष्यों को गाजर मूली की तरहां काटा गया। और कुछ लोगों को अपने साथ ले गया। जम्मू प्रांत के पास जब पहुँचा तो महांराज माल देव की आज्ञा से एक मोह जाल ब्राह्मन जिस का नाम शिवरत राय था। जो महांराज का प्रधान सेना पति था। उसने युद्ध कर के सब कैदीयों को तंमूर के पंजे से छुड़ाया। (देखो गुलाब नामा मोही पाल तारीख) सन् १७६० में बेरागी साधु और नागा सन्यासियों में भिड़न्त हो गई जिस में १८०० के लग भग आदमी मरे। सन् १८२० में ४३० यात्री पैरों के नीचे दब कर मर गये। सन् १८६५ में सिख यात्रियों ने ५०० सन्यासियों को मार दिया। सन् १८६२ में हजारों आदमी विशूचिका (हैजा) से मारे गये। संवत १६८४ बिक्रमी में भीम गोड़ा के रास्ते और पुल टूटने से दब कर मर गये कुचल कर सन् संवत् १६६५ में गंगा पार रोहड़ी बाजार में भयानक आग लगी। लाखों की हानि और हजारों लोग नष्ट हो गये। संवत् २००७ के कुम्भ पर भी बहुत से यात्रि हरि की पैरी पर दब कर मर गये। इस लिये यात्रियों को सावधानी से रहना चाहिये।

भजन नम्बर (२)

ओ३म् दीना नाथ जी, नित आप को प्रणाम हो।
ध्यान धारे आपका, उस भक्त का कल्याण हो।।टेक।।

हर समय दिन रात ईश्वर, आप ही का ध्यान हो।
आप हीं का दिल के अन्दर, परम पावन ज्ञान हो ॥१॥
देख अपने पाप को, मैं ऐ प्रभु हैरान हो।
आया शरण हूँ आपकी, भक्ति का मुझको दान हो ॥२॥
जब तक रहूँ संसार में, तेरे नाम का गुण गान हो।
पी लूँ प्याला प्रेम का, नित आप में मस्तान हो ॥३॥
तेरे चरण का आसरा, ऐ मेरे भगवान् हो।
बुद्धिचन्द्र दासनुदास है, आप भक्ति मान हो ॥४॥

वैसे तो हरिःद्वार में सदा मेला सा लगा रहता है। परन्तु चैत्र से भादों तक बड़ी भीड़ रहती है। रेलवे माल गोदाम के पास ही स्टेशन के दरम्यान मोटर अड्डा है। जहां से देहली मुजफ्फ़र नगर मेरठ देहरादून को मोटर (बस) जाती हैं। आपको हरिद्वार में सदा निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिये।

(१) स्त्री तथा बच्चों का खूब ध्यान रखें, सदा उन को अपने बायें रखें।

(२) किसी अपरिचित आदमी से मिठाई सिगरेट लेने से परहेज करो।

(३) रुपया पैसा गहना आदि में सावधानी करो। घाट पर कभी ऐसे मत रखो। घाटिये को संभाल कर दो।

(४) हर समय अपने हाथ पर चलो, सड़क पार करनी हो, तो दायें बायें देख लो। शांति से चलो किसी पर दबाव मत डालो।

(५) समाचार पत्र और पुस्तकें देखनी हों तो श्रवण नाथ श्री ज्ञान मन्दिर में जाइये। सेवा सम्पति और भागीरथी पुस्तकालय में भी समाचार पत्रों को पढ सकते हैं।

(६) किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो। तब श्री गंगा सभा श्री महाबीर दल और सेवा सम्मति के कार्यालय में जाइये।

(७) जेब कटों से बच्चो कथा वार्ता मन्दिरों में भी सावधान रहो।

आम का छिलका, केला का छिलका, खरबूजा का छिलका मार्ग में मत डालो। इस से यात्रि पिसल कर गिर जाते हैं। आप भी बच कर चलो।

हरिः की पैड़ी से उतर को कुछ दूरी पर भीमगोड़ा नामक श्रोत है। संसार से उपराम हो कर जब पांडव उत्तराखंड को जाने लगे, तब धर्म पुत्र के कहने पर, भीम ने यहां गौड़ा जमां कर प्रतीज्ञा की थी। आज से मैं शस्त्र नहीं उठाऊगा। वर्तमान समय में यहां एक तालाव है और शिव मन्दिर तथा भीम की मूर्ति है।

हरिः की पैड़ी के पास ही पहाड़ काट कर शांति भवन बना है। यात्रियों को किराये पर कमरे मिल जाते हैं। पास ही में गंगा जी पर पुराणस जम्मू-कपूर थला की धर्म शाला हैं। मार्ग में २४ अवतारों के कांगड़ा के मन्दिर दर्शनीय हैं।

अमृतसर वालों की धर्मशाला और अनेक मकान हैं। श्री माता काली कमली वाली का भी आश्रम है आप योग माता हैं।

भीमगोड़ा के पास बन खण्डी आश्रम भोला गिरी जी आश्रम नरोतम भवन, पिशोर के पीरों की दरगाह आदि आश्रम हैं। भीमगोड़ा के सामने सिन्धी धर्मशाला और श्री उत्तराखण्ड पाठशाल है। आगे पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र है। यहां से दो सड़क हो जाती हैं एक ऋषिकेश को दूसरी सप्त सरोवर को, इस सड़क पर निह कलङ्क आश्रम ओ३म् आश्रम चेतनदास आश्रम और गोकुल चन्द की धर्मशाला। बागरो पार योगाश्रम प्रेम प्रकाशी आश्रम तथा सन्यास आश्रम श्री कवलदास आश्रम, यहां साधु सन्तों को भोजन मिलता है। पाकिस्तान के बनने पर इस की व्यवस्था कुछ डामा डोल हो गई है। फिर भी श्री महन्त अद्वैत प्रकाश जी काम चला रहे हैं। आगे अब बहुत आश्रम बन गये हैं। पास ही सप्त सरोवर है। कहते हैं किसी समय सप्त ऋषियों के अपार तप के कारण भागीरथ ने गङ्गा जी से प्रार्थना की। जब वह गङ्गा जी को ला रहे थे। आप इस ढङ्ग से आगे बढ़े जिस से इनका तप भङ्ग न हो। सो गङ्गा जी सूक्ष्म सप्त धारा हो कर चली और आगे जाकर मिल गईं। इसी को सप्त सरोवर कहते हैं।

महा भारत के पश्चात पुत्र शोक संतप्त महाराज धृतराष्ट्र को विदुर जी इसी स्थान पर लाये थे। जिस समय की हम बात करते हैं। उस समय यह स्थान महा भयानक बन था। महाराज ने अपार तप करके अपने निशवर शरीर को त्यागा था। तब प्रात समरणीय पतिव्रत गन्धारी पति के साथ सती हो गई। स्वामी का शव गोद में लेकर योगाग्नि में भस्म हो गईं।

इस प्रकार समस्त तीर्थों का दर्शन करके जन्म सफल करना चाहिये। चाहे वर्तमान समय में कितने भी दुराचार क्यों न होते हों फिर भी इस भूमि की महिमा वही है जो पहिले थी सतयुग में पुस्कर, त्रेता में नेमिषारण्य, द्वापर में कुरूक्षेत्र जैसे प्रधान थे। वैसे ही कलियुग में हरिद्वार प्रधान है। आओ स्तोत्र का प्रेम से पाठ करें।

❀ श्री गंगा जी का स्तोत्र ❀

ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः।
नमस्ते विष्णु रूपिण्ये ब्रह्म मूर्त्ये नमोऽस्तुते ॥ १ ॥

अर्थ—ॐ शिव स्वरूपा श्री गङ्गा जी को नमस्कार है। कल्याण दायनी गङ्गा को नमस्कार है। हे देवी आप विष्णु रूप हैं। आप को नमस्कार है। ब्रह्म स्वरूपा आप को नमस्कार है ॥ १ ॥

नमस्ते रुद्र रूपिण्ये शाङ्कर्यै ते नमो नमः॥
सर्व देव स्व रूपिण्यै नमो भेषज मूर्तियै ॥ २ ॥

अर्थ—रूद्र रूपणि! आप को नमस्कार है। शङ्कर प्रियाः। आप को नमस्कार है नमस्कार है। देव स्वरूपिणी, आप को नमस्कार है। औषाध रूपा! आप को नमस्कार है ॥ २ ॥

सर्वस्व सर्व व्याधिना भिषक्छ्रेष्ठयै नमोऽस्तुते।
स्था स्नु जङ्गम् संभूत विषहन्त्रयै नमोऽस्तुते ॥३॥

अर्थ—आप सब के सर्व रोगों की श्रेष्ठ वैद्या (हकीम) हैं?

आपको नमस्कार है। स्थावर और जङ्गम प्राणियों से प्रकट होने वाले विष का आप नाश करती हैं। आप को नमस्कार है ॥ ३ ॥

संसार विष नाशिन्यै जीवनायै नमोऽस्तुते ।
ताप त्रितय संहन्त्र्ययै प्राणेश्यै ते नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥

अर्थ—संसार रूपी विश का नाश करने वाली जीवन रूपा आपको नमस्कार है। अध्यात्मिक, अधिदैवक, अधिभौतिक तीनों प्रकार के क्लेशों को नाश करने वाली, मा आ प को नमस्कार है ॥ ४ ॥

शान्ति सन्तान कारिण्यै नमस्ते शुद्ध मूर्तये ।
सर्व संशुद्धि कारिण्यै नमः पापारि मूर्तये ॥ ५ ॥

अर्थ—शान्ति का विस्तार करने वाली शुद्ध स्वरूपा आपको नमस्कार है। सब को शुद्ध करने वाली, तथा पापों की शत्रु स्वरूपा आप को नमस्कार है ॥ ५ ॥

भुक्ति मुक्ति प्रदापिन्यै भद्रदायै नमो नमः ।
भोगोप भोगदायिन्यै भोगवत्यै नमो नमः ॥ ६ ॥

अर्थ—भोग मोक्ष तथा कल्याण प्रदान करने वाली, आप को बार २ नमस्कार है। आगे और उपभोग देने वाली भोगवती नाम से प्रसिद्ध पताल गङ्गा आप को नमस्कार है ॥ ६ ॥

मन्दा क्निन्यै नमस्तेऽस्तु स्वर्ग दायै नमो नमः ।
नमस्त्रैलोक्य भूषायै त्रिपथायै नमो नमः ॥ ७ ॥

अर्थ—मन्दाकनि नाम से प्रसिद्ध तथा स्वर्ग प्रदान वाली आप आकाश गङ्गा को बार २ नमस्कार है। आप भूतल आकाश पाताल तीन मार्गों से जाने वाली और तीनों लोकों की आभूषण स्वरूपा हैं, आप को बार बार नमस्कर है ॥ ७ ॥

नमस्त्रिशुक्ल संस्थायै क्षमा वत्यै नमो नमः ।
त्रिहुताशन संस्थायै तेजो वत्यै नमो नमः ॥ ८ ॥

अर्थ—गगां द्वार (हरिद्वार प्रयाग और गङ्गा सागर संगम इन तीन विशुद्ध तीर्थों में विराजमान आप को नमस्कार है। क्षमावती आपको नमस्कार है गार्ह पत्य आहवनीय और दक्षिणाग्नि रूप त्रिविध अग्नि में रहने वाली आप को नमस्कार है ॥ ॥ ८ ॥

नन्दायै लिङ्ग धारिण्यै सुधा धारात्मने नमः ।
नमस्ते विश्व मुख्याये रेवत्यै ते नमो नमः ॥ ९ ॥

अर्थ—आप ही अलक नन्दा हैं आप को नमस्कार है। शिव-लिङ्ग धारण करने वाली आपको नमस्कार है। सुधा धारा मयी आपको नमस्कार है। जगत में मुख्य सरिता रूप आप को नमस्कार है। रेवती नक्षत्र रूपा आपको नमस्कार है ॥९॥

बृहत्यै ते नमस्तेऽस्तु लोक धात्र्यै नमोऽस्तुते ।
नमस्ते धिश्व मित्रायै नन्दियै ते नमो नमः ॥ १० ॥

अर्थ—बृहती नाम से प्रसिद्ध आपको नमस्कार है। लोकों को धारण करने वाली आप को नमस्कार है। सम्पूर्ण विश्व के लिये मित्र रूपा आप को नमस्कार है। सब को समृद्धि देकर

आनन्दित करने वाली आपको नमस्कार है।

पृथ्व्यै शिवा मृतायै च सुवृपायै नमो नमः ।

परा पर शतादूपायै तारा यै ते नमो नमः ॥ ११ ॥

आप—पृथ्वी रूपा हैं। आप को नमस्कार है, आपका जल कल्याण मय है। आपको नमस्कार है। आप धर्म रूपा हैं बड़े छोटे सैंकडों प्राणियों से सेवत आपको नमस्कार है। सब को तारने वाली आपको नमस्कार है॥ ११ ॥

पाश जाल निकृन्तिन्यै अभित्रायै नमोऽस्तुते ।

शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमो नमः ॥ १२ ॥

अर्थ—संसार बन्धन का उच्छेदन करने वाली, अद्वैत रूपा आप को नमस्कार है। आप परम शान्त, सर्व श्रेष्ठ तथा मनोवान्छित वर देने वाली हैं। आपको बार २ नमस्कार है ॥१२॥

उग्रायै सुख जग्ध्यै च सञ्जीवन्यै नमो नमः ।

बृह्मिष्टायै ब्रह्म दायै दुरितान्यै नमो नमः ॥ १३ ॥

अर्थ—आप प्रलय काल उग्र रूपा हैं। और अन्य समय में सदा सुख का भोग कराने वाली हैं। आपको नमस्कार है। आप ब्रह्म निष्ट ब्रह्म ज्ञान देने वाली तथा पथा पापों का नाश करने वाली हैं। आपको बार नमस्कार है ॥ १३ ॥

प्रण तार्ति प्रभञ्जिन्यै जगन्न मात्रे नमोऽस्तुते ।

सर्वा पत्द्रति पक्षायै मङ्गलायै नमो नमः ॥ १४ ॥

अर्थ—प्रणत जनों की पीड़ा का नाश करने वाली, जगन्न माता आपको नमस्कार है। आप समस्त विपत्तियों की शत्रु भूता

तथा सब के लिये मङ्गल रूपा हैं। आप के लिये बार २ नमस्कार है । १४ ॥

शरणा गत दीनार्त परि प्राण परायणे ।
सर्व स्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ १५ ॥

अर्थ—शरण गतों, दीनों तथा पीड़ितों की रक्षा में, संलगन रहने वाली और सब की पीड़ा दूर करने वाली देवी नारायणी आप को नमस्कार है। १५ ॥

निर्लेपाय दुर्ग हन्त्यपै दक्षायै ते नमो नमः ।
परापर परायै च गङ्गे निर्वाण दायिनी ॥१६॥

अर्थ—आप पाप-ताप अथवा अविधा रूपी मल से निर्लेप, दुर्गम दुख का नाश करने वाली तथा दक्ष हैं। आप पर और अपर सब से परे हैं। मोक्षे दायिनी गङ्गे । आर को नमस्कार है।

गङ्गे ममाग्रतो भूया गंगे मे तिष्ट पृष्टतः।
गँगे में पार्श्व योरेधि गंगे त्वय्यस्तु मे स्थिति ॥१७॥

अर्थ— गङ्गे ! आप मेरे आगे हों, गङ्गे । आप मेर पीछे रहें। गङ्गे । आप मेरे उभय पाश्वर्व में स्थित हों तथा गङ्गे । मेरी आप में ही स्थिति हो।

आदौ त्वमन्त मध्ये च सर्व त्वं गङ्ग ते शिवे ।
त्वमेव मूल प्रकृति त्वं पुमान् पर एव हि ॥
गङ्गे त्वं परमात्मा च शिव स्तुभ्यं नमः शिवे ॥१८॥

(स्कं० पु० का० पू० २७।१५७-१७४)

अर्थ—आकाश गामी गङ्गे ! कल्याणी मयी गङ्गे ! आदि मध्य अन्त में सर्वत्र में आप हैं। गङ्गे ! आप ही मूल प्रकृति हैं। आप ही परम पुरुष हैं तथा आप ही परमात्मा शिव हैं, शिवे आप को नमस्कार है ॥ १८ ॥

गङ्गा जी का भजन नं० (३)

जय गंगे महारानी। तेरी जय गंगे महारानी ॥ टेक ॥

कमला पति केशव भगवाना। तिन के चरण प्रगटानी ॥१॥
आगम निगम तेरा यश गावें। शिव के सीस समानी ॥२॥ ते०
द्वारा तेरे पर सब चल आवें। क्या मूर्ख क्या ज्ञानी ॥३॥ ते०
निर्धन धनी तुम्हारी सेवा। करते राजा रानी ॥४॥ ते०
कलि मल हरण दुखों की नाशिन। जो सेवें धन प्रानी ॥५॥ ते०
हरि:हर जाप जपो बुद्धिचन्द्र। लगे न यम की कानी ॥६॥ ते०

वां भजामो वयँत्वाँ जग
रालम्ब मीशँ भवाम्भो पोतम
रा सुमरण करते हैं, हम तुमको
हैं। हम तुम्हें जगत के सा
। एक मात्र सत्य स्वरूप नि
रणि रूप ईश्वर को हम
ही निम्न लिखित

* दूसरा प्रकरण *

आवश्यक कर्म

प्रत्येक प्राणी को प्रातःकाल उठ कर भगवान् की प्रार्थना करनी चाहिये ।

ॐ यो ब्रह्मणं विद धाति पूर्वं,
यो वैं वेदान्श्च प्रणोति तस्मैं ।
तंह देवात्म बुद्धि प्रकाशं ।
मुमुक्षुर्वैं शरण महंप्रपद्ये ॥

अर्थ—ॐ जिसने ब्रह्मा को था गंगे मे है। और जिसने उसको चारों वेद रेधि गंगे त्वय्यस्तु मे प्रकाश स्वरूप सिद्ध देव की मेरे आगे हों, गङ्गे। आप
प मेरे उभय पार्श्वव में स्थित हं
नमस्ते सतेते जग ही स्थिति हो। के आयाय।
नमोऽद्वैत तत्वाय मु मध्ये च सर्व त्वं गङ्ग ते शाश्वताय ॥

अर्थ – हे जगत के का ति त्वं पुमान् पर , तुम्हें नमस्कार है। हे सर्व लोकों के आ स्वरूप तुम्हें नमस्कार है। हे मुक्ति प्रदान करने वाले, अद्वैत तत्व तुम्हें नमस्कार है। शाश्वत और सर्व व्यापी तुझ को नमस्कार है।

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्॥

अर्थ—तुम्हीं एक शरण में जाने योग्य, अर्थात आश्रय के स्थान हो। तुम ही एक पूजा करने के योग्य हो। तुम ही एक जगत के करता-पालक और संहारक हो। तुम ही एक निश्चल और निर्विकल्प हो।

भयानां भयं भीषणं भीषणानां गति प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महोच्चै पदानाँ नियन्तृ त्वमेकँ परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम्॥

तुम भयों के भय देने वाले हो! भयङ्करों के भयङ्कर हो। प्राणियों की गति हो, और पावनों को पावन करने वाले हो। अत्यन्त उच्च पदों के तुम्हीं नियन्त्रण करने वाले हो। पर के भी पर हो, रक्षा करने वालों की भी रक्षा करते हो।

वयंत्वां स्मरामो वयंत्वां भजामो वयँत्वाँ जगतसाक्षि रूपँ नमामः।
सदेकँ निधानँ निरालम्ब मीशँ भवाम्भो पोतम् शरणँ व्रजाम्॥

अर्थ—हम तुम्हारा सुमरण करते हैं, हम तुमको भजते हैं। हम तुमको भजते हैं। हम तुम्हें जगत के साक्षी रूप में नमस्कार करते हैं। एक मात्र सत्य स्वरूप निरालम्ब तथा इस भव सागर की तरणि रूप ईश्वर की हम शरण जाते हैं।

प्रातः काल उठते ही निम्न लिखित मन्त्र को पढ़ा करो।

ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्त कारी, भानुः शशि भूमि सुतोबुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहुकेतवः, कुर्वंतु सर्वे मम सुप्रभातम॥

पश्चात कर दर्शन करना चाहिये ।

कराग्रे बसते लक्ष्मी, कर मध्ये सरस्वती ।

कर पृष्ठे च गोविन्दः, करोमि कर दर्शनम् ॥

अर्थ—हाथों के अग्र भाग में लक्ष्मी का वास है, और मध्य भाग में सरस्वती, हाथों के पृष्ठ भाग में श्री कृष्ण जी का निवास है। इस लिये प्रातः काल हाथ दर्शन करना चाहिये । मन्त्र को पढ़ कर दोनों हाथ मसल लो। वही खोल कर सन्मुख देखलो। फिर पिछले भाग को देखो, आइन्दा आने वाली और रात्रि के अशुकन नाश होंगे।

पश्चात भूमि को प्रणाम करना चाहिये।

सुमिद्र मेखला देवि ! पर्वत स्तन मण्डले ।

विष्णु पत्नि ! ननस्तुभ्यं पाद स्पर्श क्षमस्व में ॥

अर्थ—भू माता आप भगवानविष्णु की पत्नी हैं। समुद्र आप की मेखला और पर्वत आप के स्थान हैं जगत धारणी मैं आप चरण रखता हुआ प्रणाम करता हूँ मां क्षमा करना।

स्नान करने का मन्त्रः—

ॐ पुष्कर्णाद्यानि तीर्थनि गँगाद्याः सरितस्तथा ।

आगच्छन्तु पवित्राणि स्नान काले सदा मम ॥

त्वँ राजा सर्व तीर्थानाँ त्वमेव जगतः पितः ।

यचितँ देहि मे तीर्थ ! सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥

गङ्गा जी को नमस्कार ।

ॐ नमामि गंगे तव पाद पङ्कज सुरासुरैर्वन्दित दिव्य रूपम्।
भुक्ति च मुक्तिंच ददामि नित्यँ भावानुसारेण सदा नारायणम्।

स्नान करने के पश्चात जल ले कर संकल्प करो।

ॐअद्य शुभ पुण्य तिथौ...श्री सविता सूर्य नारायण प्रीत्यर्थं दीर्घआयु रारोगय धन धान्यादि बृद्ध यर्थ श्री सूर्य नारायण नमस्काराख्यं कर्म करिष्ये।

संकल्प करके सूर्य को नमस्कार करे।

ध्येयः सदाः सवितृ मण्डल मध्यवर्ती।
नारायणः सर सिजासन सन्नि विष्टः॥
केयूर वान मकर कुण्डल वान किरीटी।
हारी हिरण्य मायावपुर्धृ त शङ्ख चक्र॥

पश्चात् निम्न लिखित मन्त्रों से प्रणाम करे।

१ ॐ मित्राय नमः २ ॐ रविये नमः, ३ ॐ सूर्याय नमः। ४ ॐभानुवे नमः, ५ ॐ खगाय नमः, ६ ॐ पूषणे नम, ७ ॐ हिरण्य गर्भाय नमः, ८ ॐ मरीचये नमः, ९ ॐआदित्याय नमः, १० अर्काय नमः, ११ ॐ सवित्रे नमः, १२ ॐ भास्कराय नमः. ॐ मित्र रवि-सूर्य भानु-खग- पूष-हिरण्य-गर्भ-मरीचादित्य सवितार्क भास्करेभ्यो नमो नम।

पश्चात हाथ में जल ले कर आचमन करे।

अकाल मृत्यु हरणं सर्व व्याधि विनाशनम।
सूर्य पादोदकँ तीर्थँ जठरे धारायाम्यहम॥

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिने दिने ।
जन्मान्तर सहस्त्रेशु दारिद्रयं नोप जायते ॥
अनेन सूर्य नारायण नमस्कराख्यैनः कर्मणा ।
श्री सविता सूर्य नारायण देवता प्रीयताम् ॥

वस्त्र धारण कर आसन पर बैठ कर श्री गङ्गा जी का ध्यान करो ।

चतुर्भुजां त्रिनेत्रा च सर्वावय विभूपिताम ।
रत्न कुम्भा सिताम्भोजाँ वरदाय भय प्रदाम् ॥
श्वेत-वस्त्र परीधाना मुक्ता मणि विभूषिताम् ।
ततो ध्यायेत् सरूपाँ चन्द्र कोटि सम प्रभाम ॥
चामरैर्वीज्यमानाँ च श्वेत छत्रोप शोभिताम ।
सुप्रसन्नाँ सुवदनाँ करुणार्द्र विजान्तराम ॥
सुधाप्लावित भू पृष्ठा आर्द्र गन्धानुलेपनाम् ।
त्रिलोक्य निर्मता गङ्गा देवादि भिर भिष्टुताम् ॥
दिव्य रूप विभूषाँ च दिव्य माल्यानु लेपनाम् ॥

अर्थ—ऐसी गङ्गा देवी का ध्यान करना चाहिये। जिन के चार भुजा हैं और तीन नेत्र हैं। अङ्ग २ में विभूषण हैं जो रत्न निर्मल घड़ा और श्वेत कमल लिये हुए हैं। वरदान और अभयदान दे रही हैं। श्वेत वस्त्र पहिने हैं। मोतियों की व मणियों से विभूपित हैं। सुन्दर रूप वाली और लाखों

चन्द्रमाओं के समान कान्ति वाली हैं। जिन पर चवंर चल रहे हैं। श्वेत छत्र लगा हुआ है। जिन का मुख अत्यन्त प्रसन्न और सुन्दर है। जिन का हृदय दया से द्रवित रहता है, जो पृथ्वी तक को अमृत से पूर्ण कर रही हैं।

जिन के शरीर पर ताजे सुगन्धित द्रव्य लगे हैं, जिन्हें तीनों लोक नमस्कार करते हैं। जिन की स्तुति देवता करते हैं। जिनका रूप दिव्य है। वेश दिव्य है, मालायें दिव्य हैं। चन्दन आदि कुँकुम दिव्य हैं।

पश्चात अपने गुरु मन्त्र का जाप करना चाहिये। गङ्गा माता के विषय में कहा है।

गङ्गा जी की दौड़ १५०० मील है सङ्गम बंग सागर है। हरिद्वार, बिजनौर, फर्रूखाबाद, फतेहगढ़, कन्नौज, कानपुर इलाहाबाद, मिर्जापुर, बनारस, गाजीपुर, बक्सर, बलिया, पटना मुङ्गेर, सुलतान गञ्ज, भागलपुर, राज महल, रामपुर, मुर्शिदाबाद, चन्द नगर, गढ़मर पटना आदि नगर हैं।

❀ गङ्गा महात्म्य ❀

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानाँ शतैरपि।
मुच्यते सर्व पापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

अर्थ—सौ योजन की दूरी से भी जो कोई गङ्गा ऐसा नाम उच्चारण करता है वह सब पापों से मुक्त होकर श्री विष्णुलोक को जाता है।

गंङ्गा द्वारोत्तरँ विप्र स्वर्ग भूमिः स्मृता बुधै।

अन्यत्र पृथ्वी प्रोक्ता गँङ्गा द्वारोत्तरँ विना ॥

केदार अ० १०६ श्लोक ४

अर्थ—हरिद्वार को उत्तर भूमि को विद्वानों ने स्वर्ग भूमि कहा है। गङ्गा द्वार के उत्तर की भूमि के अतिरिक्त भूमि कहलाती।

इद मेव महाभग स्वर्ग द्वारँ स्मृतँ बुधै।

इन्हीं स्थानों को बुद्धिमान महात्माओं ने स्वर्ग का द्वार भी कहा है।

गङ्गा द्वारे तथा काश्याँ गङ्गा सागर सङ्गमे।

न तेषाँ पुनरा वृतिः कल्प कौटि शतै रपि ॥

अर्थ—हरिद्वार, गङ्गा सागर, काशी, इन तीनों स्थानों में जो व्यक्ति निवास करते हैं। सैकड़ों कल्प में भी फिर उनका पुनरावर्तन नहीं होता है।

धन्यानाँ पुरूषाणाँ हि गङ्गा द्वारस्य दर्शनम्।

विशेषतस्तु मैषार्क सँक्रमेतीव पुण्यदे ॥

(केदार खण्ड अ० २५)

अर्थ—वे पुरुष भाग्य शाली हैं। जिन को हरिद्वार के दर्शन होते हैं। और अतिशय पुण्य दायक मेष की संक्रान्ति में तो बड़ भागियों को ही उस के दर्शन होते हैं।

दृष्टावा मायापुरी पुण्याँ स्नात्वा च ब्रह्म मन्दिरे।

वाराणसीलभे द्गन्ते सत्यँ सत्यँ हि नारद ॥

अर्थ—पवित्र मायापुरी के दर्शन और ब्रह्मकुण्ड में स्नान करके ही नारद जी ! अन्त समय में अवश्य पो काशी धाम की प्राप्ति होती है इस में कोई भी सन्देह नहीं हैं।

गङ्गा माता की महिमा अपार है। उसे किञ्चित मात्र संस्कृत के विद्वानों ने गा कर अपनी वाणी को पवित्र किया है। इतिहास पुराण सर्व शास्त्र श्री गङ्गा माता की महिमा से भरे पड़े हैं। गो स्वामी तुलसी दास जी क्या कहते हैं।

सवैया (४)

ब्रह्म जो व्यापक वेद कहें, गम नहीं सिरागुन-ज्ञान गुनी को।
जो करता, भरता हरता, सुर-साहिब २ दीन दुनि को ॥
सोई भयो द्रव-रूप सही इह, नाथ विरञ्चि महेशप मुनि को
मानि प्रतीति सदा 'तुलसी' जल काहे न सेवतदेव धुनि को ॥

भागीरथ ने बड़े कठोर तप से गङ्गा पाई थी। इस लिये आज कल किसी महान परिश्रम का नाम ही "भागीरथ प्रयत्न पड़ गया है।

पद्य (५)

गङ्ग तरङ्ग विलोकत नैन ॥ टेक ॥
अति पुनीत विष्णु पादोदक-महिमा निगम पढ़न गुन चैन ॥
परम पवित्र मुक्ति की दाता भागीरथ भई वर दैन ॥ २ ॥
त्रिभुवन-हार शृङ्गार भगवती सलिल चराचर जाके नैन ॥३॥

"सूरदास विधना के तप से, प्रकट भई सन्तति सुख दैन ।४।

राग बनजारा (६)

तेरी निर्मल शीतल धारा । मन मोह लिया गंगे हमारा ।टे०।

श्री विष्णु के चरण प्रकटानी,
बम भोला के सिर लिपटानी जी ।
करते हैं जय जय कारा ।। १ ।। मन०
तप राजा भागीरथ कीना,
कर कृपा ब्रह्मा ने दीना जी ।
हुई भूतल पर अवतारा ।। २ ।।
तृट ऋषि मुनि कुटिया बनाई,
जप तप नेम करें सुखदाई जी ।
कहीं वेदन मन्त्र उचारा ।। मन० ३ ।।
कर प्रेम जो "हिमकर" आवे,
फल चारों पदार्थ पावे जी ।
तैंने बेड़ा सगर का तारा ।। मन० ४ ।।

भजन नं० (७)

गई आयु विषयों में सारी गुजर,
प्यारे ईशप्रभु का भजन न किया ।
धिक्कार मेरे इस जीवन को,

दीन दयालु का मैंने भजन न किया ॥ गई० १ ॥

तन मानुष का मैंने पाया था,

कुछ नेक कर्म को आया था।

देखो भूल मेरी सब कर्म तजा,

इस बात का मैंने यत्न न किया ॥ गई० २ ॥

भागा बहुत फिरा संसार विषे,

नहीं बोध रहा अन्धकार विषे।

मेरा पाँव धर्म के पीछे रहा।

कुछ आगे को मैंने बढ़न न किया ॥ गई ३० ॥

धाया चारों दिशा बहु दूर गया,

सब चीजों से घर भरपूर किया।

नहीं डायन तृष्णा तृप्त हुई,

इस पावन ने अपना घटन न किया ॥ गई० ४ ॥

"बुद्धिचन्द्र" सही दुःख पावेगा,

चला सीधा नरक को जावेगा।

पूर्ण ब्रह्म सनातन ध्यान विषे,

जो मन चञ्चल को मगन न किया ॥ गई० ५॥

* तृतीय प्रकरण *

ऋषिकेश

या त्रियों को केदार खण्ड जाने से पहिले निम्न लिखित बातों पर ध्यान देना चाहिये। जो आपको हर समय काम आवेंगी। १ साथ में अमृत धारा लौंग, २ सौंठ, ३ मंघा, ४ छुहारे, ५ मुनक्का, ६ चीनी, ७ दस्त पेचिस बन्द करने की औषधि ८ हिङ्गवष्टक ९ लवण भाषकर, १० गरम मसाला, ११ हल्दी, १२ मिर्च। इन का होना जरूरी है। घी यदि आप शुद्ध ला सकें तो अच्छा है। पहाड़ में भी मिल जाता है।

(२) लाठी १ छाता १ बैट्री १ लैम्प १ पीतल का लोटा १ दरी १ पैरों में मजबूत चमड़े का जूता जो अपने देश का हो। नीचे टायर का टुकड़ा लगा हो। कपड़े के जूते मार्ग में टूट जाते हैं। नंगे पैर यात्रा कभी न करो रास्ता पथरीला है।

(३) १ जोड़ा धोती, १ जोड़ा कमीज, १ तौलिया, १ साफा, १ गर्म कम्बल १ बनियान इस से ज्यादा बोझ न उठाओ।

(४) खाली पेट कभी जल न पियो। कुछ खाकर पीना चाहिये चलते २ एक दम पसीने में स्नान मत करो और न ही जल पान करो।

(५) जहां तक हो सके सादा भोजन दाल चावल खावें। बासी अन्न भूल कर न खावें। रोटी को आग पर सेक कर अच्छी तरह खाओ। जिस झरने का जल मन्द २ चलता हो उसे पीयो या सरकारी नल से।

(६) धूप में कभी मत चलो, जहां तक हो सके ठण्डे २ ब्रह्म-महूर्त में चलो। मार्ग में आगे देख कर चलो। कहीं कुछ देखना है तो खड़े हो कर देखो। बिना जान पहिचान के कभी किसी पर विश्वास मत करो। चाहे साधु ब्राह्मण भी हो।

(७) दीन गरीब महात्मा की सेवा करो, हो सके उन्हें अन्न वस्त्र भोजन दो। जेब कट बदमासों से बचो। ये देश से ही साथ हो लेते हैं। आज कल तो ये बहुत हो गये हैं। स्त्री जाति में भी ये रोग फैल गया है।

(८) हरिद्वार ऋषिकेश की धर्मशालाओं में अब चोरियां होने लगी हैं इस लिये अपना एक आदमी बिठा कर जाना चाहिये। दिन दिहाड़े ताले टूट जाते हैं।

(९) जमनोतरी—गङ्गोत्री—केदार नाथ की तरफ जहरीली मक्खियां होती हैं। जिन के काटने से फोड़े हो जाते हैं उस पर अमृतधारा जहर मोहड़ा पत्थर घस कर लगा दो आराम हो जाएगा।

(१०) दुकानदार से साफ बर्तन लो और साफ दो।

(११) बीमार कोन होता है। जो कच्ची वस्तु और दुकान की बनी चीज खाते हैं। या अधिक गुड़ चना सत्तू खाकर चलते हैं। व ठण्डे में या तप्त कुण्ड में बहुत स्नान करते हैं

और नियमों का पालन नहीं करते।

(१२) कब्ज-पेचिस-आम्ब-दस्त-ज्वर-सिर दर्द-हृदय शूल-मूर्छा आदि अनेक रोग हो जाते हैं। अतः ऊपर लिखे नियमों का पालन करना चाहिये।

(१३) साधारण आदमी १००) सौ रु० में आ जा सकता है। प्रायः २॥) ३) रु० प्रति दिन खर्च हो सकता है। कुली किया जाय तो ३) ४) रु० पर जाएगा। कुली को मजदूरी के अलावा चने चाबने को पैसे भी दिये जाते हैं। प्रत्येक बड़े तीर्थ पर खिचड़ी दी जाती है। यदि कहीं ज्यादा रहेंगे तो उन दिनों का खर्च कुली को देना होगा।

(१४) भाव के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता हैं।
दुकनदार अपनी इच्छा से घटा व बढ़ा देते हैं। अब तो सरकार की ओर से भी राशन का प्रबन्ध होता है। आप जैसे १ ऊपर जायेंगे वस्तु का भाव बढ़ता जाएगा। प्रथम तो भेड़ बकरी पर खाद्य वस्तु पहुँचती थी। अब तो पीपल कोटी तक मोटर चली गई है। प्रथम सस्ते समय में बद्री नाथ १ मन वस्तु ८० रुपये में पहुँचती थी।

(१५) कुली को ३० सेर से बोझ अधिक न दो। नहीं तो मार्ग में तङ्ग करेगा। सवारी के लिये कांड़ी, डांडी झापान मिलते हैं। कांडी को आदमी उठा कर चलता है। जो कुर्सी नुमा होती है। कांड़ी को ४ आदमी झापान को ६ आदमी उठाते हैं। यही उत्तम सवारी है। जिसे अमीर कर सकते हैं। इन का भाव अब ऋषिकेश [कार्यालय] से मालूम करें। कुली यहां

रजिस्टर्ड होते हैं। अपनी जिम्मेवारी पर कुली कभी न ले जाओ कुली नैपाली अच्छा रहता है।

(२६) ऋषिकेश से अब उत्तराखण्ड को मोटर जाने लगी हैं। जमनोतरी जाने वलों को धरासु तक मोटर जाती है। आगे पैदल यात्रा करनी होगी।

केदार नाथ को जाने वाले श्री रुद्र प्रयाग तक मोटर मिल जाती है। बद्रीनाथ को कीर्ति नगर से गङ्गा पार कर के पुना श्रीं नगर से मोटर मिलती है। हमारी सम्मति में यात्रा तो पैदल ही अच्छी है।

पट खुलने का समय

श्री बद्रीनाथ के पट अक्षय तृतीया को नहीं खुलते हैं। सदा बैशाख २५ प्रविष्टा से १० प्रविष्टा के अन्दर खुल जाते हैं। एवं यमनोत्री गङ्गोत्री के पट २५ प्रविष्टा से पहिले खुल जाते हैं।

यात्रा में जाने का समय

१—यमुनोत्री, गंगोत्री, केदारनाथ होकर बद्रीनाथ जाने को बैशाख प्रारम्भ से आषाढ़ आखीर तक।

२—सिर्फ केदार नाथ होकर बद्रीनाथ जाने में। श्रावण तक आप जा सकते हैं।

३—सीधे बद्रीनाथ जाने में बैशाख १० से श्री कृष्ण जन्माष्टमी तक अच्छा समय है। इस समय यात्रियों को कहीं भी बर्फ नहीं मिलेगी। किन्तु ध्यान रहे ज्येष्ठ आषाढ़ की यात्रा सब से अच्छी रहेगी।

भिन्न भिन्न स्थानों की दूरी

ऋषिकेश से सीधे	बद्रीनाथ [देवप्रयाग हो कर]	१६८ मील ।
,, ,,	केदारनाथ············	१३४ मील ।
,, ,,	गङ्गोतरी·····················	१७८ मील ।
,, ,,	यमुनोतरी·················	१५८ मील ।
,, ,,	यमुनोतरी से गङ्गोतरी··········	६८॥ मील ।
,, ,,	गङ्गोतरी से केदारनाथ········	१२० मील ।
,, ,,	केदारनाथ से बद्रीनाथ········	१०१ मील ।
,, ,,	बद्रीनाथ से वापिस राम नगर········	१६४ मील ।

॥ सारी यात्रा ॥

सम्पूर्ण यात्रा पैदल ऋषिकेश से गङ्गोत्री यमुनोत्री केदारनाथ होकर बद्रीनाथ आदि से लौट कर ऋषिकेश तक ६५५ मील है। केवल केदारनाथ व बद्रीनाथ होकर ऋषिकेश तक ४०३ मील है। सीधे बद्रीनाथ से लौट कर ऋषिकेश तक ३६३ मील है।

नोट—कभी कभी पहाड़ के गिर जाने से जो मार्ग बदल जाता है उस से कुछ मीलों का भेद पड़ जाता है।

जिस प्रकार चार युगों में सत्य युग प्रधान है इसी प्रकार चार पहिरों में दिन का पहिला पहिर बहुत अच्छा है। उसमें भी ऊषा काल का पद बहुत ऊंचा है। हरि भजन के लिये विद्याभ्यास के लिये तथा यात्रा के निमित परम पवित्र माना गया है। मनुष्य को उचित है कि इस समय उठ कर जगत पिता का ध्यान करे। जो लोग मोह में फंस कर उठने का ध्यान नहीं करते और चद्दर तान कर सोते हैं, उन्हें भक्त कबीर का यह दोहा

याद करना चाहिये।

कबीर सोते क्या करे, जग कर जपो मुरारि।
एक दिन होगा सोवना, लम्बे पाँव पसारि॥

हरिद्वार से ऋषिकेश १६ मील है, पक्की सड़क जाती है। जिस पर सारा दिन मोटर दौड़ती हैं। रेल गाड़ी भी जाती है। अब आप की इच्छा है जिस प्रकार जाइये।

मुकँ करोति वाचालं, पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत्कृपा त महं वन्दे, परमानन्द माधवम्॥

अर्थ—जिस की कृपा से गूंगे भी बोलते हैं, और लङ्गड़े भी पर्वतों पर चढ़ जाते हैं। उसी माध्व का ध्यान धर कर उत्तराखण्ड की यात्रा को जाइये। हरि की पैड़ी से पौन मील भीम गोड़ा स्थान है। यहां से सड़क मैदान में जाती है। इधर उधर का बन जो भयानक था, काट कर अनेक मकान बन गये हैं। और प्रति दिन बनते जाते हैं।

१॥ मील आगे जाकर सुर्चत बन आ जाता है। जिस में अनेक प्रकार के जानवर रहते हैं। अब तो अनेक स्थानों पर हरे भरे खेत हो गये हैं जो यात्रि का मनोरञ्जन करते हैं। बीच में श्री सत्यनारायण जी का मन्दिर है। श्री बाबा काली कमली वाला पञ्चायती क्षेत्र का है औषधालय, प्याऊ पहाड़ी नाले का पानी मन्दिर के चारों ओर बहता रहता है। स्थान रमणीक है यहां से सात मील ऋषिकेश तपो भूमि है। गङ्गा जी के पावन तट पर शोभायमान है। अब यहां सन् १६४७ से जन संख्या और मकानात बन गये हैं। मनुष्यों का मनोरञ्जन करने वाला

सनीमा घर, पाकिस्तान से आने वालों ने अनेक मकान बना लिये हैं और यह धीरे बिलासी लोगों का एक नगर बन गया है किसी समय भारत के त्रिकाल दर्शी ऋषि मुनि यहा निवास करते थे। उस समय का आनन्द वही वर्णन कर सकते हैं। जिन्होंने उस अतीत काल को देखा हो। आज भी इस गये गुजरे ज़माने में भी अनेक महात्मा रहते हैं। जिन का भाग्य से दर्शन होता, केवल स्पेशल ट्रेन से उतरते ही नहीं? कुछ दिन रह कर खोज करने से प्राप्त होता है। महान् पुरुषों का सङ्ग करने से अनेक विकारों का नाश होता है। गो स्वामी जी ने कहा है—

बिन सत्संगन हरिकथा, तेहि बिन मोह न भाग।
मोह गये बिनु राम पद, होय न दृढ़ अनुराग॥
तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला इक सङ्ग।
तुलै न ताहि शकल मिल, जो सुख लव सत्सङ्ग॥

भगवान ऋषिकेश का मन्दिर विशाल है। जिस के वर्तमान महन्त पण्डित परशुराम जी हैं आप की तरफ से एक विद्यालय तथा पुस्तकालत है। मन्दिर में भगवान् की विशाल मूर्ति है। जो भरत जी के नाम से पुकारी जाती है। अखण्ड ज्योति के प्रज्वलित रहने पर भी मन्दिर में प्रायः अन्धेरा रहता है। मन्दिर प्राचीन मालूम देता है। बृन्दाबन के मन्दिर गोबिन्द जी की तरह इस की भी बाहर खण्डित प्रतिमा है।

हा! हा! यबन जाति ने अपने शासन काल में क्या २ अत्याचार नहीं किये हैं अभी भारत विभाजन की घटना तो

आप के सन्मुख ही है। सीमा प्रान्त काश्मीर पंजाब पर किये गये अत्याचार कठोर से कठोर हृदय को पिघला देते हैं। प्राचीन समय में रैम्य ऋषि ने अपार तप किया था। उस से प्रसन्न होकर भगवान ने दर्शन दिया, तब ऋषि ने प्रार्थना की।

रैम्य कृत (विष्णु) स्तोत्र।

नमः कमल नाभाय विष्णवे प्रभुः विष्णवे।
सुनन्दनाय सुभद्राय दुरा धर्षाय ते नमः॥ १॥
हिरण्य वाहवे तुभ्यं हिरण्याक्ष विमर्दिने।
नमो हिरण्य नाभाय हिरण्य चरू रूपिणे॥ २॥
हरिदश्वाय हरये हरि तांगाय हारिणे।
हय ग्रीवाय हेयाय पराय हय वाहवे॥ ३॥
अहंकार विमुक्ताय हेम संस्थाय हारिणे।
नमो हिरण्य गर्भाय हृषि केशाय ते नमः॥ ४॥
नमो हिरण्य गर्भाय हृषि केशाय ते नमः।
हविषे हवि राशाय बर्हिर्षः पत्राय ते नमः॥ ५॥
हे मागदाय बुद्धाय हेमाद्रि प्रकृतोकसै।
हिमाद्रि तनया धीश हृदय स्थाय हुंकृते॥ ६॥
हेया हेय विहीनाय सर्वाहि पतये नमः।
हृषिकेशाश्रम स्थाय हीरकाक्षायते नमः॥ ७॥
हस्ति मस्तक संस्थाय बहु हस्तायते नमः।

सहस्त्र हस्त रूपाय सहस्त्र कर मर्द्दिने ॥ ८ ॥
सहस्त्र रश्मि रूपाय फणा साहस्त्र रूपिणे ।
सहसा कृत कार्य्याय सहसा भक्ति भावने ॥ ९ ॥

भगवान ने प्रसन्न होकर कहा ! हे मुनि आपने आम्र के आश्रय होकर हमारा तप किया, इस लिये इस का नाम कुब्जाम्रक नामक क्षेत्र होगा। और मैं ऋषिकेश नाम से प्रकट होऊंगा। और इसका नाम ऋषिकेशाश्रम भी होगा। त्रेता युग में दशरथ राजकुमार भरत जी अपने ज्येष्ठ भ्राता सहित हमारे चतुर्थ वंश से प्रकट होंगे। कल्याण करता शङ्कर फिर हमारी स्थापना करेंगे, तब हम कलियुग में भरत नाम से पुकारे जायेंगे। जो लोग हमें प्रणाम करेंगे वे मुक्ति के भागी होंगे।

ऋषिकेश में अनेक धर्मशालायें हैं जिन में यात्रि ठहिर सकते हैं। परन्तु सब से प्रशंसनीय दो हैं, पहिला पंजाब सिन्धु क्षेत्र है जिस के विभाग दो हैं। एक में गुरु द्वारा (ग्रिथ-साहब) और दूसरे में श्री राधा कृष्ण जी का मन्दिर प्रधान कार्यालय है, यत्रियों को ठहिरने को सुन्दर जगह है, जिस में यात्रि प्रेम पूर्वक ठहिर सकते हैं, बर्तन बिस्तरा सब कुछ मिल सकता है, साधु सन्त अभ्यागत को भोजन भी मिल सकता है, पाकिस्तान बन जाने से इस की आर्थिक अवस्था पहिले जैसी नहीं है।

दूसरा १०८ श्री बाबा काली कमली वाले का पञ्चायती क्षेत्र, इसे कौन हिन्दु नहीं जानता, ये अपने ढङ्ग की अनोखी संस्था है, इस क्षेत्र में हजारों यात्रि ठहिर सकते हैं। मोटर से उतरते ही आप को बाबा जी के कर्मचारी मिल जायेंगे। आप

के देखते ही देखते सब सामान जुट जावेगा। बाबा जी का असली नाम श्री १०८ स्वामी विशुद्धानन्द जी······है। आप उन त्यागी महात्माओं में से हैं। जिन के विषय में सन्त मलूकदास जी कहते हैं।

सोच समझ कर देख पियारे,
आशिक होकर सोना क्या।
जिन अखियों ने नींद तजी,
तकिया और बिछौना क्या।
रूखा सूखा राम का टुकड़ा,
चिकना और सलोना क्या।
कहते 'मलूक' प्रेम के मार्ग,
शीश दिया फिर रोना क्या॥

पैसा पास न होते हुए भी आप का मन सन्तों के दुखों को देख कर पसीज गया। बद्रीनाथ की यात्रा जो आपने की वह सम्वत् १९४१ विक्रमी था उस समय यात्रा के विकट दुखों से आपके हृदय में वेदना उत्पन्न हुई। आपने प्रतिज्ञा कर ली—(नारायण) यदि मैं आपका भक्त हूँ तो उत्तरा खण्ड के कष्टों को सुगम करूंगा। हम जिस समय की बात करते हैं। उस समय ऋषिकेश ऐसा नहीं था। और उस समय श्री बद्रीनाथ की यात्रा करना लोहे के चने चबाना था,

बस देरी क्या थी आप एक काली कमली में कलकत्ता चले गये। मारवाडी समाज में धनाढ्य कुबेर सेवकों को अपने

उपदेश से परमार्थ की तरफ लगाया। सेठ सूरजमल से लक्ष्मण झूला बनवाया। जो २८४ फीट लम्बा था जिसे सं० १६२४ में गङ्गा जी बहा कर ले गई। उस बहती में ऋषिकेश के बहुत आश्रम, सन्त महात्मा बह गये।

पश्चात उन्हीं के पुत्र राय बहादुर जी ने बनवाया। सन् १६२६ में। अपने पूज्य पिता जी की कीर्ति को अमर कर दिया। अब ये पहिले से बड़ा है। इस की बम्बाई ४५० फीट है और अनेक दानी महाजनों की सहयता से अन्न क्षेत्र खुला है। उस समय त्यागी महात्मा तितक्षु तपस्वी रहते थे। उन को भोजन का कष्ट होता था। श्री गङ्गोत्री-जमनोत्री-केदारनाथ-बद्रीनाथ आदि तीर्थों पर धर्मशाला, सदाव्रत, प्याऊ आदि शुभ कार्य हुए जो अब तक चालू हैं। बाबा जी को काली कमली ही पशमीना थी। वह इस को कभी अपने तन से अलग नहीं करते करते थे। इस लिये इनका नाम बाबा काली कमली वाला पड गया। जनता इसी नाम से पुकारने लगी। आप का काल प्रकोप से सम्वत १६५३ विक्रमी में कैलाश वास हो गया। आप का रचित ग्रन्थ "पक्ष पात रहित अनुभव प्रकाश" एक सुन्दर जो श्री वेन्कटेश्वर स्टीम प्रेस बम्बई में छपा है। पश्चात् आप के उत्तराधिकारी श्री रामनाथ जी महाराज ने संस्था के नाम को सम्भाला। पूज्य बाबा जी ने अपना कोई शिष्य न बना कर गद्दी का भार इन्हें सौंपा। केवल परमार्थ के लिये कार्यालय को एक कमेटी के सुपुर्द कर दिया था। जो अब तक प्रबन्ध, कमेटी करती आ रही है।

बाबा रामनाथ जी को सच्ची लगन थी। और स्वामी बिशुद्धानन्द जी का आशीर्वाद था उनके आत्मिक बल और अनेक पुरुषों की सहायता से आपने क्षेत्र की अच्छी वृद्धि की संवत् १९८२ विक्रमी में आपका भी कैलाश वास हो गया। आप के पश्चात श्री मान बाबा मनिराम जी ने काम चलाया। आप के समय में भी वृद्धि हुई। हरिद्वार रोड़ पर राम नगर बना कर श्री रामनाथ के नाम को अमर करना चाहा परन्तु दैव को स्वीकार न था। आप का भी देहान्त हो गया। कार्य को बाबा शङ्कर दास जी उदासीन (जो प्रथम ब्रांच में काम करते थे), ने सम्भाला। आप पुराने कार्यकर्ता थे आप को अनुभव था। परन्तु आप के कटु स्वभाव से भी घबरा गये अतएव आप को त्याग पत्र देना पड़ा। आप के पश्चात पं० मेघराज ने कार्य सम्भाला और इन्होंने भी एक वर्ष में त्याग पत्र दे दिया।

इस समय श्री मान पं० श्री दत्त जी महाराज हैं। आप के काल में क्षेत्र के लक्ष में त्रुटि हो रही है। और आप के कार्य से कुछ लोग सन्तुष्ट भी नहीं हैं जिन में वहां का साधु समाज भी है। इनका मकान कनखल में बङ्गाली (श्री रामकिशन सेवाश्रम) के पास श्री दत्त कुटी के नाम से प्रसिद्ध है। क्षेत्र की कमेटी कलकत्ता में है। ये संस्था मारवाड़ी समाज की है। हम उन के अधिकारियों से अपील करते हैं कि वह कैलाश वासी बाबा जी के लगाये पेड़ को सूकने न दें।

सुखी बसो मसकीनीया, आप निवार तले।
बड़े २ अहंकारीया, "नानक" गर्व गले॥

इस नास्तिक युग में इस क्षेत्र से साधु सन्त यात्रियों को बड़ी सहायता मिलती है। महात्मा दीन लोगों को धन मिलता है। और जो अपने हाथ बना कर खाते हैं उन को सीधा मिलता है। श्री बद्री केदार, गङ्गोत्री जमनोत्री जाने वाले साधु सन्त ब्राह्मणों को सदाव्रत के लिये चिट्ठियां मिलती हैं। इस क्षेत्र की तरफ से ५७ सदाव्रत, १२ से भी अधिक औषधालय, ६५ से भी अधिक धर्मशाला ४२ से भी अधिक प्याऊ हैं पांच गौ शाला ३ पाठशाला तथा आयुर्वेद कालेज है। एक आयुर्वेदिक औषध निर्माण सम्मत्ति है क्षेत्र की चिट्ठी पास में होने से मार्ग में रहने की सुविधा मिलती है।

* यहां के तीर्थ *

दक्षिण की तरफ त्रिवेणी घाट है। यहां सुन्दर वट के वृक्ष हैं। जिनके नीचे महात्मओं की कुटि बनी हैं। अब ये घाट पक्का बन गया है। इसी स्थान से पश्चिम की ओर अग्नि कुण्ड है। इसे राम कुण्ड भी कहते हैं, यहां पर प्रथम स्नान करके बाद में त्रिवेणी का स्नान होता है। कहते हैं किसी ऋषि ने यहां गङ्गा-जमुना सरस्वती तीन देवियों का प्रत्यक्ष दर्शन किया। उन के प्रसन्न होने पर ऋषि ने कहा यदि आप मेरे पर प्रसन्न हैं तो सदा यहां निवास करो। इस स्थान पर नहाने वाले को प्रयाग त्रिवेणी स्नान का फल मिले। तीनों देवियों ने कहा, ऐसा ही होगा। तब से भक्त गण इसे त्रिवेणी घाट से पुकारते हैं।

कुण्ड के ऊपर श्री राम जी का मन्दिर और रामेश्वर जी का मन्दिर है। पीछे लौट कर चौक के पास बाचनालय। उस के

पास डाक घर है आगे उतार पर श्री निर्मल आश्रम है। और दक्षिण की ओर दण्डी स्वामी आश्रम है। इस के पास ही कन-खल के प्रसिद्ध चेतन देव जी अवधूत का आश्रम है। शाम को साधु सन्तों को मधूकरी मिलती है। पीछे बांयी ओर गङ्गा के श्री मनोकामना सिद्ध हनुमान जी का मन्दिर है। आप अवश्य यहां आकर दर्शन कीजिये। यहां के महन्त श्री मान १०८ उड़िया बाबा जी हैं। जो स्वतन्त्रता के युद्ध में जेल यात्रा भी कर चुके हैं। आप योग महात्मा सदाचारी मादक पदार्थों के विरोधी हैं आप प्रत्येक यात्री को कुछ न कुछ उपदेश देते हैं। मूर्ति हनु-मान जी की विशाल है। जो अपने पांव खड़ी हैं बिना आधार के। यहां गङ्गा जी पर्वत के नीचे कुण्डला कार बहती हैं और वसुधारा के नाम से पुकारी जाती है। पास ही में चन्द्रेश्वर महादेव का मन्दिर है। गङ्ग जी के दर्शन अद्भूत हैं।

पंजाब सिंध क्षेत्र के पास सीधे लश्चम को श्री १०८ पूज्य पाद स्वामी राघवा चार्य जी का श्री रघुनाथ जी का मन्दिर है जो ऊपर छत पर है। और दर्शनीनय है। मूर्तियां अपनी ओर खींचती हैं। लौट कर बड़ी सड़क पर आ जाइये। चन्द्र भागा नदी का पुल पार कर भगवान धनवन्तरी जीं का मन्दिर है। और पास में काल भैरों के दर्शन हैं। आगे श्री नैपाली बाला का अन्न क्षेत्र है। आगे दाहिनी ओर पुलिया के पास सुन्दर पानी के झरने हैं। आगे पिञ्जरा पोल और कबीर पन्थियों का आश्रम है। चन्द्र भागा नदी की दूसरी शाखा पार करके आप को टीहरी गढ़वाल का दफ्तर मिलेगा, यहीं पर कुली रजिस्टर्ड होते

हैं, आप को याद रहे श्रावण भाद्रपद में चन्द्र भागां नदी का बहाव तेज होता है। इस लिये अकेले पार करने की हिम्मत न कीजिये। पहाड़ी लोग पार करने को खड़े होते हैं, उन्हीं के सहारे पार होइये।

यहां पर कुछ दुकानें हैं बायें नरेन्द्र नगर को सड़क जाती है. चार कदम पर आपको बायें हाथ कैलाश आश्रम मिलेगा। आप सीढ़ियों द्वारा ऊपर चढ़ जाइये, स्वामी श्री १०८ धन राज गिरी जी स्थापित हैं, श्री चन्द्र शेखर महादेव जी का मन्दिर और जगत गुरु आद्य शंकराचार्य जी के चार शिष्यों सहित दर्शन हैं, यहां उच्च कोटि के सन्यासी विद्वानों के दर्शन होते हैं. दीवारों पर वेद मन्त्रों के श्लोक हैं। जो पढ़ने से मन को शान्ति मिलती है।

अब आप को नीचे उतर कर अपना रास्ता लेना चाहिये गङ्गा किनारे २ आपकी सड़क जा रही है। शत्रुघन जी का मन्दिर आ गया। और कुछ दुकानें हैं, पुलिस चौकी है इसी को मुनि की रेती कहते हैं। यहां स्वामी रामतीर्थ वचनालय और स्वामी शिवानन्द जी का आश्रम है। आप की ओर से श्री विश्व नाथ जी का मन्दिर है। आप एक माने हुए महात्मा हैं। यहां से ही गङ्गा पार स्वर्गाश्रम गीता भवन को नाव जाती है। पार आने जाने का कुछ भी भाडा नही लिया जाता। भक्तराज स्वनाम धन्य जय दयाल जी गोयेंद का मालिक गीता प्रेस गोरखपुर वालों का विचार है कि श्री गङ्गा जी पर यहां एक लटकन पुल बन जाय। लगभग १२०००) बारह हजार रुपया

जमा हो गया है। यदि यह काम हो गया तो यात्रियों की कठिनाई मिट जायगी। अब आप ऊपर की सड़क लीजिये जो लक्ष्मण झूले को गई है। लक्ष्मण झूला यहां से १॥ मील है। कुछ चढ़ाई के बाद आप को दुकानें मिलेगी। यहां से मोटर सड़क अलग हो गई है। आप ढलाई पर आवेंगे, नीचे सीढ़ी उतर कर लक्ष्मण जी का मन्दिर आयेगा। मन्दिर का दर्शन करें श्री लक्ष्मेश्वर महादेव जी का मन्दिर है। मेघनाथ के मारने से लक्ष्मण जी को ब्रह्म हत्या दोष लगा उस के पाप को नाश करने के लिये शिव पूजन किया था। यह मन्दिर महाराज रणरणवीर सिंह जम्बू काश्मीर ने पनवाया था। (लक्ष्मण) जी कुछ काल शिव पूजन और कुछ समय गङ्गा किनारे तप और कुछ समय गङ्गा जी पर झूला डाल कर झूलते (तप करते) थे। मार्ग में आप को दायें हाथ मार्ग ढाल में जाता था। वह शेष धारा तीर्थ को जाता है। इसी स्थान पर लक्ष्मण जी एकान्त सेवन करते थे।

आगे चल कर आप को ध्रुव भक्त का मन्दिर निचाई पर मिलेगा। उत्तम भाई की सहायता को राक्षसों का बिध्वंश किया था। उस के पाप निवारण के लिये तप किया था। बाबा जी की धर्मशाला प्याऊ सदाव्रत है। अब आप को पास ही सामने लक्ष्मण झूला दीखेगा। पुल के नीचे कोई स्तम्भ नहीं। इस की कारीगरी को देख कर आप मुग्ध हो जावेंगे। और आप पार हो कर मुंह में अंगुली डालेंगे। यहीं पर घास का झूला था जिस पर लक्ष्मण जी झूलते थे। इसी से इस स्थान

का नाम लक्ष्मण झूला है। झूले को पार करने में जब आप के साथ बन्दर चलते है तब बड़ा कतुहल होता है। पुल के पार दो सड़कें हैं। एक बाईं ओर, [redacted] बद्री विशाल को जाती है और दूसरी स्वर्गाश्रम गीता भवन नीलकण्ठ को। यहाँ अनेक मन्दिर बने हैं काठिया बाबा फलाहारी बाबा के आश्रम हैं। महारानी टिकारी का सुन्दर मन्दिर है। इन के दर्शन कीजिये। गङ्गा जी पास ही बहती हैं। महारानी का नाम श्री मती विद्यावती है। आप एक उत्तम आदर्श युक्त विदुषि महिला हैं। आप का समय भजन पुजा पाठ में ही जाता है। पास ही में आप का निवास स्थान है।

सन्मुख एक और मन्दिर के दर्शन हैं। आगे चल कर कुछ नई दुकानें हैं। और पञ्च मुखी श्री हनुमान जी के दर्शन हैं। सब प्रकार का खान पान का सामान मिल जाता है, मार्ग में गीता प्रेस गोरखपुर की ओर से कई स्थानों पर पुलिया बन गई हैं। स्वामी आत्म प्रकाश जी बाबा काली कमली वाले के कृपा पात्र थे। आपने क्षेत्र से १६६० सम्वत विक्रमी में पृथक होकर जङ्गल में मङ्गल कर दिया। इस आश्रम को देख कर किस का हृदय गद् २ न होगा। शोक है कि श्री आत्म प्रकाश के देहान्त के पश्चात यहां की दशा डामाडोल हो गई? गुरु भाइयों के झगड़ों से आश्रम की लाखों रुपयों की सम्पति नष्ट हो गई है।

इस समय इस का सञ्चालक एक ट्रस्ट करता है। मुख्य-अधिष्ठाता श्री १०८ गो स्वामी गणेष दत्त जी हैं। गङ्गा किनारे अनेक कुटिया महात्माओं की बनी हैं। सन्तों के दर्शन मात्र

से जीव का कल्याण हो जाता है।

कामहि नारि प्यार जिम, लोभहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर, प्रिय लागहु मोहि राम॥

ऐसी धारणा के भी महात्मा पाये जाते हैं। दिवस रैन माया के प्रसङ्ग में फंसे हुए। प्रत्येक में अवगुण देखने वाले को प्राप्त नहीं होते, संसार में जितने साधन किये जाते हैं, वह केवल भक्ति प्राप्ति के हेतु। इसी हेतु को गोस्वामी जी ने और कहा है।

तीर्थाटन साधन समुदाई, जोग विराग ज्ञान निपुनाई॥
नाना कर्म-धर्म-बृत नाना, संयम प्रेम ज्ञान विज्ञाना॥
भूत दया गुरु द्विज सेवकाई, विद्या-विनय-विवेक बड़ाई॥
जहांलग साधन वेद बखानी, सब कर फल हरि भक्ति भवानी॥

अब आप को दो रास्ते मिलेंगे। एक पगडण्डी जो गङ्गा जी के किनारे जहां सन्तों की कुटिया बनी हैं, दूसरी सीधी सड़क जो कार्यालय को गई है। दोनों ओर आमों की सघन छाया है। जो दानी भक्तों द्वारा लगवाये हैं। कुछ दूरी पर ही आप को कार्यालय मिल जाएगा। अन्न क्षेत्र जहां साधु सन्तों को भोजन मिलता है। रसायनशाला और रहने को अनेक धर्मशाला हैं। कुछ सीढ़ियें उतर कर आप को स्वामी आत्म-प्रकाश जी की समाधि मिलेगी।

आगे दुकान खान पान की हैं। पास ही में गङ्गा घाट श्री रामेश्वर जी का मन्दिर है, बायें हाथ को गङ्गा किनारे चल कर कुछ दूरी पर श्री गीता भवन है। सुन्दर विशाल घाट और

मनोहर भवन है, गीता प्रेस की पुस्तकें और सुन्दर चित्र यहां मिलते हैं गीता प्रेस गोरखपुर को कौन नहीं जानता। जिसने 'कल्याण' पत्र द्वारा। जागृती पैदा कर दी श्री राम चरित्र मानस समस्त दीवारों पर लिखा है और ऊपर सङ्गमर मर पर गीता के पूरे अठारह अध्याय लिखे हैं, सन्तों के अनमोल दोहों ने तो और भी स्वर्ण में सुगन्धि डाल दी है,

गीता भवन के पास श्री कृष्णानन्द आश्रम है। इसी के पास श्री १०८ पूज्य पाद स्वामी नारदानन्द जी महाराज जी नीम सार (नैमिषारण्य तीर्थ) निवासी के गुरु भाई स्वामी सुकदेवा नन्द जी का श्री पमरार्थ निकेतन आश्रम है। भगवान शङ्कर के दर्शन श्री सीताराम श्री राधाकृष्ण की झांकी देखने योग्य हैं। प्रातः स्मर्णीय शङ्कराचार्य आदि महात्माओं के त्त्रि हिन्दी और संस्कृत में उन के अनमोल वाक्य लिखे हैं, साथ ही महाभारत श्री मदद्भागवत के चरित्रों के आधार पर, सुन्दर २ चित्र अङ्कित किये गये हैं. रामावतार के चित्रों को देख कर कुछ काल के लिये मनुष्य अपने को भूल कर देव लोक का अनुभव करता है, अन्दर सत्सङ्ग भवन भी अद्भुत है इस के संस्थापक श्री १००८ श्री प्रातः समर्णीय बैकुण्ठ वासी एक रसानन्द जी महाराज हैं। प्रत्येक यात्री को यहां दर्शन करना चाहिये।

उस के आगे १ मील पर वट वृक्ष है, जहां भक्त वर जयदयाल गोयिन्द का सत्सङ्ग होता है, अब आप की इच्छा है नाव द्वारा ऋषिकेश जाओ, या पैदल लक्ष्मण झूला।

भजन नं० (८)

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो ॥ टेक ॥
समदर्शी है नाम तुम्हारो, चाहो तो पार करो ॥ १ ॥
इक नदिया इक नीर कहावत, मैलो नीर भरो ।
जब दोनों मिलकर बरन भये, सुरसरि नाम परो ॥२॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो ।
पारस गुण अवगुण नहीं देखत, कञ्चन करत खरो ॥३॥
यह माया भ्रम जाल कहावे, सूरदास सगरो ।
अबकी बार मोहि पार उतारो, नहीं प्रण जातटरो ॥४॥

हिन्दी का आदर करो

भजन नं० (९)

हिन्दी है भाषा हमारी, स्वतन्त्र देश की प्यारी ॥ टेक ॥
प्रजा तन्त्र की यही है भाषा, हिन्दु मात्रको इसकी आशा ।
फूले फले हमारी स्वतन्त्र ॥ १ ॥
ऋषियों ने इसको अपनाया, सूर कवि ने इसको गाया ।
"तुलसी" की गाथा नियारी, स्वतन्त्र० ॥ २ ॥
"नानकदेव" की सुन्दर वानी, भक्त कबीर ने राह पिछानी ।
नरसी हुए अगारी, स्वतन्त्र ॥ ३ ॥

भारतेन्दु ने इसे उठाया, लोक मान्य ने इसे जगाया।
घर घर की शोभा नियारी, स्वतन्त्र० ॥ ४ ॥
'बापू' जी ने पुष्प चढ़ाये, साहित्य सम्मेलन मङ्गल गाये।
नागरी सभा अगारी, स्वतन्त्र० ॥ ५ ॥
गंग जमुन के इस में गाने, कोटिन इस पर भये दिवाने।
भारत के नरनारी, स्वतन्त्र० ॥ ६ ॥
कांग्रेस अमर कीर्ति गाई, आर्य सनातन-हिन्दु भाई।
'हिमकर' शोभा बढ़े तुम्हारी, स्वतन्त्र० ॥ ७ ॥

---

* चौथा प्रकरण *

❀ देव प्रयाग ❀

स्वर्गाश्रम से लगभग सात मील ऊपर नील कंठ महादेव है मार्ग में सघन बन है। मनुष्य को अकेला नहीं जाना चाहिये। पांच मील की चढ़ाई पार करके दो मील उतार आता है, यह स्थान बहुत रमणीक और ठण्डा है, एकान्त स्थान होने से कभी कभी सन्त महात्मा भजन करने

आ जाते हैं। प्रेमी भक्त गणों को अवश्य दर्शन करना चाहिये। पास में सुन्दर पहाड़ी जल का नाला है श्रावण में यात्रि अधिक जाते हैं। लछमण झूले से पैदल जाने वाले यात्रि श्री बद्रीनाथ को गङ्गा के किनारे २ रास्ते जाते हैं। दो मील गरुड़ चट्टी स्थान है। मार्ग सीधा साफ और गरुड़ जी का मन्दिर है सुन्दर बगीचा है। पहाड़ी झरने का जल है जो मन्दिर के चारों ओर तालाब में बहता है। यात्री को इस का जल पीना नहीं चाहिये दाल इस में कभी नहीं गलेगी। आप को प्याऊ से या गङ्गा जी से जल लाना चाहिये। बाबा जी की धर्मशाला प्याऊ हैं। श्री बद्री धाम जाने वाले को यात्रा सिद्ध के लिये गरुड़ भगवान् का पूजन करना चाहिये। भगवान के वाहन का पूजन करने से यात्रा में बल मिलता है।

एक पैदल यात्रि



मार्ग में अनेक यात्री आप को जय बद्री विशाल की बोलते हुए मिलेंगे उन का उत्साह और दौड़ से ऐसा प्रतीत होगा मानों कङ्गाल धन लूटने जा रहे हैं। दो मील आगे फूल चट्टी है जो नीचे ढलान पर है। यहां श्री गङ्गा जी और हेम नदी का सङ्गम है। यहां एक ब्रह्मचारी जी ने

आश्रम बनवाया था। जो आज बड़ी शोभा में है। अनेक कुटी बन गई हैं। साधु सन्तों का स्वागत होता है। सत्य नारायण जी के मन्दिर से लेकर यहां तक कुब्जावृत तीर्थ है। इस भूमि में प्राण त्यागने वाले विष्णु लोक को जाते हैं। यहां से गङ्गा जी उत्तर की ओर चली गई हैं। और आपको हेम नदी के किनारे जाना होगा। सड़क बहुत अच्छी है पेड़ों की छाया है। मार्ग में बन्दरों की कूद फांद आप के मन को हर लेगी, इधर नाग फणी के पेड़ बहुत मिलेंगे और भी वृक्षों से लदा बन है। एक मील आगे एक और फूल चट्टी मिलेगी। यह स्थान रहने को ठीक नहीं है। दो मील आगे गूलर चट्टी नहीं है। पानी का झरना चलता है। दुकानें भी अच्छी हैं। पेड़ों की छाया है हमारी सम्मति में आप यहां ही विश्राम कीजिये। आगे हेम नदी का पुल पार करके महादेव सैंण चट्टी है। आप किनारे २ मोहन चट्टी पहुँचिये। रहने को स्थान अच्छा है जल का आराम है, आप रात्रि में यहां रहिये, प्रातः काल ठण्डे २ श्री गणेश करें। क्योंकि अब आप को चढ़ाई चढ़नी पड़ेगी। यहां बाबा जी की धर्मशाला सदाव्रत है।

लगभग १॥ मील बैंजनी मुकाम है। सड़क चक्कर काट कर जाती है आप को धीरे धीरे चलना चाहिये। कुछ कदम चल कर लाठी के सहारे खड़े हो जाना चाहिये। मुंह में लौंग रख कर चूसना चाहिये। इस से श्वांस नहीं फूलता। पानी का झरना और दुकानें हैं। आगे १॥ मील पर बड़ी बैंजनी चट्टी है रास्ता चढ़ाई का है यहां अधिक दुकानें हैं। मध्याह्न करने को

बहुत अच्छी जगह है। इस पहाड़ में आम, जामुन, नींबू के पेड़ अधिक हैं। खाने को आवश्यक वस्तु मिल जाती हैं।

आप को जब चलना हो सवेरे दो घण्टा रात लेकर चलना चाहिये। सच पूछिये तो पहाड़ में चलने का इसी समय आनन्द आता है। आप यहां से चल कर ऊंची पहाड़ी पर पहुंचेंगे, यहां दूध की दुकाने हैं, हो सके तो पाव भर दूध गर्म पी लीजिये। थकान उतर जायेगी। इस से आगे कुछ कुण्ड चट्टी आती है। नीचे ढाल पर दुकाने हैं। यहां पानी ठण्डा और मीठा है। बैंजनी से यह चट्टी तीन मील है। अब यहां से मार्ग उतार का है दो मील पर बन्दर भेल चट्टी है। गङ्गा जी का किनारा है। रहने का स्थान सुन्दर और अच्छा है। ऊंची २ पहाड़ियों पर पहाडी गांव बसे हैं। इस से आगे तीन मील महादेव चट्टी है। यहां (८०) अस्सी सीढ़ियों पर चढ़ कर एक कमरे में महादेव और पार्वती जी की मूर्तियां रखी हैं। यह चट्टी २ भागों में बटी है। मार्ग में सडक चक्कर काट कर जाती है। कहीं २ तो ऐसा मार्ग आ जाता है जिस को देख कर दांतों तले अंगुली दबानी पडती है। यह स्थान दर्शनीय रहने को अच्छा है। मध्यान हो या प्रातः काल आप को हर समय जय बद्री विशाल की ध्वनि कानों में पड़ेगी। जिधर देखिये उधर आप को यात्रि गण बिस्तर बान्धते नजर आयेंगे। आप भी उठिये और हिम्मत बांध कर चल दें। पहाड़ों की सीनरी देखें कुछ चढ़ाई के बाद मार्ग सीधा है। चार मील आगे आप को सेमल चट्टी मिलेगी। भगवान के प्रेमी यात्रियों का समागम

होगा। प्रेम अजब चीज है।

प्रेम हरि को रूप है, वे हरि प्रेम स्वरूप।
एक हो दो में लखे, ज्यों सूरज में धूप ॥

जो लोग गृहस्थ और संसार के झगड़ों में फंसे हैं वे भगवान के पवित्र केदार खण्ड को नहीं जाना चाहते, ऐसों ने भारतवर्ष जैसी ऋषि भूमि में उत्पन्न होकर ही क्या किया। मित्रवर आइये ! अपने जीवन को सफल कीजिये, संसार के काम न कभी समाप्त हुए और न होंगे, और न कभी भविष्य में कभी वे आप की सहायता ही करेंगे। जिन के पीछे आप अनेक प्रकार के अनर्थ कर रहे हैं, वे सब के सब यहां ही धरे रह जायेंगे, महात्मा सूरदास ने क्या ही खूब कहा है—

भजन नं० (१०)

जा दिन मन पंछी उड़ जै हैं ॥ टेक ॥
ता दिन तेरे तन तरू वर के, सबै पात झर जै हैं ॥ १ ॥
घर के कहें वेग हि काढो, भूत भये कोऊ खै हैं ॥ २ ॥
जा प्रीतम सों प्रीत घनेरी, सोउ देख डरै हैं ॥ ३ ॥
कहां वह ताल कहां वह शोभा, देख धूल उडै हैं ॥ ४ ॥
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला, सुमर २ पछितै हैं ॥ ५ ॥
विन गोपाल नहीं कोई अपना, जस कीरत रहिजै हैं ॥६॥
सो तो "सूर" दुर्लभ देवन को, सत्संगत में पै हैं ॥ ७ ॥

आगे तीन मील कांडी चट्टी है रहने को स्थान अच्छा पीने को मधुर जल है। पेड़ों की सघन छाया है। पर दो मञ्जिला चट्टी है। दुकानें हस्पताल डाकखाना है। एक मील दूरी पर "खण्डा" नामक गांव है। आमों का बगीचा और दोनों ओर पानी का स्रोत है। बाबा जी की धर्मशाला श्री नारायण का मन्दिर है। यात्रा में कष्ट अवश्य होता है। पर प्रभु का नाम पद २ पर आता है। जिस में हरि स्मरण हो वह खुद भी सुख में बदल जाता है। कहा भी है—

मार्ग चट्टी

सुख के माथे सिल पड़ो, जो नाम प्रभु का जाय।
बलहारी उस दुःख को, जो पल २ नाम जपाय॥

यहां से एक मील दूरी पर 'भैरव ख्याल" चट्टी है। सुकदेव मुनि और गणेश जी के मन्दिर हैं। सड़क के इधर उधर रङ्ग बिरंगे फूल खिले हैं। तीन मील के उतार पर व्यास नदी का पुल आ जाता है, उसे पार कर के आप व्यास घाट पहुँच जायेंगे। यहां भागीरथी और व्यास नदी का सङ्गम है।

बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला, सदाव्रत डाक घर और
क्र प्रेम हरि को रूप है, वे हरि प्रेम पाराशर मुनि के
एक हो दो में लखे, ज्यों सूरज
होते थे। उस का
जो लोग गृहस्थ और संसार के झं में एक व्यास जो
भगवान के पवित्र केदार खण्ड को नहीं जान
व भारतवर्ष जैसी ऋषि भूमि में उत्पन्न होकर में भी आप के
क्र मित्रवर आइये ! अपने जीवन को सफल की ब में जाने वाली
क काम न कभी समाप्त हुए और न होंगे, और न सतलज) नदी
में कभी वे आप की सहायता ही करेंगे। जिन के नाथ) का भागा
हुआ मुख में प्रवेश कर
गया था जो समय पा कर योगीराज शुकदेव मुनि हुवे। व्यास
घाट से चल कर एक मील पर श्री राम मन्दिर है। वैष्णवों का
रमणीक स्थान है गङ्गा जी नीचे बहती हैं। दो मील आगे
छालरा नामक स्थान है। पानी का नल और कुछ दुकानें भी हैं।
आप जैसे २ आगे बढ़ेंगे आप को वैसे अद्भुत दृष्य दिखाई
देंगे।

इस मार्ग से सूर्य सम्मुख होता है। इस लिये यात्रि को
ठण्डे २ चलना चाहिये। यदि आप मोटर जा रहे हैं तो बात
न्यारी है। पहाडी दृष्य एक से एक बढ़ कर आयेंगे। पहाड़ी
लोगों के बसे हुए घर गगन से बातें करते हैं। हरे २ खेत पहाडों
की ढलान पर अजब शोभा पा रहे हैं। सुन्दर पत्थर के मकान
केलों के झाड़ उन का सादा जीवन बीते समय की याद दिलाता
है। दो मील आगे ऊपर चट्टी आती है। पानी का झरना आमों



श्रवणाञ्जलि पुटपेयं विरचितवान्भारताख्यममृतं यः
तमहमरागं कृष्णं द्वैपायनं वन्दे ॥

का बगीचा है। रहने को सुत्ताम स्थान है दो मील आगे सौड़ चट्टी है। यहां भी आमों के पेड हैं ठंडा जल मनोहर दुकानें हैं। यहां से दो मील देव प्रयाग प्रधान तीर्थ है।

यहां पर भी आप को हरिद्वार की भांति बद्रीनारायण जी के पण्डा मिल जाते हैं। यहा के पण्डा सात्विक प्रकृति के हैं। परन्तु समय ने इन को भी बदल दिया है, पण्डा लोग यहीं से नाम लिख लेते हैं कुछ तो हरिद्वार में ही नाम लिख लेते हैं। कुछ गुमाशता भी देते हैं कुछ बद्री धाम में पत्र भेज देते हैं, उन को वहां सञ्चालक सम्भाल लेता है यह यजमान की अच्छी सेवा करते हैं, उत्तरा खण्ड के दरिद्र लोग होते हैं। इन की रक्षा करना परमावश्यक है।

पं० हंसराज तुलसी राम जी हमारे पण्डा हैं, देव प्रयाग अच्छा कस्बा है और दो भागों में बसा है, अलक नन्दा के इस किनारे बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला, छोटा सा बाजार तार घर डाकखाना मोटर स्टेशन हस्पताल थाना है, पुल के पार पण्डा गणों की बस्ती और बाजार है गङ्गा जी के घाट हैं देव-प्रयाग की आबादी को देख कर कौतूहल होता है, ऊंचे नीचे बसे हुए घर बडी शोभा देते हैं, दूसरी तरफ भागीरथी और अलक नन्दा नदी का सङ्गम है दोनो ओर से बडी वेग से धारायें आकर मिलती हैं, मानो चिरकाल की दो बिछुडी हुई सखियां अपने तन मन की सुध बिसार कर मिल रही हों, नदियों का जो परस्पर संगम है, उस का दृश्य हम सन्मुख रखने में असमर्थ हैं, वह तो देखते ही बनता है, यात्रियों को यहां पर सिर

मुण्डन करना चाहिये, गङ्गा पूजन पितृ तिर्पण पिंड दान करना उचित है गङ्गा जी के किनारे २ गङ्गोत्री को मार्ग जाता है, ऊपर की बस्ती में श्री रघुनाथ जी का मन्दिर है, पास में और भी प्राचीन स्थान देखने योग्य हैं,

सङ्गम के पास वैताल शिला पर यात्रि श्राद्ध करते हैं, सङ्गम पर होशियारी से स्नान करना चाहिये। भगवान के मन्दिर में निम्न लिखित मन्त्रों से पूजन करना चाहिये।

देव देव रमाकान्त रामचन्द्र दया निधे।
क्रिया माणा मिमां पूजां ग्रहाण सुर विन्दत ॥ १ ॥

अर्थ—हे देवादि देव! लक्ष्मी नाथ आप कृपा के निधान हैं, हे देव! पूजित रामचन्द्र जी आप मेरी की हुई पूजा को ग्रहण करें॥ १ ॥

देव देव जगन्नाथ नमस्ते धरणी धर।
स्वासनं ते मया दत्तं गृहाण मुनि सेवित ॥ २ ॥

अर्थ—हे देवादि देव! धरणी धर जगन्नाथ मैं आप को सुन्दर आसन देता हूँ, ग्रहण कीजिए ॥ २ ॥

नारायण दया सिन्धो हिरण्याक्ष निसूदन।
पाद्य में तत् सुख स्पर्श्यं गृहाण त्वं मयार्पितम् ॥ ३ ॥

अर्थ—हे दया सागर नारायण! आपने हिरण्याक्ष का वध किया, जिसका स्पर्श करने से ही सुख प्रतीत हो, मैं ऐसा पाद्य आप को देता हूं, आप इसे ग्रहण करें ॥ ३ ॥

नमो नमस्ते गोविन्द वासुदेव जगत प्रभो।

जनार्दन रमाकान्त चार्घ्यं नः प्रति गृह्यताम् ॥ ४ ॥

अर्थ—हे वासुदेव गोविन्द ! धाम जगत के प्रभु हैं, हम आप को बार २ नमस्कार करते हैं। हे रमाकान्त जनार्दन हमारे अर्घ्य को ग्रहण कीजिये ॥ ४ ॥

भागीरथ्य मिदं तोयं कर्पूरादि सुवासितम् ।

आचम्यताँ जगन्नाथ मया दत्तं हि भक्तितः ॥ ५ ॥

अर्थ—हे जगन्नाथ ! कर्पूर आदि की सुगन्धित से भरा इस गङ्गा जल को मैं भक्ति भाव पूर्वक आप को अपर्ण करता हूं। आप आचमन ग्रहण करें ॥ ५ ॥

कंसा सुर निहन्ता त्वं सर्व तीर्थैः मया हृतम् ।

जलं मे तत्सुदिव्यं हि गृहाण स्नान हेतवे ॥ ६ ॥

अर्थ—हे कंसासुर के नाश करता ! मैं सब तीर्थों में से दिव्य जल लाया हूं, हे प्रभु ! आप इसे स्नान करने के लिये ग्रहण कीजिए ॥ ६ ॥

सूक्ष्मं दुकूल युगलं लोक लज्जा निवारकम् ।

मयार्पित मिदं देव गृहणीष्व त्वं दया निधे ॥ ७ ॥

अर्थ—जिन से लोक लज्जा का निवारण होता है, ऐसे दो वस्त्र आप के अर्पण करता हूं हे दया निधे ! आप ग्रहण करें ॥७॥

दामोदर नमस्तेऽस्तु त्राहि मां भव सागरात ।

ब्रह्म सूत्रं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ ८ ॥

अर्थ—हे दामोदर मैं आप को नमस्कार करता हूं। आप संसार

से मेरा उद्धार कीजिए, हे परमेश्वर आप ये दो ब्रह्म सूत्र दो दुकुल को ग्रहण करें ॥ ८ ॥

श्री खण्ड कुङ्कमं दिव्यं कस्तूरी रोचनान्वितम् ।
गन्ध गृहाण देवेश भक्त्या चैव मयार्पितम् ॥ ९ ॥

अर्थ—कुंकम कस्तूरी और गोरोचन आदि की सुगन्धि से सुवासित भक्ति भाव से पूर्ण मेरे अर्पण किये हुए इस दिव्य चन्दन को ग्रहण करो ॥ ६ ॥

अक्षतान्निर्मान्देव कुङ्कमेन च रञ्जितान् ।
गृहाण देव देवेश गोपी कान्त दर्पितान् ॥ १० ॥

अर्थ—हे देव ! कुंकम के रंजित किये हुए अक्षतों को हे गोपी नाथ वेवाधि देव ग्रहण कीजिए ॥ १० ॥

पुष्पाणि देव देवेश जाति कुन्द मुखानिच ।
गृहाण भक्ति तो देव तुभ्यं दत्तानि हे प्रभु ॥ ११ ॥

अर्थ—हे भगबान मैं जाति और कुन्द आदि के पुष्पों को भक्ति भाव से आप के अर्पण करता हूं। हे देव आप इन्हें ग्रहण करे ॥ ११ ॥

धूप दिव्यं रमाकान्त जटा गुग्गुल संयुतम् ।
आघ्रेयं सर्व देवानां ग्रहयता त्वं मयार्पितम् ॥ १२ ॥

अर्थ—हे रमाकन्त जटा गुग्गुल सहित समस्त देवाताओं के सूंघने योग मेरी अर्पण की हुई धूप को ग्रहण करें ॥ १२ ॥

दीपं कर्पूरं संयुक्तं दीपं त्रैलोक्य दीपकम् ।

गृहाण मङ्गलं देव भक्त्या तुभ्यँ मयार्पितम् ॥ १३ ॥

अर्थ—प्रजवित्त कपूर से संयुक्त त्रिलोकी को प्रकाशित करने वाले मङ्गल स्वरूप दीपक को भक्ति पूर्वक मैं आप के अर्पण करता हूँ ॥ १३ ॥

अन्नं षड्रसं युक्तं नवना वस्तु मयं शुभम् ।

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्ति स्त्व्यस्तु मे सदा ॥ १४ ॥

अर्थ—हे देव छः प्रकार के रसों से संयुक्त अनेक वस्तु स्वरूप सुद्ध नैवेद्य को आप ग्रहण करिये, जिस से मेरी भक्ति सदैव आप में बनी रहे ॥ १४ ॥

हिरण्यं चैव रौप्यँ च रत्नानां भिचयँ तथा ।

दक्षिणात्वेन गृहणीष्व भक्त्या वै प्रति पादितम् ॥ १५॥

अर्थ—भक्ति सहित सवर्ण, चांदी और रत्नों के समुदाय दक्षिणा स्वरूप से आप के अर्पण करता हूँ, । इन्हें आप ग्रहण करें ॥ १५ ॥

नमस्ते नाथ भगवन्नाग वल्ली दलैर्युतम् ।

कर्पूरादि समा युक्तँ ताम्बूलँ प्रति गृह्यताम् ॥ १६ ॥

अर्थ—हे भगवान् ! त्रिलोकी नाथ आप को नमस्कार है । नागर बेलके पान जो कर्पूर आदि से युक्त हैं आप ग्रहण करें ।१६।

नमोऽस्तु राम नाथाय साष्टाँङ्ग तु मया कृतम ।

प्रसीद भगवांन् विष्णो माँ समुद्धर माध्व ॥ १७ ॥

अर्थ—हे रमानाथ मैं आप को साष्टांग प्रणाम करता हूँ। हे विष्णु भगवान् प्रसन्न होकर मेरा उद्धार करो ॥ १७ ॥

इस प्रकार पूजन करके विश्राम करना चाहिये। यहां से सात मील पश्चिम को दशरथी पर्वत है, जिस पर महाराज दशरथ जी ने तप किया था। देव प्रयाग में ब्रह्मकुण्ड, बेताल कुण्ड सूर्य कुण्ड, बेताल शिला आदि तीर्थ हैं। गङ्गोत्री-यमुनोत्री जाने वालों को गङ्गा जी (पुल) पार हो कर जाना चाहिये। अधिक विस्तार दसवें प्रकरण में पढ़िये।



"काँडी वाला" अपनी पीठ पर एक वृद्धा को काँडी पर ले जा रहा है।

भागीरथी को त्याग कर अब आप को अलख नन्दा के किनारे चलना चाहिये। यहां से मोटर कीर्ति नगर को जाती है। टिहरी यहां से १४ मील हरिद्वार ५६ मील केदारनाथ ६३ मील गङ्गोत्री, १३५ मील है। यह उत्तरा खण्ड का प्रसिद्ध तीर्थ है।

* पांचवां प्रकरण *

❀ रुद्र प्रयाग को ❀

अलक नन्दा के किनारे २ सड़कें जाती हैं। एक मील पर श्री सत्य नारायण जी का मन्दिर है। मार्ग सुहावना और दो मील पर विद्या कोटि और तीन मील पर सीता कोटि है। अढ़ाई मील पर रानी बाग है। यहां डाक घर, तार घर, पानी का नल रहने को स्थान बहुत उत्तम हैं साढ़े तीन मील रामपुर की चट्टी है। झरने का जल अच्छा और मकान सुन्दर हैं।

मनुष्य को यात्रा में साथी अवश्य लेना चाहिये। पर ऐसा साथी न हो जो विपत्ति में छोड़ कर चला जाये।

रहिमन प्रीति न कीजिये, जस खीरा ने कीन।
ऊपर से तो दिल मिला, भीतर फाँकें तीन॥
यात्रा में पग २ पर प्रभु का ध्यान करो।

सवैया नं० (११)

दीन दयालु सुनी जब ते तब ते कुछ ऐसी मन में बसी है।
तेरो कहाय के जाऊँ कहाँ, तुम्हारे हित की पट खैंच कसी है॥
तेरो ही आसरो एक 'मलूक', नहीं प्रभु सों कुछ दूजी बसी है।
एहि मुरारि पुकारि करों, अब मेरी हँसी नहीं तेरी हँसी है॥

रामपुर से ऊपर ब्रह्मचारी जी महाराज की पाठशाला है तीन मील पर अरकुणी है, जहां आमों का सघन बाग है। सुन्दर छाया और पानी की प्याऊ है, आध मील की दूरी पर आमों का बगीचा पानी का झरना है, डेढ मील पर विल्व केदार (भोलेश्वर महादेव हैं) यहां बिल्व पत्र चढ़ाने का महात्म है। स्थान रमणीक प्राचीन। बिल्व गङ्गा (खाण्डव का संगम है, दूसरी ओर इन्द्र कील पर्वत है, बायें हाथ सन्मुख महेन्द्राचल पर्वत है, जहा आज भी ऋषि मुनि तप करते हैं।

महाभारत में कथा आती है कि अर्जुन की परीक्षा लेने को सदा शिव ने भील का रूप धारण किया, अर्जुन से युद्ध हुआ, कुन्ती नन्दन किसी प्रकार से भी परास्त न कर सका, तब उस ने समझा कि यह अवश्य कोई दिव्य ज्योति है। आंखें बन्द कर सोचने लगा और भगवान श्याम सुन्दर का

ध्यान किया। पश्चात आखें खोल कर क्या देखता है कि जो माला पार्थिव पूजा में शङ्कर पर चढ़ाई थी वह भील के गले में है, बस फिर क्या था अर्जुन चरणों में गिर गया। भगवान भूतपति विश्वनाथ शङ्कर प्रकट हो गये, यह वह ही स्थान है।

आगे तीन मील पर श्री नगर है। जो किसी समय गढ़वाल प्रदेश की राजधानी थी, एक मील रास्ते में अलकनन्दा के ऊपर श्री यन्त्र है। जो आज कल गङ्गा जी में है। यहीं पर श्री शङ्कर मठ है ब्रह्म कुण्ड श्री लक्ष्मी नारायण के दिव्य दर्शन हैं। रास्ते से बांये हाथ खेतों में से मार्ग जाता है। यहीं पर श्री कमलेश्वर महादेव है। कहते हैं यहीं पर विष्णु भगवान ने अपना नेत्र निकाल कर शङ्कर पर चढ़ाया था। सदा शिव की पूजा में कमला पति एक सहस्र कमल पुष्प चढ़ाने को ले कर बैठे। सदा शिव ने परीक्षा के निमित एक पुष्प छिपा लिया। अब विष्णु इस कमी को पूरी कैसे करें। अन्त में विचार आया। जब हमें भक्त गण कमल नयन कहते हैं तो यही क्यों न निकाल कर चढ़ा दूं। रमा पति जब ऐसा किया तब तत्काल प्रगट हो गये।

यह स्थान श्री नगर उतराई पर सुन्दर मैदान है। चारों ओर ऊंचे २ पर्वत और बीच में यह सुन्दर नगरी है। बाजार चौड़ा तार घर, डाक घर, थाना, मोटर स्टेशन, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है सदाव्रत है। आवश्यक सब सामान बाजार से मिल जाता है यहां पर बिच्छू बहुत होते हैं। सावधानी से रहना चाहिये।

भजन नं०(१२)

प्रीतम जरन लेहु मन माहीं ॥ टेक)
अपने सुख सों सब जग बान्ध्यो, कोऊ काऊ को नाहीं ॥
सुख में आन बहुत मिल बैठत, रहत चहुँ दिश घेरे ।
विपत पड़ी सबही सँग त्यागत, कोऊ न आवत नेरे ॥ २ ॥
घर की नारी बहुत हित जासों, रहत सदा सङ्ग लागी ।
जब ही हँस तजी ये काया, प्रेत २ कर भागी ॥ ३ ॥
यह विधि को व्यवहार बनो है, जासों नेह लगायो ।
अन्त बार 'नानक' बिन हरि जी, कोऊ काम न आयो ॥४॥

धनवान घोड़े की सवारी पर



पांच मील सुक-रता चट्टी है। गङ्गा जी पास हैं आमों का बगीचा है। यहां से भट्टी सेरा ३॥ मील है रास्ता बहुत अच्छा है और रमणीक है पास में नदी चलती है। बाबा जी की धर्मशाला और दुकानें हैं

अब आप को चढ़ाई शुरु होगी। चील आदि के लम्बे पेड़ गगन से बातें करते हैं, एक मील छाती खाल बङ्गला है। आगे ढाई मील पर सांकरा है। आगे डेढ मील चढ़ाई और इतनी ही उतराई पर कांटा चट्टी है। यह स्थान बहुत रमणीक है। सरकार की ओर से प्रत्येक स्थान पर भङ्गी रहते हैं। सफाई का अच्छा ध्यान रखा जाता है। फिर भी यात्रि बहुत गन्दगी फैला देते हैं। इन को सफाई का जरा भी ध्यान नहीं। बहुत ही अच्छा हो यदि मित्रगण मातायें पवित्र भूमि का ध्यान रख कर आचार विचार से रहा करें।

मार्ग में अनेक पर्वत मालाओं के दर्शन। और मारवाड़ उड़ीसा महाराष्ट्र, सिन्ध-पञ्जाब बङ्गाल आदि देशों के यात्रि जय बद्री विशाल की कहते हुए आप को दिखाई देंगे। साढ़े ३॥ मील गुलाब राय चट्टी है। मार्ग चढ़ाव उतार का है, पर्वत माला यहां की गजब ढाती हैं। सन्मुख हिमालय के शिखर कैलाश यात्रियों को आशीर्वाद प्रदान करते हैं। अलक नन्दा बहुत ही संकीर्ण हो कर यहां पाताल में बहती हैं, स्थान और जल इस चट्टी का बहुत अच्छा है। यहीं से रुद्र प्रयाग एक मील पर है। इस को सीधी भाषा में शिव प्रयाग कहते हैं। अलक नन्दा और मन्दाकिनी नदी का संगम है। भगवान् शङ्कर के दर्शन हैं। भगवान शङ्कर ने नारद को गान विद्या का उपदेश दिया। शूल पाणि को अनेक बार ऋषि मुनियों ने तप द्वारा द्वारा प्रसन्न किया। एक छोटा सा बाजार काली कमली वाले की धर्मशाला सदाव्रत है। डाक घर तार घर मोटर स्टैण्ड कुली एजन्सी है।

दानी पुरुषों की ओर से धर्मशाला विद्यालय है, अलक नन्दा के लोहे का पुल पार करके सङ्गम है। सीढ़ियां उतर कर सङ्गम में मैं स्नान कीजिए। पानी का बहाव ज्यादा है। सावधानी से काम लेना। पास ही रुद्रेश्वर महादेव जी के दर्शन हैं, बीच में तार केश्वर गोपालेश्वर तथा श्री अन्न पूर्णा देवी जी के दर्शन हैं। नारद शिला है यहीं एक टांग के बल पर खड़े होकर श्री शङ्कर का तप किया था। इस पर्वत का नाम नाग पर्वत है।

यहां से १८ मील पूरब को कर्ण प्रयाग है परन्तु आप ने तो अब श्री केदार नाथ को चलना है। सङ्गम पर पक्का घाट श्री मान राय बहादुर हजारी मल जी दुधवे वाले कलकत्ता निवासी ने बनवाया है। घाट की सीढ़ियां १४० के लगभग हैं। दोनों गङ्गाओं का सङ्गम देखते ही बनता है अलख नन्दा बद्री-धाम से आती है और मन्दाकिनी केदारनाथ से। बद्रीनाथ को सीधे जाने वाले अलक नन्दा के किनारे जाते हैं। और केदार-नाथ को जाने वाले मन्दाकिनी के किनारे २ जाते हैं। शास्त्र की सम्मति है केदार नाथ होकर ही बद्रीनाथ जाना चाहिये। परन्तु कुछ ऐसे लोग हैं जो प्रमाद वश चढ़ाई के भय से इस मार्ग को त्याग देते हैं यह उन की भूल है। भक्तों को यह यात्रा अवश्य करनी चाहिये। ऋषियों का कथन है कि जब तक केदार नाथ जी का दर्शन न करे तब तक बद्रीनाथ जी यात्रा सफल नहीं होती। भगवान श्री राम ने स्वंय अपने मुख से कहा है कि—

शङ्कर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।

ते नर करहि कल्प भर, घोर नरक महँ वास ॥
औरहु एक गुप्त मत, सबहिं कहौं कर जोर ॥
शङ्कर भजन बिना नर, भक्ति न पावहिं मोर ॥

केदार घाटी में "मन्दाकिनी" नदी के साथ २ गया है।



यात्रियों को प्राणों का मोह छोड़ देना चाहिये। अपने वेड़े को भगवान के नाम पर छोड दो। देखिये वह फिर किस प्रकार सहायता करता है। पर आवश्यकता है आत्म समर्पण की और सच्चे विश्वास की।

दुर्गम घाटी प्रेम की, जहाँ प्रेम को धाम।
विकल मूर्छा सिसकबो, ये मग के विश्राम ॥
जब लग मरने से डरे; तब लग जीवन नाहिं॥
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लेहुँ मन माहिं।
झूठा प्रेमी इस जगह, सिर पर जूती खाय ॥

"हिमकर" सच्चे प्रेम बिन' पीछे रोवत आय ॥

भजन नं० (१३)

म्हाने पार उतारो जी, थाने निज भक्तन की आन ।
हमारे अवगुण नेक न चितवो, अपनो ही कर जान ॥ १ ॥
काम-क्रोध-मद-लोभ-मोह, बस भूल्यो पद निर्वान ।
अब तो गही शरण चरणन की, मत दीजो मोहि जान ॥ २ ॥
लख चौरासी भरमत भरमत, नेक न पड़ी पहचान ।
भवसागर में बह्यो जात हों, राखिये श्याम सुजान ॥ ३ ॥
हों तो कुटिल अधम अपराधी, नहीं सुमरियो तेरो नाम ।
नरसी के प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान ॥ ४ ॥

भाइयो ! आप को इस गये गुजरे जमाने में भी ईश्वर का चमत्कार उसकी कृपा का भण्डार देखना है तो आइये उत्तरा खण्ड की यात्रा कीजिये। अनेक पूजा पाठ ध्यान से भी जो मन स्थिर नही होता, वह चञ्चल मन सहज ही यहां स्थिर हो जाता है। मन के विषय में कहा है।

भजन नं०(१४)

ये मन नेक न कहियो करे ॥ टेक ॥
सीखा-सिखाय रहियो अपनी सी,
दुर्मति से न टरे, ॥ १ ॥ ये मन•

मद माया बस भयो बावरो,
हरि यश नहीं उचरे, ॥ २ ॥ ये मन०
कर पर पञ्च जगत के बहके,
अपनो उदर भरे, ॥ ३ ॥ ये मन०
श्वान पूंछ ज्यों होय न सीधो,
कह्यो न काम करे, ॥ ४ ॥ ये मन०
कहु 'नानक' भज राम नाम नित,
जाते काम सरे, ॥ ५ ॥ ये मन०

भजन नं. (१५)

समझ जा रे पापी मन तू सलानी ।
कही लाख तुझ को नहीं एक मानी ॥ टेक ॥
धरा क्या है दुनियाँ में मर जो रहा है ।
समझता नहीं है ये आखिर को फानी ॥ २ ॥
दीखें जितने सुन्दर पुरुष और नारी ।
क्यों तू लुभाया ये मट्टी निशानी ॥ ३ ॥
दिन चार तेरा है जीवन जगत में ।
लगी धूप छिन में बर्फ पानी ॥ ४ ॥
इसी से भजन में तू दिल को लगा रे ।
समझ बात 'बुद्धिचन्द्र' तज दे नादानी ॥ ५ ॥

* छठवां प्रकरण *

* केदारनाथ को *



रुद्र प्रयाग से मंदाकिनी गङ्गा के किनारे २ सड़क चला है। दोनों तरफ काले २ पहाड़ हैं. आप केदारनाथ की ओर चलिये। सन्मुख हिमालय के श्वेत शिखर आप को दिखाई देंगे। मार्ग सुन्दर सुहावना एक छोटी सी छतैली चट्टी है। उस के पश्चात ये लगभग ५ मील की दूरी पर है। यहां जल स्रोत का पाचक और स्वादिष्ट है। एक मील पर मठ चट्टी है, और एक मील पर रामपुर चट्टी है आगे २॥ मील की दूरी पर "सूर गढ़", सरकारी बंगला है। रामपुर से ४ मील अगस्त मुनि हैं। पुराणों में कथा आती है, एक वार विन्ध्याचल पर्वत ने इच्छा की कि मैं बढ़ कर सूर्य को ढक दूं। ये बढ़ने लगे, सूर्य के मण्डल को रोकना चाहा। सभी देवताओं ने इसी आश्रम में आकर अगस्त मुनि की प्रार्थना की। महाराज अपने सवक विन्ध्याचल का विचार बदलिये।

देवताओं की प्रार्थना सुन कर मुनि राज वहां पहुंचे। विन्ध्याचल ने गुरुदेव के चरणों में सिर झुकाया, और सेवा के लिये आज्ञा मांगी। मुनि जी ने कहा जब तक हम दक्षिण से लौट कर न आ जावें तब तक तुम इसी प्रकार रहो। सो अगस्त मुनि अभी तक नहीं लौटे। मार्ग चढ़ाव उतार का सीधा है। चारों तरफ तरावट को देख कर। यात्रि हंसता २ चला जाता है। आश्रम एक चौड़े मैदान में है। मन्दाकनी पास ही बहती है। यहां पर वायुयान का स्टेशन है। छोटा सा बाजार है खाद्य पदार्थ मिल जाते हैं, डाक घर हस्पताल बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला है। अगस्त मुनि का नया मन्दिर बना है। अलौकिक चमत्कार हैं।

केदार में घाटी एक गांव



आध मील आगे 'छोटा नारायण' मन्दिर है। जिस में सुन्दर मूर्ति है। सामने रुद्राक्ष के सुन्दर वृक्ष हैं जिन के फलों की सुन्दर माला बनती है

"अगस्त कुण्ड"

केदार खण्डान्तर गत है कुण्ड की शिला पर ही सुन्दर घाट बना है। अगस्त मुनि का प्राचीन स्थान भी यहीं है सामने आदि शक्ति श्री विद्या अभिनव श्री राज राजेश्वरी जी के मनोहर दिव्य दर्शन हैं। प्रेमी को दर्शनों में मूर्ति मुस्कराती

और वार्तालाप करती हुई प्रतीत होती है। दिल में यही भावना रहती है कि दर्शन करते रहें, एक क्षण भी अलग न हों।

ऊपर स्वामी हर हर महादेव जी की आज्ञा से अहमदाबाद के निवासी सेठ नरसी भाई जी ने "श्री गोविन्द भुवन" नाम की पक्की धर्मशाला बनवाई है। रसोई के कमरे भी नल लगा हुआ है। यहां पर यात्रियों को अच्छा आराम मिलता है। स्थान बहुत उत्तम है पानी का सुख है। एक जल धारा है जहां गाय बैल घोड़ा खच्चर पानी पीते हैं। भगवती जी को चीर चढ़ाया जाता है। अद्भुत बात ये है कि अत्यन्त पापी माता का दर्शन नहीं होता। आगे दो मील सौड़ चट्टी है। और इतनी ही दूर चन्द्रापुरी है। ये मन्दाकिनी के तट पर रमणीक स्थान है। सुन्दर मकान और सब सामान मिल जाता है। मन्दाकिनी का पुल पार करके भेरू चट्टी है। मार्ग सभी सुन्दर मन भावना है। यहां लुहार डोम लोग केदारनाथ बद्री नारायण के कंकण बेचते हैं। आगे पाण्डु नन्दन भीमसेन के दर्शन हैं। १॥ मील पर कुण्ड चट्टी है। आगे २॥ मील गुप्त काशी विश्वनाथ जी का दरबार है मार्ग कड़ी चढ़ाई का है भगवान शङ्कर का नाम लेकर कदम बढ़ाना चाहिये।



गुप्त काशी छोटा सा कस्बा है। लिङ्ग रूप से भगवान के दर्शन हैं, संसार में तीन काशी हैं। उत्तर काशी गङ्गोत्री के मार्ग में। पूर्व काशी बनारस गङ्गा के तट पर गुप्त काशी जो आप के सन्मुख है। ये ऊंचे शिखर पर बसी है। इस के सामने मन्दाकिनी पार ऊषा मठ है। केदारनाथ के पण्डा यही निवास करते हैं। चार पांज कोस के घेरे में यह लोग रहते हैं। पं० तुलाराम तोलाराम पञ्जाब प्रान्त के पण्डा हैं इन्हीं को हमने पण्डा माना। रहने को कई मकान धर्मशाला हैं मन्दिर के पास गङ्गा-जमुना नाम की दो धारा हैं। यात्रि दोनों में स्नान करता है। कुण्ड में पण्डा लोग गुप्त दान लेते हैं। यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें औषधि चवर आदि उचित दाम पर मिल जाते हैं। मंघर जैसी ठण्ड यहां पर रहती है। पार्वती शङ्कर के विशाल दर्शन हैं। भाव सहित भूतनाथ का दर्शन कर आगे बढ़ो। डाक घर तार घर बाबा जी की धर्मशाला है। १ मील आगे नाला चट्टी है, ललिता देवी के दर्शन हैं। यहीं से बद्री नारायण को सड़क जाती है। यह चटी छोटी सी पानी की कमी है, यहां चमार जाति के लोग रहते हैं। अपना काम पूछ ताछ कर करना चाहिये। अब तो वायु ही बदल गई है।

डेढ़ मील नारयण कोटि नामक तीर्थ है। श्री मान पं० विशाल मणि का विशाल कार्यालय है। पं० जी इस प्रान्त के प्रतिष्ठित कार्य कुशल सुलेखक अनेक पुस्तकों के रचियता हैं। ३६० देवताओं के दर्शन हैं। भद्र कुण्ड के स्नान महेश्वर महादेव श्री नारायण के दर्शन हैं। नारायण कोटि प्राचीन समय में बड़ा शहर होगा। केदारनाथ के यात्रि फालतू सामान यहां रख

जावें। और लौटती दफा अपना ले लेवें। आगे १ मील पर त्र्यङ्ग चट्टी है। मार्ग उतार का है। १॥ मील आगे खण्डा महिषा मर्दनी है। इसी स्थान पर देवी ने महिषासुर को मारकर। दो टुकड़े कर के पर्वत पर फेंक दिया था। इसी से इस पर्वत का नाम महिषा खण्ड है। यहां पर एक झूला भी है, जिस पर यात्रि झूला झूलते हैं। देवी की निम्न लिखित मन्त्रों से प्रार्थना करनी चाहिये।

नमो देव्यै प्रकृत्यै च विधात्र्यै सततं नमः।
कल्याण्ये कामदायै ज सिद्धयै देव्यै नमो नमः ॥ १ ॥
सच्चिदानन्द रूपिण्यै संसारिण्यै नमो नमः।
पञ्च कृत्या विधात्र्यै च भुतनेश्यै नमो नमः ॥ २ ॥
सर्वाधिष्ठान रूपायै कूटस्थायै नमो नमः।
अर्ध मात्रार्ध भूतायै हृल्लेखाय नमो नमः ॥ ३ ॥
नमो देवि महाविधे नमामि चरणौ तव।
सर्व ज्ञान प्रकाशं मे देहि सर्वार्थ दे शिवे ॥ ४ ॥

इन मन्त्रों से प्रत्येक मन्दिर में देवी की प्राथना करनी चाहिये गुप्त काशी से प्रायः ठंड शुरु हो जाती है। पवत यहां के अति सुहावने हैं चोटियों पर बरफ चांदी की तरह चमकती है। यहां से तीन मील राम पुर है यह मार्ग भी चढ़ाव उतार का है। प्रत्येक चट्टी पर केदार कंकण मिलते हैं। रामपुर एक बड़ी भारी चट्टी है। बाबा जी की धर्मशाला औषधालय

है। पांच दिन के लिये यहां से कम्बल मिलते हैं। जो लौटर्ती बार यहां वापिस देने पड़ते हैं। शरद ऋतु में यहां भी बरफ पड़ जाता है, सभी स्थान बरफ से ढक जाते हैं, और आज कल भी पौष माघ की सरदी यहां पड़ती है डेढ मील आगे पाटा गाड़ का पुल आता है इसी से आगे थोड़ी दूर श्री त्रियुगी नारायण को सड़क जाती है। चढ़ाई बहुत कड़ी है, और पर्वत दृष्य सुहावना मन भावना है। स्थान २ पर ठण्डे जल के झरने हैं जो झर २ कर यात्रि के मन को मोह लेते हैं। या यूं समझिये भगवान को पर्वत अँजलि दे रहे हों! नाना प्रकार की लत्ता पुष्प जड़ी बूटियों से सजा हुआ है, अनेक यात्रि इस भयानक स्थान से डर कर सीधे केदारनाथ को चले जाते हैं, परन्तु हम प्रेम से सम्मति देते हैं कि घबराने की कोई बात नहीं, भगवान सब बल देते हैं अपनी सहायता द्वारा मनुष्यों को विकट स्थनों से भी फूल की तरह ले जाते हैं ! ये हमारा निजी अनुभव है।

१॥ मील आगे शाकुम्भरी देवी का मन्दिर है और डेढ़ ही मील आगे त्रियुगी नारायण हैं। देवी जी के दर्शन करके यहां आराम करना चाहिये। पास ही ठण्डे जल का झरना है, इस जगह पर ठण्ड अधिक होती है। भगवान का विशाल प्राचीन मन्दिर है। नारायण की नाभि से जल निकल कर बाहर कुण्ड में जाता है। आगे पार्वती के विवाह काल की अग्नि (धूनी प्रज्जवलित हो रही है, जो बराबर उसी समय से जल रही है। यात्रि गण इस में लकड़ी डालते हैं हवन करते हैं ब्रह्म-कुण्ड, रूद्र कुण्ड, विष्णु कुण्ड, सरस्वती कुण्ड आदि चार कुण्ड

हैं। किसी में स्नान किसी में दान किसी में तर्पन व उदक पान होता है, सरस्वती कुण्ड में पीत वर्ण रङ्ग के छोटे छोटे सर्प होते हैं, उन से भय किसी प्रकार का नहीं, मन्दिर में अन्धेरा होने के कारण दर्शन ठीक नहीं होते। टार्च व लैम्प का होना जरूरी है, बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला, रहने का मकान अच्छे हैं, एक रात यहां अवश्य रहना चाहिये।

अब आप शाकुशम्भरी देवी के पीछे से डांडी (पगडंडी) द्वारा उतार पर सोम प्रयाग आवेंगे। सोम नदी का संगम है मन्दाकिनी के साथ. पुल पार करके एक मील पर मुंड गनेश है। एक समय भवानी ने अपने बदन पर उबटन कर मैल उतारा और उसी का पुतला बनाया, और उस में जीवन दान दिया। और बालक को आज्ञा दी बेटा पहिरा दो। द्वार पर खड़े हो जाओ, किसी को अन्दर न आने दो। यही मेरी आज्ञा है अब मैं स्नान करती हूँ।

देवी जी स्नान करने लगीं और वीर बालक अपने काम पर डट गया। इधर श्री शङ्कर जी अकस्मात आ गये। और अपने निवास स्थना पर जाने लगे। तो देवी द्वारा खड़े किये गण ने उन को जाने से रोका। शङ्कर ने त्रिशूल से मस्तक काट दिया। यह वही स्थान है विस्तार पूर्वक कथा शिव पुराण में देखिये। दो मील आगे गौरी कुण्ड है रास्ता सभी चढ़ाई का है। यहां पर अनेक दुकानें धर्मशाला, हैं। पार्वती जी का मन्दिर और समीप में दो कुण्ड हैं। सर्व प्रथम भवानी ने मासक स्नान यहीं किया है। यहां की रज रजु जैसी हैं। एक ठंडे जल का कुंड और

दूसरा और गर्म जल का है। गर्म जल में उङ्गली नहीं डाल सकते। परन्तु स्नान करने में किसी प्रकार की उपराता नहीं आ सकती। यहां का जल वायु अच्छा नहीं। दो मील आगे भैरव जी का मन्दिर है। इन को यात्रि गण भेंट चढ़ाते हैं। पुराने कपड़े की डोरी चढ़ाते हैं। भेंट व पूजन से यात्रा निर्विघ्न समाप्त होती है।

यहां से एक मील आगे भीम शिला है। मार्ग में कई स्थानों पर बर्फ मिलती है। आगे दो मील पर राम बाडा नामक अन्तम स्थान (चट्टी) है। बाबा जी की धर्मशाला और दुकानें हैं। यहां शीत अधिक पड़ता है। यात्रि यहां निवास करके प्रातः काल श्री केदारनाथ को जाते हैं। आप को याद रहे गौरी कुंड से सात मील की कड़ी चढ़ाई है। पहिले से अब बहुत सुविधा हो गई है। वैशाख तक यहां बर्फ रहती है।

अब आगे बढ़िये, यात्रि प्रेम में लीन हो रहे हैं। अपने शरीर की सुध बुध किसी को नहीं। अपने प्राणों का मोह छोड़ कर जय बद्री विशाल की, जय केदार नाथ की बोलते हुए आगे जाते हैं। धन्य है केदार खंड, जहां मनुष्य का मन शान्त हो जाता है। राम बाड़ा से केदारनाथ साढ़े तीन मील है। यात्रा में धैर्य से काम लेना चाहिये। हिम्मत कभी न हारना। अढ़ाई मील देव दर्शनी स्थान है। यहीं से केदारनाथ के दर्शन होते हैं। सड़क चक्कर काट कर चलती है मार्ग भयानक है, अनेक स्थानों पर बर्फ पर चलना पड़ता है।

मन्दाकिनी पार करके पुरी आ जाती। चारों ओर गगन

चुम्बी बर्फीले पर्वतों के मध्य में विद्यमान है तीन ओर से ऊचे २ पर्वत हैं, यहा मन्दाकिनी गङ्गा तथा सरस्वती का संगम है पास ही में सङ्गमेश्वर महादेव हैं, अनेक दुकाने धर्मशाला बाबा जी की शाखा, कार्यालय, औषधालय, डाकखाना तार घर है। आप इस स्थान को देख कर मुग्ध हो जायेंगे. चारों ओर बर्फ ही बर्फ है। मन्दाकिनी बड़े ऊंचे पर्वत से गिरती है। इस का वेग बड़ा प्रबल होता है। यहां स्नान करना टेढ़ी खीर है, अनेको अचेत हो जाते हैं। ऐसी दशा में अमृत धारा लौंग का उबला पानी प्राणी को सचेत करता है, छुहारा भी खा लेना चाहिये।

यात्रि अपने पंडे के पास रहते हैं, और वह सब प्रकार की सेवा करते हैं, झट चाय बना कर यात्रि को देते हैं, पानी भी गर्म करके स्नान कराते हैं। गर्म कपड़े भी शीत के लिये ओढ़ने को देते हैं, स्नान के पश्चात शङ्कर का दर्शन करिये। धूप-दीप-कपूर-चावल, पेड़ा-पांच मेवा चने की दाल, यथा शक्ति दक्षिणा, और घी भी साथ में पूजा के लिये लेना पड़ता है, मन्दिर विशाल है रोशनी का प्रबन्ध ठीक न होने से अंधेरा रहता है, ज्योति घी की अखंड दिन रात जलती रहती है श्याम रङ्ग की त्रिकोण शिव जी की पिण्डी है, इसकी लम्बाई लगभग चार हाथ चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई। लगभग दो हाथ है शिव जी की पीठ का भाग माना जाता है, घी और मक्खन लगाकर यात्रि तीन वार भगवान को छाती लगा कर मिलते हैं।

मन्दिर में प्रवेश करने में श्री गणेष जी का पूजन होता है, आङ्गन में एक विशाल मूर्ति नन्दी की है द्वारपाल की

मूर्तिया हैं, एक तरफ ऊषा अनिरूद्ध पांच पाण्डव भगवान श्री कृष्ण के दर्शन हैं, सदा शिव पार्वती के मूर्तिमान दर्शन और अनेन तीर्थ हैं, भगवान राम लक्ष्मण पार्वती लक्ष्मी जी के भी दर्शन हैं परिक्रमा में अनेक कुण्ड हैं जिस में एक उदक कुंड है, जिसे इस मन्त्र द्वारा जल पान करें, रू'तु रू'तु। इस का बड़ा महात्तम्य है। यह सब कथा विस्तार पूर्वक केदारखंड में बतलाई है। इस छोटी सी पुस्तक में लिखना अनिधकार चेष्टा है श्री केदारनाथ जी के मन्दिर पीछे जगद्गुरु आद्य श्री शङ्कराचार्य की समाधि है। जो बहुत बुरी दशा में थी अब बङ्गलौर के श्री राव जी ने मरम्मत प्रारम्भ की है।

इस परम पवित्र तीर्थ की झांकी का आनन्द तो देखते ही बनता है भक्तों को निम्न लिखित मन्त्रों से पूजन ध्यान करना चाहिये।

ध्याये नित्यं महेशं रजत, गिरि निभँ चारू चन्द्रावतंशम्।
रत्न कल्पो ज्वलाङ्ग परशु, मृग चराभिति हस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात्स्तुत मम, रगणैः व्याघ्र कृतिं बसानम्।
विश्वाद्यं विश्वबन्द्यं निखल, भय हरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

जप पूजा मन्त्र-ॐ नमः शिवाय।

❀ प्रणाम मन्त्र ❀

नमः शिवाय शान्ताय कारण त्रय हेतवे।
निवेदयामि। चात्मानं त्वं गतिः परमेश्वर॥

नमोऽस्तु नील ग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे ।

अथो ये अस्य स्तवानो हन्तेऽभ्योऽकरन्नमः ॥

भगवान शङ्कर के विषय एक भक्त की क्या ही उत्तम धारणा है ।

पिता शैवः शैवी तदनु जननी बन्धु सहृदः ।

सुता शैवः शैवं कुल मिति कुलं शैव मिति च ।

मतिः शैवे शास्त्रे शिव चरण सेवानु शरणं,

मुखे शैवी वाणी भवतु भगवन्मे शिव शिवा ॥

पिता हमारा शैव हो, उसी तरह हमारी माता हो, बन्धु और मित्र भी शैव हों, शिव शास्त्र में हमारी मति हो, और शिव के चरणों की सेवा में हमारा सदा मन लगा रहे, और मुख से सदा शिव शिव को कल्याण करने वाली शिव वाणी निकलती रहे । गन्धर्वराज पुष्य दन्त ने बहुत ही उत्तम कहा है—

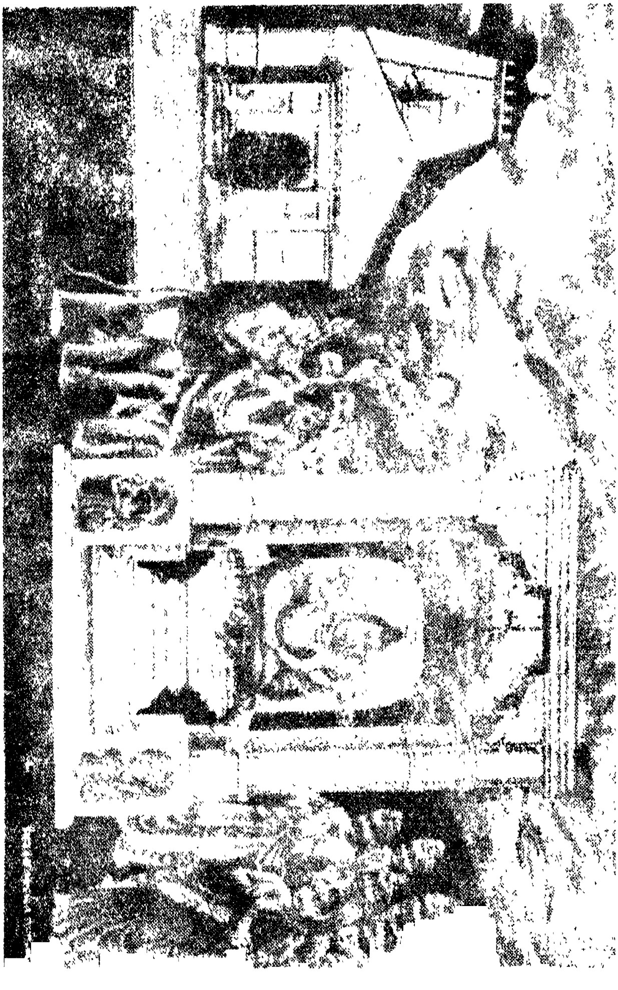
महिम्नः पारं ते परम विदुषो यद्य सदृशी ।

स्तुतिर्ब्रह्मा दी नामपि तदव सन्नास्त्वयि गिरः ॥

अथा वाच्यः सर्वाः स्वमति परिणामा वधिगृणन् ।

ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परि करः ॥

हे शिव ! मुझ जैसे अलपज्ञ पुरुष से तुम्हारी महिमा यद्यपि पूर्ण रूपेण व्यक्त करके नहीं की गई है, तो मैं यह कहुंगा कि ब्रह्मादि भी तुम्हारी महिमा को कहने में समर्थ नहीं है. मेरी तो बिसात ही क्या है, किन्तु अपनी शक्ति के अनुसार तुम्हारे वर्णन



श्री केदार नाथ जी

करने में यदि दोष न होता, तो मैं भी यथा शक्ति तुम्हारे गुणों का वर्णन अपनी बुद्धि के अनुसार अवश्य करता। इस में किसी प्रकार का विकल्प न होता।

कुछ सन्तों का कहना है ये मन्दिर पाण्डवों ने एक रात में बनाया था।

केदार महातम

पाठक गण केदार खण्ड में कहा गया है। नन्दा पर्वत से लेकर काष्ट पर्वत तक केदार खण्ड कहा गया है। इस में एक उत्तम पर्वत हैं और उन में शिव मन्दिर हैं। रत्न स्तम्भ (जहां मनुष्य नहीं जा सकता) से लेकर हरिद्वार तक हिमालय का नीचे का भाग पवित्र माना गया है। जो प्राणी अपने हृदय में पक्का निश्चय कर के निवास करते हैं। मुक्ति उन के हाथ में समझनी चाहिये।

वहां के लोग सभी मुक्ति की इच्छा करने वाले देवता समझने चाहियें। मुक्ति की इच्छा से मरने को ही वहां जन्म लिया है। हिमालय से जो दो नदियां निकली हैं उन सब को गङ्गा जी समझना चाहिये। क्योंकि गङ्गा जल से ही निकली हैं। इस में कुछ भी संशय नहीं करना चाहिये। वहां के जल पान करने वाले पर्वतीय प्राणी साक्षात शिव रूप हैं। इसी कारण उस जल को पान करने के लिये देवता आते हैं। गङ्गा और यमुना दोनों नदियें वहां मौजूद हैं।

महाभारत के पश्चात कुछ समय राज कर के पाण्डवों ने सब कुछ त्याग कर राज परीक्षित को दे दिया और व्यास

देव से प्रार्थना की। गुरुदेव गौत्र हत्या से हमारा उद्धार कैसे हो। तब कृपालु व्यास ने कहा! वत्स संसार में गौत्र हत्या का पाप कहीं भी नहीं मिटता। हां आप लोग श्री केदारनाथ को जाओ। वहां के दर्शन से आप लोगों की हत्या जायेगी। महादेव के दर्शन की अभिलाषा से भी देवता शुभ कर्मों को करते हुए रहते हैं वहां के जीव तपो मूर्ति हैं। समस्त नदियों में धार रूप श्री गङ्गा जी वहां विराजमान हैं। पार्वती सहित महादेव सदा निवास करते हैं। पांडु नदन्न अनेक गण यक्ष गन्धर्व उत्तम राक्षस सभी उस स्थान में आते हैं। जब सूर्य नारायण वृश्चिक राशि (मृगशिर के आधे भाग में आते हैं तब प्रत्यक्ष हो कर क्रीड़ा करते हैं। उस समय कई प्रकार के बाजे बजते हैं। और वेद ध्वनि सुनने में आती है।

उस स्थान पर प्राण त्यागने वाला मनुष्य शाक्षात शिव हो जाता है। केदारखण्ड के महात्म कहने में किस की शक्ति है उस में अनेक तीर्थ हैं। उस का स्मरण करने से परम कल्याण होता है इस लिये तुम लोग वहां जाओ। वह एक ऐसा स्थान है जहां ब्रह्म हत्या का पाप नाश हो जाता है। पचास योजन चौड़ा तीस योजन लम्बा यह स्थान यहां तीर्थ भूमि के ऊपर स्वर्ग देने वाला है। गङ्गा द्वार, (हरिद्वार) से लेकर श्वेतांत तक तमसा नदी के तट पूर्व बोधाचल से प्रथम भूमि के ऊपर सब से भिन्न ही, केदार नाम का उत्तम स्थान है। हे देवश्वरी तुम्हारे प्रेम के कारण हमने उस उत्तम देश का वर्णन किया।

आगे शिव जी ने पार्वती से कहा! हे देवी जो कभी ये

कहते हैं, कि हम केदार नाथ जावेंगे। उन के पितर ३०० कुलों को साथ ले निसन्देह- यह बात सत्य है शिव लोक में जाते हैं जैसे पतिव्रताओं में तुम, सब देवताओं में विष्णु भगवान नदियों में गङ्गा जी, पर्वतों में कैलाश, योगियों में याज्ञवल्क्य भक्तों में नारद जी, शिलाओं में शालग्राम शिला, बनों में बदरी बन, धेनुओं में जैसे काम धेनु, इसी प्रकार केदार क्षेत्र उत्तम है।

पूजा पाठ से निश्चिन्त हो कर वापिस गौरी कुण्ड आजाइये। केदारनाथ में प्रायः सूर्य भगवान के दर्शन नहीं होते। हां शिव जी की कृपा हुई तो १२ बजे सूर्य अपनी किरणों से तप्त करते हैं। यात्रि अपनी इच्छा के अनुसार रात्रि भी निवास कर सकता है। ऋषिकेश में बाबा काली कमली वाला क्षेत्र में रुपया जमा कर, साथ में हुन्डी लाने से यहां मिल जाता है।

* सातवां प्रकरण *

❀ चमोली लाल सांगा को ❀

केदारनाथ जी में प्रायः १२ बजे बाद सदा वर्षा शुरु हो जाती है। अतः यात्रियों को यहां से १२ से पहिले चल देना चाहिये। गौरी कुण्ड से नाला चट्टीपर एक दिन में आ जाता है। केदार से यहां तक २१ मील का रास्ता है। नाला से बायें हाथ की सड़क पर १॥ मील

मन्दाकिनी गङ्गा के तट पर सड़क की बाईं ओर उत्तरा खण्ड विद्या पीठ के भवन हैं। श्री केदार दरबार के महोपदेशक साहित्य शास्त्री पं० मित्रानन्द शर्मा पं० मायादत्त शर्मा महोपदेशकों के सदुपयोग से दानी मानी सज्जनों के द्वारा, विशाल भवन बन रहे हैं। अनेकों विषयों के प्रकांड विद्वानों द्वारा सभी विद्याएं पर्वतीय छात्र सुविधा के साथ उपार्जन कर रहे हैं। अतः दानियों को अपना दान इस ओर अवश्य लगाना चाहिए। विद्या पीठ से ऊषा मठ १॥ मील चढ़ाई पर है। यहीं पर श्री केदार नाथ की गद्दी है।

छः मास शरद काल में केदारनाथ का यहां पूजन होता है। भक्त राज प्रहलाद के पोते बाणासुर की कन्या ऊषा ने यहीं पर पार्वती जी से विद्या प्राप्त की थी। ऊषा की प्रार्थना पर प्रसन्न होकर शिव प्रिय उमा ने वर्दान दिया, कि तुम्हें अपने पति का मिलन स्वप्न में होगा। जिस की कथा श्री मद्भागवत में आती है। मन्दिर विशाल हैं, श्री केदारनाथ, श्री बद्रीनाथ के दर्शन हैं। श्री केदारनाथ की गद्दी देखने योग्य है, उस के पास श्री गङ्गा श्री यमुना जी की धारा हैं। सत्ययुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग, के दर्शन। विद्यालय, औषधालय, डाकखाना हस्पताल हैं। पञ्च केदार जी ऊषा उनरिद्ध जी के दर्शन हैं। छोटा सा बाजार स्थान रमणीक है सर्व प्रकार की वस्तु मिल जाती हैं। यहां से १८ मील पर मध्येश्वर महादेव हैं। जो दूसरे केदार पुकारे जाते हैं। अब यहां से कुछ पर्वतों का रङ्ग ढङ्ग न्यारा है। आप को मालूम होगा आप पर्वतों के ब्रह्माण्ड में आ पहुंचे हैं। सम

भूमि का कहीं नाम तक नहीं। जिधर देखिये उधर महान् ऊंचे २ शिखर गगन से बातें करते दिखाई देते हैं। पहाड़ी लोग भूखे हैं। निर्धन हैं, तन पर कपड़ा नहीं। फिर भी आनन्द हैं। वह समझते हैं हमारे भाग्य में इतना ही है।

अनेक प्रकार की बहुमूल्य वस्तुएं और नाना प्रकार की जड़ी बूटियां व विचित्र जीव इस भूमि में हैं। जिन का वर्णन इस पुस्तक में नहीं किया जा सकता। अब आप को आगे ठण्ड प्रतीत नहीं होगी, ३॥ मील गणेष चट्टी है। मार्ग चढ़ाव उतार का है। मार्ग में दो तीन जल के झरने आते हैं। तीसरे केदार तुंगनाथ से आने वाली शिव गङ्गा (अकाश गङ्गा) आती है। इसे पार करके यहां से विकट चढ़ाई आती है। यह लगभग ६ मील की सड़क जङ्गल में चक्कर काट कर जाती है। यात्रि को प्राय: भय लगता है, किन्तु भय करना उचित नहीं। किसी प्रकार की हानि का होना असम्भव है। यह सब ऋषि भूमि का प्रभाव है, भोले भाले सात्विक जीवों की क्रीड़ा स्थली है। दो मील आगे देडा चट्टी और तीन मील आगे पोथी बासा चट्टी है।

यहां शीत अधिक है। पर्वत के शिखर पर ये स्थान है, पहाड़ की छटा निराली है सब का सब हरा भरा जङ्गल है। पेड़ आकाश से बातें करते हैं, कई दुकानें हैं, दिन के १२ बजे भी ठण्ड लगती है. रात की तो बात ही क्या है भूमि पर कोमल घास की चादर थी। यात्रि चारों ओर नजर डाल कर चलते हैं चढ़ाइ पर १ मील माट चट्टी है पानी का भरना है। यहा शीत अधिक है, दो मील की और चढ़ाइ पर बणिया कुण्ड

है, स्थान लम्बा चौड़ा रमणीक है। बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला जल का आराम है, सदाव्रत है शीत यहा भी बहुत है, आगे १ मील दो गली टिब्बा चट्टी है, अब दो मील कठिन चढ़ाइ के पश्चात चोपता चट्टी आती है बाबा जी की धर्मशाला है अनेक दुकानें हैं सुन्दर स्वच्छ दूध मिलना कठिन है। यह स्थान भी पर्वत के ऊंचे शिखर पर है, देव दारू के पेड़ बहुत हैं।

यहां से एक मार्ग तुङ्गनाथ को जाता है। आप को याद रहे यह २० मील का रास्ता बिकट शीत का है। लम्बे २ वृक्ष फूलों से लदे मानो देवताओं की बन्दना करते हैं मनोहर ठण्डे जल के झरने झर झर कर मानो प्रकृति को अञ्जलि दे रहे हों ऐसा प्रतीत होता है। तुङ्गनाथ को अनेक यात्रि छोड़ देते हैं। परन्तु याद रहे बार २ इधर नहीं आना होता है। आप अवश्य तुङ्ग नाथ के दर्शन कीजिये। चौपता से पहाड़ी लोग बोझ उठाने को मिल जाते हैं। आप अपना समान कुली को देकर नीचे भेज दीजिये। अगर आप चल न सकते हों तो कांडा झापान भी कर सकते हैं। देश के लोगों ने पहाड़ियों को भी बेईमान बना दिया है। इसलिए जिम्मेदार एजेन्सी की मार्फत माल कुली के हाथ देना चाहिए। तुङ्ग नाथ साढ़े तीन मील सीधी चढ़ाई है। यात्रि मार्ग में सब अपना में पड़ जाते हैं। अच्छे २ जवानों की हिम्मत टूट जाती है। परन्तु जो भागते नहीं धीरे २ चलते हैं। वह प्रेम पूर्वक पहुंच जाते हैं। उत्तर की ओर कैलाश के ऊंचे शिखर दिखाई देते और उत्साह को

बढ़ाते हैं। यह सब का सब पर्वत वृक्ष बेल पत्तों से शून्य है पानी से लथ पथ दिखाई देता है।

कहते हैं श्रावण मास में अनेक कमल आदि पुष्प यहां पर खिल जाते हैं। नाना प्रकार की बोलियां पक्षी बोलते किलोल करते हैं सच पूछिये तो इस पर्वत की महिमा कथन से बाहर हैं। हमने अनेक दृष्यों को अपनी आंखों देखा हैं। भगवान तुङ्गनाथ जी का मन्दिर शिखर पर है शिव गङ्गा (आकाश गङ्गा) का स्नान है। परन्तु स्नान करना टेढ़ीखीर है। यहां पर पितरों का पिंड दान तर्पण भी होता है। केदार खण्ड अध्याय ५० में लिखा है कि जो मनुष्य आकाश गङ्गा के तीर पर, पितरों के लिए तर्पण करता है। उसके दस पहिले और अगले। इसी प्रकार मातृ वंश के पितर प्रलय परयंत शिव लोक में बास करते हैं। आकाश गङ्गा में जो पिंड दान करता है। उसके पितर कृत्य २ हो जाते हैं।

कुछ सुस्ता कर पूजा का सामान लेकर मन्दिर में जाइए और शिव की पूजा कीजिए। यह मन्दिर बहुत ऊंचा और विस्तृत है। शिव लिङ्ग मूर्ति है पास में और भी दो मन्दिर हैं। धर्मशाला तीन दुकाने हैं। केदार नाथ बद्रीनाथ गङ्गोत्री जमनोत्री की बर्फानी चोटियां दीखती हैं सूर्य की जब किरणें जब उन पर गिरती है उस समय की शोभा क्या कही जाय। इस जगह ठंड बहुत है। खाने को पूरी मिल जाती हैं।

दक्षिण की तरफ से रास्ता जाता हैं। यह मार्ग उतार का है। घण्टों का मार्ग घड़ियों में समाप्त होता है। पहिले तो रास्ता

विकट था। परन्तु दानी पुरुषों ने ठीक करा दिया है। दो मील नीचे उतरने पर एक मील भर का सुन्दर सघन बन मिलता है। जिसमें हृष्ट पुष्ट लंगूर बहुत दिखाई देते हैं। इसी बन में कस्तूरी मृग भी हैं। पर हमारे देखने में नही आए। आगे झुलकना चट्टी आई जिसको भीम द्वार भी कहते हैं। यहां आप को चौपना से आने वाली पूर्व सड़क मिल जाएगी। आपका सामान और कुली यहां मिल जाएगा। जल का सुख रहने को मकान मिल जाएगा। परन्तु ठण्ड यहां भी बहुत है। यहां से २॥ मील पांगर वासा मार्ग चढ़ाव उतार का है। आगे ३। मील मण्डल चट्टी है मार्ग उतार और घना जंगल है, पानी का सुन्दर झरना है बाबा जी की धर्मशाला कई दुकानें हैं, सड़क छोड़कर १५ मील उत्तर को श्री रुद्रनाथ चौथे केदार हैं, जो पहाड़ी मनुष्य केसाथ जा सकते हैं, यात्रि बहुत थोड़े जाते हैं, मार्ग बहुत विकट है, १३ मील श्री अनुसुइया जी का मन्दिर है, पर्व पर स्त्रिया जाती हैं, क्योंकि उन के दर्शन से पुत्र रत्न प्राप्त होता है!

आगे दो मील वैतरणी चट्टी हैं मार्ग सीधा और सुन्दर है, यात्रि हंसता २ चला जाता है, १। मील आगे सम्पूर्ण चट्टी आती है, रहने को स्थान डाकखाना है, एक मील उतार पर नई सड़क बनी हैं, पहाडी नाले का पुल फांदना पड़ता है, १ मील चढ़ाइ चढ़ कर श्री गोपेश्वर मिलता है ये पांचवा केदार है श्री रुद्रनाथ की गद्दी है, एक फर्लाङ्ग पीछे वैतरणी नदी है, दान पुण्य यात्रि करते हैं, गोपेश्वर में अष्ट धातु का त्रिशूल है, जो बल लगाने पर भी नहीं हिलता, और श्रद्धा से

कनिष्ट का अंगुली से भी हिलने लग जाता है। यहां पर पांच केदार समाप्त हो जाती हैं।

केदारं मध्यमं तुङ्गं रूद्रं गोपेश्वरं तथा।
केदारं पञ्चकं नित्यं स्मरेत पातक नाशनम् ॥

अर्थ—केदार १ मध्येश्वर २ रूद्रनाथ ३ तुङ्गनाथ ४ गोपेश्वर ५। केदार खण्ड में शङ्कर जी उमा से कहते हैं. हे देवी! जो प्राणी पांच क्षेत्रों की यात्रा करता है ज्ञान से अज्ञान से व प्रसंग से चर्चा करता है। उस के समान कोई पुण्यात्मा नहीं है। उस से पापी भी पवित्र हो जाते हैं।

इस के विषय में पौराणिक कथा है कि केदारनाथ में कटि भाग। मध्येश्वर में नाभि भाग, तुङ्गनाथ में बाहु, रूद्रनाथ में मुख, गोपेश्वर में जटा है। यही पांच केदार कहे जाते हैं। यहां से तीन मील चामोली उर्फ लाल सांगा है। मार्ग सभी उतार का है। प्रत्येक स्थान पर आये साल कुछ न कुछ बदलता रहता है। पुल पार कर आप बस्ती में आ जायेंगे। ये स्थान बहुत रमणीक है। लम्बा बाजार है। बाबा जी की धर्मशाला सदाव्रत हस्पताल, डाक घर तार घर थाना कचहरी सब कुछ है। रूद्र प्रयाग से छोड़ी हुई सड़क आप को यहां मिलेगी। मोटर स्टेशन है यह स्थान समुद्र तट से ३३०० फुट ऊंचा है। यह स्थान हरिद्वार से १३६ मील है। सीधा यात्री मोटर द्वारा यही आता है।

* आठवां प्रकरण *

❀ जोशी मठ को ❀

मनुष्य को यात्रा में निद्रा त्याग कर के प्रातः काल ही अपना रास्ता लेना चाहिए। नींद अच्छी है इस से थकावट दूर होती है। पर ऐसा न हो कि हम अपने कर्तव्य से भी चूक जायें। जो मद माया की मस्ती में पड़े रहते हैं। घर से बाहर निकल कर, किसी तीर्थ की यात्रा नहीं करते। अथवा जन्म को परमार्थ में नहीं लगाते उन के लिये सुन्दर चेतावनी है।

कबीर नौबत आपनी, दिन दस लेहु बजाय।
यह पुर पटन यह गली, वहुर न देखो आय।
चहुँदश नौबत बाजती, होत छतीसों राग।
सो मन्दिर खाली पड़े, तिस पर बोलें काग॥
हाड़ जलें ज्यों लाकड़ी, केशजलें ज्यों घास।
ये तन जलता देखकर भया कबीर उदास

अब आप को याद रहे पीपल कोटि तक मोटर जाने लगी है। बद्री धाम यहां से ४८ मील है। नौ मील का टुकड़ा मोटर मार्ग और बना है। पुल पार करके अलक नन्दा के

किनारे २ सड़क जाती है। मण्डल चट्टी से ठण्ड का नाम नहीं अब तो आपको पंखे का सहारा लेना पड़ेगा। लाल सांगा से दो मील मठ चट्टी है। पानी का झरना है स्थान रमणीक है। एक मील पर छिनका चट्टी है। यहां समुद्र तल से ऊंचाई २६०० फुट है। एक मील आगे बौनला चट्टी है, थोड़ी ही दूर "विरही गङ्गा" अलक नन्दा में मिल रही है। तीन मील आगे सिया सैण चट्टी है. मार्ग चढ़ाब उतार का है, मकान दो मञ्जिल हैं। यहां समुद्र तट से ऊंचाई २८५० फुट है। विरह नदी के ताल टूटने से ही सन् १६२४ में गङ्गा जी में बाढ़ आ गई थी। आगे एक मील हाट चट्टी है बीच में पुल पार करना पड़ेगा। यहां आप ४००० फुट समुद्र तट से ऊंचाई पर पहुंच गये। आगे चार मील पीपल कोटी है। अलक नन्दा का पुल पार कर के दो मील पर आप को यह स्थान मिलेगा। यहीं तक मोटर पहुंची है। बीसों मोटर तैयार रहती हैं। बहुत अच्छा प्रबन्ध रहता है। मार्ग चढ़ाई का है। सुन्दर बाजार अच्छे मकान डाक तार घर औषधालय है।

हिमालय तिब्बत की कुल वस्तु यहां मिलती हैं। हरे भरे पर्वतों से घिरा यह स्थान है। ब्राह्मी बूटी अधिक पाइ जाती है। समुद्र तल से यह स्थान ४८०० फुट ऊंचा है। आगे चार मील पर गरुड़ गङ्गा है। मार्ग चढ़ाव उतार का है। चीड़ देव दारु के पेड़ इस मार्ग में बहुत हैं। भगवान गरुड़ जी का मन्दिर है। कहते हैं गरूड़ जी ने अपार तपस्या द्वारा नारायण को यहीं प्रसन्न किया। इस नदी के पत्थर घर

में रखने से सर्प भय नहीं रहता। बाबा जी की धर्मशाला कुछ दुकानें हैं स्थान अच्छा नहीं। प्रायः यात्रियों को कष्ट होता है। थाली और पेड़ा दान करने का महात्म्य है मार्ग में लड़की सुई धागा मांगती हैं! उन के भोले भाले शब्द मन को मोह लेते हैं। ऐसा कौतुक सारी यात्रा में होता है। सवा मील टंगणी चट्टी आती है। मार्ग चढ़ाव उतार का है आगे सीधे ३॥ मील पर पताल गङ्गा है ध्यान रहे गरुड़ गङ्गा से ही ठंड चालू हो जाती है। यहां का पहाड़ बहुत कच्चा है। प्रति वर्ष टूटता फूटता रहता है। बड़ी सावधानी से चलना चाहिये। यहां से पत्थर बहुत चुभते हैं यह स्थान ५००० हजार फुट समुद्र तल से ऊंचा है। तीन चार दुकानें हैं पुल पार कर के दो मील चढ़ाई पर गुलाब रायचट्टी है। यात्रियों को यहीं ठहरना चाहिये। मकान अच्छे और दुकानें हैं। [५४५०] फुट की ऊंचाई पर है। लक्ष्मी नारायण का मन्दिर बाबा जी की धर्मशाला और डाक बङ्गला है। एक मील आगे खकोरी इस से आध मील नीचे आदि बद्री को रास्ता जाता है एक मील कुम्हार चट्टी (हेलेङ्ग) है बाबा जी की धर्मशाला सदावृत डाक घर अच्छी दुकानें हैं। अलक नन्दा उस पार कर के छटे केदार श्री कमलेश्वर, "उर्गम बद्री" के दो सुन्दर मन्दिर हैं यहां भी बाबा जी की धर्मशाला है। आवश्यक वस्तु मिल जाती है। अब आप (६०००) फुट आ गये ऊंचे। एक मील आगे खनोर चट्टी है। यहीं से एक रास्ता नीचे आदि बद्री को जाता है। २॥ मील आगे झरक पुर है सुन्दर दुकानें सब प्रकार की

जड़ी बूटी मिल जाती हैं मार्ग सीधा है। कहते हैं लक्ष्मण जी के लिये संजीवनी श्री हनुमान जी यहीं से ले गये थे। अब आप समुद्र तट से (६०००) फुट ऊंचे आ गये, आगे दो मील सिंह धारा है। अच्छी दुकानें और फलदार बगीचे हैं। एक मील पर जोशी मठ है। हरिद्वार १६२॥ मील की दूरी पर है जोषी मठ समुद्र तट से [६५००] फुट की ऊंचाई पर विद्यमान है। यह एक सुन्दर दिव्य नगरी है।

यहां जगद्गुरु श्री आद्य शङ्कराचार्य के चार मठों में गिरी सम्प्रदाय का ज्योति मठ है। समय के चक्र से ये मिट सा गया था, अब लगभग १३ वर्ष से इस का पुनरुद्धार हुआ है। जिस के आचार्य पूज्य पाद १००१०८ स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज हुए। जिन का गत मई सन १९५३ में कैलाश वास हो गया। आप महान तपस्वी विद्वान सदाचारी दिव्य ज्योति थे। प्रातः स्मरणीय श्री १०८ करपात्री जी जिन के शिष्य हैं। जिन्होंने धर्म विरोधी बिलों का नाम मिटाने को भारी मात्रा में प्रचार किया। आप इस समय भारत में एक ही महात्मा हैं। जो सच्ची लगन से प्रचार कर रहे हैं आज कहां हैं वे लोग जिन्होंने धर्म के नाम पर करोड़ों रुपया लिया है, आज प्रजा के हितार्थ मैदान में आवें। साधु समाज और हिन्दु जनता न चेती तो सदा के लिये मिट जाना होगा। श्री बद्रीनाथ जी के रावल जी का यही स्थान है श्री बद्रीनाथ के पट बन्द होने पर छः मास शरद काल में यहीं पूजा

होती है।

नर नारायण जी का सुन्दर मन्दिर है। भगवान की श्याम मूर्ति के चारों ओर भक्तों की प्रतिमा है। सन्मुख गरुड़ की पीतल की प्रतिमा है, पास ही में एक छोटा सा मन्दिर है, जिस में नव दुर्गा की प्रतिमा हैं, गणेश जी भी विद्यमान हैं प्रत्येक यात्री को घी चढ़ाना चाहिये। इस के पास ही एक कुण्ड है जिस में हाथी की सूंढ से दो धारा पड़ती हैं। एक का नाम नरसिंह धारा और दूसरी का नाम दण्ड धारा है। नरसिंह भगवान का मन्दिर है भगवान ने जब नरसिंह रूप धारण किया। तब नखों को कटाक्ष राज पश्चिमी पञ्जाब (पाकिस्तान) के पर्वत प्रदेश में धोया। उस स्थान का नाम नरसिंह पवार है। वहां से चल कर भगवान ने यहां आकर तप किया।

इस स्थान पर गुलाब बहुत होता है। कई प्राचीन मकान भी हैं जिन की चित्रकारी देखने योग्य है। यहां पर डाक घर तार घर पुलिस चौकी डाक बङ्गला चिकित्सालय धर्मशाला है सदाव्रत भी चालू है कस्बा मन को मोह लेता है आठ मील पूर्व को तपो भूमि है। जहां भविष्य बदरी और केदार हैं कहते हैं कि जब घनघोर कलियुग आवेगा, तब विष्णु प्रयाग के पर्वत मिल कर रास्ता बन्द कर देंगे, उस समय भक्त गण दर्शन यहां करेंगे। जोशी मठ में ६ सरकारी इमारतें हैं। राम बाग वैष्णवों का स्थान है। दो कोस पर अगस्त मुनि का आश्रम है। जहां अपार तप कर के मुनि ने भगवान को प्रसन्न किया था। अनेक शिवलिङ्ग मन्दिर हैं। महाराज पाण्डु को

यहीं ऋषि पत्नि का श्राप हुआ था, महाभारत में कथा आती है, महाराज पाण्डु ग्रीष्म निवास दोनों पत्नी (कुन्ती माद्री) सहित यहीं बन में रहा करते थे। एक दिन अखेट [शिकार] करने निकले। तो उन को मृग जोड़ा भोग करते दिखाई दिया। झट बाण मारने वाले थे कि मृगी बोली। राजन हम दोनों ऋषि [पति पत्नी] हैं। काम से पीड़ित हो कर पति से प्रार्थना की। अतः उन्होंने मेरी इच्छा पूरी करने को मृग का रूप धारण किया है और मैं मृगी हूँ आप धर्मात्मा हैं मेरे पति का वध न करो। मृगी के कई बार समझाने पर भी पाण्डु ने भावी बश मृग को मार दिया। पति वियोग से मृगी ने श्राप दिया कि हे मतिमन्द भाग्य हीन जैसे तुमने मेरे पति को मारा है। उसी प्रकार तुम भी अपनी पत्नि के पास रति काल में काल के ग्रास बनोगे। यह वही स्थान है

दो बातन को भूल मत, जो चाहत कल्याण।
"नारायण एक मौत को, दूजे श्री फगवान्॥
'तुलसी' जगमें आयके, कर लीजे दो काम।
देवे को टुकड़ा भला, लेवे को हरि नाम॥

संसार कुछ नहीं इस में जो कुछ दीखता है। सो सब कुछ बिगाना है। हम लोग उस राम के नाम में अपने मन को लगादें।

जबहिं राम हिरदे धरा, भया पाप का नाश।
जैसे चिनगी आग की, पड़ी पुराने घास॥

जब श्री राम से हमारा धन्य प्रेम हो गया उस समय हमारी अवस्था—

उमा जे राम-चरण-रति, विगत काम मद मोह।
निज प्रभु मत देखहिं जगत, कासन करत विरोध॥

यहां से दो मील उतार पर विष्णु प्रयाग है। अलकनन्दा और विष्णु गङ्गा का सङ्गम है। सङ्गम स्थान पर घाट बना है। जिस की १५० से भी अधिक सीढ़ी हैं, पिछले प्रयागों से यह स्थान बड़ा भयानक है, स्नान सावधानी से करना चाहिये। विष्णु भगवान का मन्दिर है। कहते हैं देव ऋषि नारद जी ने यहां अपार तप करके भगवान को प्रसन्न किया था, दोनों ओर बड़े ऊंचे पर्वत हैं जिन को देख कर भय लगता है।

—:❀:—

॥ बद्री धाम को ॥

यहां से सड़क संकीर्ण मार्ग हो कर जाती है। अनेक तिब्वती (भोटिया) लोगों [प्राय: ये भेड़ बकरी पर खाने का सामन ले जाते हैं] के कारण कहीं २ रुकना पड़ता है। १ मील बलदोरा, तीन मील आगे घाट चट्टी तक है। अलकनन्दा पास बहती है। ठण्डा जल होने से हाथ सुन्न हो जाते हैं। विष्णु प्रयाग से पर्वत माला वृक्ष रहित आ जाती है। आगे एक सुहावने मन भावने बन में पहुँचती है, उस समय काश्मीर के रङ्गीले पहाड़ याद आ जाते हैं।

दो मील चल कर पांडुकेश्वर आता है यह छोटा सा गांव है, योग बद्री शङ्कर द्रौपदी के दर्शन हैं भगवान की प्रतिमा स्वर्ण की है, कहते हैं अर्जुन स्वर्ग से लाये थे, धर्म पुत्र युधिष्ठिर की हस्त लिखित पाटी है। आध मील चल कर शेष धारा वैष्णवों का स्थान है, घृत धारा, क्षीर धारा मधु धारा और मै खानस तीर्थ सूर्य्य कुण्ड, चन्द्र कुण्ड आदि तीर्थ अलक नन्दा में हैं, दो मील आगे लामा बगड़ चट्टी है, मार्ग में गणेश धारा आती है। दो तीन दुकानें और धर्मशाला है, थोड़ी दूर चलकर एक मकान में अग्नि कुण्ड है, कहते हैं यहां राजा श्वेतकेतु ने यज्ञ किया था, १॥ मील आगे रानिग का लकड़ी तार का झूले दार पुल है, नीचे अलक नन्दा बड़े वेग से जाती है, लगभग डेढ मील पार करने से हनुमान चट्टी है। यह यात्रा का अन्तिम पड़ाव है। श्री हनुमान जी का मन्दिर हनुमान धारा है। बाबा जी की धर्मशाला कुछ दुकानें और जड़ी बूटी चंवर शिलाजीत मिलती है, यह स्थान समुद्र तल से ८६५० फुट ऊंचा है। यह स्थान किसी समय रमणीक बन था श्री बद्री धाम यहां से ६॥ मील है। एक मील पर घोर सिल पुल, और आगे १ मील "खांग पुल पार करके चढ़ाई आ जाती है। एक मील की दूरी पर कांचन नदी को पार कीजिये, अब आध मील की चढ़ाई पर देव दर्शनी स्थान आ जाता है, चढ़ाई बहुत कठिन है मनुष्य के नाक में दम आ जाता है। उस समय सूरदास जी के शब्दों में कहना पड़ता है।

॥ भजन १६ ॥

मो सम कौन कुटिल खल कामी ॥ टेक ॥
जिन तन दियो ताहि बिसरायो ।
ऐसो नोन हरामी ॥ १ ॥ मो०
भरि भरि उदर विषय को धावौं ।
जैसे शूकर कामी ॥ २ ॥ मो०
हरिजन छांड़ि हरि विमुखन की ।
निसदिन करत गुलामी ॥ ३ ॥ मो०
पापी कौन बड़ो है मौसों ।
सब पतितन में नामी ॥ ४ ॥ मो०
'सूर पतित को ठौर कहाँ है ।
सुनिये श्री पति स्वामी ॥ ५ ॥ मो०

देव दर्शनी से ही भगवान की पुरी के दर्शन होते हैं। लगभग ६ फर्लाङ्ग चलने पर पुरी आ जाती है। सभी यात्री यहां दण्ड प्रणाम करते हैं, चारों तरफ बर्फ की चोटियां दिखाई देती हैं। पहाड़ के नीचे उतरिये मैदान आ जाता है। अनेक मकान बन गये हैं। पुल पार करो साक्षी गोपाल के दर्शन हैं लक्ष्मी धारा ऋषि गङ्गा धवल गिरी से निकलती है। आप ने जिस की आशा में इतने कष्ट उठाये वहां आ गये।

भारत के चार धामों में पावन बद्री धाम बद्रिकाश्रम

है। पुरी वर्तमान कस्बा है। लम्बा बाजार कई धर्मशाला हैं। हजारों मकान हैं परन्तु सन् १६४८ तथा ५० में हिम पर्वत के गिरने से पुरी को बहुत क्षति हुई। पिछले वर्ष अलक नन्दा के चढ़ाव से मन्दिर की दीवार को भी धक्का लगा है। ये पुरी ऊत्तर की ओर अलक नन्दा के दाहिने तट पर बसी है। समुद्र तट से ११४०० फुट की ऊंचाई पर है। बस्ती एक मील चौड़ी, तीन मील लम्बी है। भगवान का मन्दिर पत्थर का बना हुआ है। इस का ४५ फुट ऊंचा पूर्व का मुख्य द्वार है। इस के ऊंचे शिखर पर दोहरी चकुटी है, इसे में चार द्वार हैं। मन्दिर के अन्दर ही सामने एक हाथ ऊंची श्री बद्रीनाथ नारायण की श्यामल मूर्ति है। जो बहुमूल्य वस्त्र तथा आभूषण और विचित्र मुकुट से है।

लिलाट में हीरा लगा हुआ है, नर, नारायण, नारद, गणेश, गरुड़, उद्धव, की मूर्तियां हैं। कुबेर का मुख मात्र है। कहा जाता है बद्रीनाथ जी गुप्त थे श्री आद्य शङ्कराचार्य ने स्थापित किये।

बद्रीनाथ के मन्दिर के पीछे धर्म शिला नाम की एक शिला है। बायीं ओर एक कुण्ड है। उत्तर की ओर एक कोठरी में घण्टा कर्ण हैं, पूर्व मैदान में पाषाण की बड़ी गरुड़जी की मूर्ति है। मन्दिर के दक्षिण की ओर गुम्बजदार लक्ष्मी जी का मन्दिर है। पास ही में भण्डार है जिस में भगवान के भोग लगाने को तीन मन भात (चावल) पकता है।

यात्रियों को अपना २ पण्डा मिल जाता है। वही वस्त्र दे

देते हैं जिस से यात्री शीत से बचते हैं। साधु सन्त बाबा जी की धर्मशाला में ठहरते हैं। यात्री की पण्डा लोग अच्छी आव भक्ति करते हैं। यात्री को सदा सावधान रहना चाहिये। ब्रह्म ताल में स्नान कर के भगवान के मन्दिर में पहुँचना चाहिए। मन्दिर छोटा है १५, २० आदमी मुश्किल से खड़े हो सकते हैं। कभी २ प्रबन्ध ठीक न होने से यात्री कुचले भी जाते हैं पट खुलने के समय जब ज्योति के दर्शन होते हैं, उस समय महान भीड़ होती है। भगवान की भेंट में तुलसी की माला चने की दाल पांच मेवा और मिष्टान्न ले जाना चाहिये।

भाव भक्ति विश्वास बिन, कटे न संशय शूल।
कहे 'कबीर' हरि भक्ति बिन, मुक्ति नहीं रे मूल ॥

॥ पञ्च तीर्थ ॥

बद्री आश्रम में ऋषि गंगा, कूर्म धारा, तप्त कुण्ड, नारद कुंड यह पांच पावन कुंड हैं.। इन्हीं को पञ्च तीर्थ कहते हैं [१] ऋषि गङ्गा बद्रीनाथ से ३॥ मील पर है। जो आगे अलकनन्दा में मिली है। [२] कूर्म धारा बद्रीनाथ से कुछ दूर दक्षिण की ओर दीवार में है। [३] प्रहलाद धारा कूर्म धारा से उत्तर की ओर एक चबूतरे के नीचे से नल के द्वारा गिरती है [४] तप्त कुंड बद्रीनाथ मन्दिर के सामने ६५ सीढियों के नीचे है अलकनन्दा संकीर्ण होकर बहती हैं। मन्दिर का प्रबन्ध उत्तर प्रदेश की सरकार के हाथ में है। प्रथम टिहरी गढ़वाल नरेश करते थे।

॥ पञ्च शिला ॥

(१) बाराह शिला, (२) नारद शिला, (३) मार्कण्डे शिला (४) नरसिंह शिला, ये सब तप्त कुण्ड के पास हैं। केदारेश्वर महादेव जी के दर्शन हैं। श्री शङ्कराचार्य जी की मूर्ती रामानुज कोटि श्री वैष्णवों का स्थान है तप्त कुण्ड पर किया हुआ दान कोटि गुना फल देता है।

॥ ब्रह्म कपाली ॥

बद्रीनाथ के मन्दिर से लगभग ४०० गज उत्तर अलक नन्दा के दाहिने किनारे पर चट्टान है। जिस पर बैठ कर यात्रि गण पिण्डदान करते हैं। याद रहे वर्तमान समय में, जब गया में पिंड दान करने से पितरों की गति नहीं होती, तब उनके लिये यहां बतलाया है। माता पक्ष वाले पिता पक्ष वाले, पिता पक्ष वाले मित्र सुसराल सभी प्रकार के दुर्गति जीवों का यहीं उद्धार होता है। जान से अजान से भक्ति व अभक्ति से जिसने पितरों के निमित पिण्ड दान किया है। उस का कल्याण है।

॥ अलक नन्दा ॥

ये उत्तर की ओर सत पथ से अलकनन्दा पुरी पहाड़ बद्रिकाश्रम में आकर, वहां से दक्षिण पश्चिम की ओर १११॥ मील पर देव प्रयाग में भागीरथी में मिली है, दो मील आगे माता मूर्ति के दर्शन हैं। यहीं माना गांव है। एक मील चढ़ाई पर "वसुधारा" है आषाढ़ और श्रावण में बर्फ कम होने से यहां

पर यात्री स्नान को जाते हैं। यहां पूर्व काल में आठ वसुओं ने तप किया था। यहां ऊंचे पहाड़ से दो धारा गिरती हैं। पास में धर्मशिला मुचकुन्द गुफा, व्यास गुफा, गणेश गुफा आदि अनेक तीर्थ हैं। जिन का अधिक विस्तार केदार खण्ड में देखें। अलक नन्दा के पार महात्मा की कुटी है। यात्रियों को घूम फिर कर लाभ उठाना चाहिये। यहाँ बद्रिकाश्रम है। जिसे आप पुराणों में सुनते हैं। जिस प्रकार पांच केदार हैं उसी प्रकार पांच बद्री हैं उनके नाम इस प्रकार हैं। आदि बद्री, करण प्रयाग से ११ मील पर। विशाल बद्री (बद्रीनाथ) भविष्य बद्री जोशी मठ के पास। योग बद्री पाण्डुकेश्वर में। ध्यान बद्री कुम्हार चट्टी के नीचे। ये पांच बद्री हैं।

॥ शत पथ यात्रा ॥

श्री बद्री धाम से १६ मील पर है। ये मार्ग केवल आषाढ और श्रावण में खुलता है। बद्रीधाम से दो मील सीधा है। फिर पांच मील कठिन मार्ग से चल कर लक्ष्मी बन तथा अलका पुरी से बर्फ ही बर्फ में अन्दर ही अन्दर अलक नन्दा के आने के पश्चात् सब से पहिले भूमण्डल पर प्रवाह रूप में प्रकट होने का अच्छा मनोरञ्जक और चिताकर्षक दृष्य है। इस से आगे कुछ और विकट मार्ग होकर चार मील की चढ़ाई पर श्री नर नारायण पर्वत से गिरती हुई शत धाराओं का दर्शन होता है। आगे चक्र तीर्थ है, वर्तुलाकार बहुत बड़ा मैदान है यहां पहुंचते ही प्रकृति देवी के सौंदर्य की पराकाष्टा को प्राप्त ऋषि भावों

का अनुभव होता है। और इस निर्जन स्थान में स्वतः स्थाई निवास करने को चित्त चाहता है। फिर सीधे आध मील की चढ़ाई पर सामने के बड़े पत्थर के समीप पहुंचना पड़ता है। यहां से डेढ़ मील सीधे पश्चिम की ओर चल कर (बर्फ की आकों पर से हो कर चलना पड़ता है) सन्मुख काले पहाड़ की तलहटी में शत पथ [सरोवर] डेढ़ मील के घेरे में है। इस का आकार शुद्ध त्रिकुटी का है। शुद्ध निश्चल जल निर्मल है। इस से आध मील आगे चन्द्र कुण्ड है। और एक मील आगे सूर्य कुण्ड है। सामने हिमालय के शृङ्ग सीढ़ियों की तरह दिखलाई देते हैं जिसे स्वर्गारोहण कहते हैं, पांचों पांडव द्रोपदी सहित इसी मार्ग से गये थे। वास्तव में यह स्थान स्वर्ग के तुल्य ही है यदि शीत न सतावे तो भगवान का साक्षात बैकुंठ है। चक्र तीर्थ को प्रातःकाल जाना चाहिये। यहां लकड़ी नहीं होती हैं। साथ में खटाई युक्त शुष्क भोजन बना कर ले जाना चाहिए। रहने को गुफायें हैं जो सदा टपकती रहती हैं। आप को याद रहे यह सब रास्ता कठिन और भयानक है।

❀ श्री बद्री नाथ जी का ❀

* संक्षिप्त इतिहास *

प्राचीन तथा आधुनिक सभ्यता शिक्षा तथा मानवता का प्रसार करने वाली भारत भूमि का स्थान पौराणिक तथा वैदिक दृष्टि से संसार भर में सर्वोच्च माना गया है। यावत

१—श्री बद्रीनाथ मन्दिर कमेटी के सौजन्य से प्राप्त।

संसार में विभिन्न धर्मावलम्बी, विज्ञान कला कुशल, नीति निपुण और प्रमुख शास्त्रकारों ने देवताओं की क्रीड़ा स्थली को भारत भूमि के नाम से पुकारा है।

इस में अत्युक्ति नहीं। जब २ धर्म का ह्रास हुआ तब २ रक्षार्थ इसी पतित पावनी भूमि में स्वयं भगवान् प्रकट हुए हैं। अनादि काल से भारत भूमि में चार धाम प्रसिद्ध हैं। बद्रीनाथ के अतिरिक्त अन्य तीन धाम भगवान क्रीड़ा स्थली के रूप में हैं। परन्तु पुण्यतर बद्री वन में स्वयं भगवान् ने धर्मांश माता मूर्ति के गर्भ से नर-नारायण के रूप में अवतार ले कर प्रत्यक्ष रूप से लोक कल्याणार्थ भीषण तपस्या प्रारम्भ की। स्कन्दादिक पुराणों में इस का विस्तृत रूप से वर्णन किया है। फलतः इन की घोर तपस्या को देख कर इन्द्र जी घबराये कि कहीं यह तपस्वी अपनी तपस्या से मेरे इन्द्रासन को न छीन ले। इस भय से तप भङ्ग करने को काम सैना की मैन का आदि प्रमुख अप्सरायें भेजीं। वे अपने हाव-भाव नेत्र कटाक्षों से इन को चलायमान न कर सकी। परन्तु भगवान ने इन के मान मर्दन करने को अपने वाम उरुभाग को मल कर उर्वशी को पैदा किया और उर्वशी का अलौकिक सौन्दर्य देख इन्द्र का अप्सरायें बड़ी लज्जित हुईं और भगवान से क्षमा याचना करने पर भगवान ने उर्वशी को भी उन्हीं के साथ इन्द्र के पास उपहार रूप में भेज दिया। फलतः इन्द्र जी को भी क्षमा याचना करनी पड़ी।

अखिल ब्रह्माण्ड के नायक भगवान ने नर-नारायण के रूप में कृत युग में तपस्या का आदर्श स्थापित करने के लिये कतिपय वर्ष पर्यन्त तपस्या की। तत्पश्चात् नारायण श्री कृष्ण रूप से, नर अर्जुन रूप से प्रकट हुए। अवतार धारण करने पर ऋषि-मुनियों ने भगवान् से प्रार्थना की कि हे प्रभो ! आप शाश्वत एक रूप से बद्री बन में निवास करें। और एक ही रूप में अवतार लें। इस पर भगवान ने मुस्करा कर कहा. हे ऋषियों अब कलि काल आने वाला है। इस कलियुग में मेरा साक्षात् दर्शन होना असम्भव है। अतः कलि कल्मश विध्वंस के लिये नारद कुण्ड में मेरी दिव्य मूर्ति है। उस की स्थापना करो। उसी मूर्ति के दर्शन करने से साक्षात् दर्शन का फल प्राप्त होगा।

भगवान् के वचनों को शिरोधार्य कर ऋषियों की प्रार्थना करने पर ब्रह्मादि देवताओं ने द्वापर में नारद कुण्ड से मूर्ति को निकाल कर स्थापित किया। और देवताओं के प्रधान शिल्पकार विश्वकर्मा ने मन्दिर बनाया। नारद जी इस के पुजारी नियुक्त हुए।

जब असुर यज्ञ करने को उद्यत हुए तो उन को हटाने के लिये भगवान् ने बुद्ध अवतार लिया। बौद्धों ने बद्रीनाथ की पद्मासन युक्त मूर्ति को बुद्ध भगवान की मूर्ती समझ कर उस की पूजा प्रारम्भ कर दी।

ईसा ८ वीं शताब्दी में कैलाश वासी भगवान् शङ्कर के अवतार शंकराचार्य जी ने जन्म लिया। जब शंकराचार्य जी

ने बौद्धों को पराजित किया तो तद्धर्मावलम्बी शक, हूण, आदि तिब्बत की ओर भाग गये। और भागते हुए बदरीनाथ की मूर्ती को नारद कुण्ड में फेंक गये जिससे कि मूर्ति खण्डित हो गई।

जब शंकराचार्य जी ने मूर्ती को मन्दिर में नहीं देखा तो ध्यानावस्थित हो कर नारद कुण्ड से मूर्ती को निकाल कर पुनः स्थापित किया। शंकराचार्य के आदेशानुसार मठ का अधिपति केरल प्रान्त का नम्बूद्री ब्राह्मण और उस की परम्परा का सन्यासी शिष्य होता था। बहुत कालान्तर तक इसी प्रकार पूजा होती रही। पश्चात् एक मठाधिपति का देहावसान हो गया। उस का कोई भी शिष्य न रहा। अब भगवान की पूजा का बन्द होना भी सम्भव न था। अतः "टिहरी नरेश" ने मन्दिर के संरक्षक सन्यासी के रसोईया को रावल की उपाधि देकर उसे बद्रीनाथ की पूजा का अधिकार दे दिया। तब से इसी प्रथा के अनुसार नम्बूद्री ब्राह्मण ही भगवान की पूजा करते हैं।

❀ श्री बद्रीधाम का माहात्म्य ❀

धन्याः कलियुगे घोरे ये नरा बदरी गताः।
यत्रब्रह्मादयो देवा हरिः भक्तिरताःप्रिये ॥१३॥

अर्थ—नारायण की भक्ति में लीन हो कर जहां ब्रह्मादि देवता रहते हैं। उस बद्री बन की जो प्राणी कलियुग में यात्रा करते हैं। वे बहुत ही भाग्यशाली हैं।

निवसंति स्थले रम्ये नाना तीर्थ विराजिते ।

धन्यः स एव लोकेषु यो गच्छेद्बदरी नरः ॥ १४ ॥

अर्थ—अनेक तीर्थ हैं जिस बद्रीकाश्रम में जो मनुष्य वहां रह जाता है। उस के लिये अनेक धन्यवाद और वह धन्य है।

मनसापि च ये लोका बदरी बन माश्रिताः ।

ते वै वास फलं देवि प्रप्नुवंति न संशयः ॥ १५ ॥

अर्थ—उन जीवों के पुण्य की महिमा क्या कही जा सकती है। जो मन में ही श्री बद्रीनाथ का आश्रय ले लेते हैं। हे देवि उन को भी निवास करने का फल मिलता है। इस में जरा भी संशय नहीं।

ये तत्र वासिनो लोका बदर्य्याश्रम मण्डले ।

विष्णु रूप धराः सर्वे भवन्ति वर वर्णिनि ॥ १६ ॥

अर्थ—बद्रिकाश्रम में निवास करने वाले जीव साक्षात विष्णु रूप समझने चाहियें।

इदं चतुर्थ माख्यातं क्षेत्रं परम पावनम् ।

स्थूलं सूक्ष्मं सूक्ष्मतरं शुद्धं चेति प्रकीर्तितम् ॥ १७ ॥

अर्थ—यह चौथा धाम बहुत पवित्र है। स्थूल सूक्ष्म से सूक्ष्म और शुद्ध गाया गया है।

योजनत्रयविस्तीर्णं दीर्घं द्वादश योजनम् ।

आगम्यं पापिनां तद्वै महदैश्वर्यदायकम् ॥ १८ ॥

अर्थ—यह तीन योजन चौड़ा और बारह योजन लम्बा है।

पापियों के लिये अगम्य और हरि भक्तों के लिये महान् ऐश्वर्य देने वाला है।

मनसापि स्मरेद्यो वै विशाले बदरीति च।
तद्वासी सोऽपि विज्ञेयो मृतो मुक्ति मवाप्नुयात् ॥ १९ ॥

अर्थ—जो विशाला पुरी को मन से भी याद करता है। उसे बद्रीकाश्रम का निवासी समझना चाहिये। मृत्यु समय वह भी मुक्त हो जाता है।

गंधमादनवद्री नर नारायणाश्रमः।
कुबेरादि शिला रम्यो नाना तीर्थ विराजितः ॥ २० ॥

अर्थ—गन्ध मादन, बदरी बन, और नर नारायण का आश्रम, और भी कई तीर्थ कुबेर की शिला इत्यादि।

सर्वैदेव गणैर्युक्तोनाना मुनि गणान्वितः।
चिह्नं तत्र प्रवक्ष्यामि येन ते प्रत्ययो भवेत् ॥२१॥

अर्थ—शिव जी ने कहा यह सर्व देवता मुनि का स्थान है। इस के और भी चिन्ह बतलाता हूँ। जिस से तुम को विश्वास हो जाय।

तप्तोदकमयी धारा वह्नितीर्थ समुद्भवा।
वर्त्तते सुभगे देवानामपि दुर्लभा ॥ २२ ॥

अर्थ—अग्नि तीर्थ से पैदा हुई एक तप्त धारा है। उस में सदा जल गरम रहता है। उस का मिलना देवों को भी दुर्लभ है।

बदरीनाथ नैवेद्यं यो मोहात्तु परित्यजेत् ।
चाँडालदधमो ज्ञेयः सर्व धर्म बहिष्कृतः ॥२३॥

अर्थ— जो प्राणी प्रमाद कर के श्री बद्रीनाथ का प्रसाद त्याग देता है। उस को चांडाल से भी नीच समझना चाहिये। उस के सब शुभ कर्म नष्ट हो जाते हैं।

लक्ष्मीः पचति नैवेद्यं भुंक्ते नारायणः स्वयम्।
चाँडाले मापि संस्पृष्टं न दोषाय भवेत् क्वचित् ॥ २४॥

अर्थ—स्वयं लक्ष्मी जी नैवेद्य को बनाती हैं। और नारायण भोग लगाते हैं। यदि चाण्डाल भी उसी को छू लेवे। तो दोष नहीं होता।

ये न भुक्तं तु नैवेद्यं श्री विष्णोः परमात्मनः ।
सैव लोकेपरब्रह्मस्वरूपो नात्र संशयः ॥ २ ५ ॥

अर्थ—जिस ने बद्रीधाम का नैवेद्य खाया। उसे ब्रह्म रूप समझना चाहिये।

बदरीनाथमूर्तिं वै मनसापि समरेत्तु यः ।
तेन तप्तं तपस्तीव्रं दत्ता तेन धरा खिला ॥ २६ ॥

अर्थ—जो प्राणी मन करके भी भगवान बद्रीनाथ की मूर्ती का स्पर्श करता है। उसने महान तप और अखिल भूमि का दान किया।

माषमात्रं तु यो दद्यात्सुवर्णं रजतं हिवा ।

जन्मान्तर सहस्त्रेषु दारिद्रयं नोप जायते ॥ २७ ॥

अर्थ—जो प्राणी एक माशा भी स्वर्ण व चांदी का दान यहां आ कर करता है। वह हजारों जन्म तक दरिद्र नहीं होता।

कणमात्रमपि जलं पितृनुद्दिश्य येन वैं।

दत्तं तेन कृतं सर्वं पितृणाँ मुक्ति कारणम् ॥ २८ ॥

अर्थ—जो प्राणी कण मात्र भी जल दान करता है। उसने उनके लिये मुक्ति के सब साधन कर दिये।

लोभ मोह समा विष्टे कलौ धर्म विवर्जिते।

नरास्त एव धन्याः स्युर्बदरीं ये गताः प्रिये ॥ २९ ॥

अर्थ—कलियुग के प्राणी लोभ मोह काम मद से घिरे हैं। तिस पर उन जीवों को धन्य है जिसने यात्रा की है।

गमिष्यामि विशालां वै यो वै कथयते निशम्।

सोपि तत्फल माप्नोति बदरीनाथ दर्शनात् ॥ ३० ॥

अर्थ—जो प्राणी बद्रीनाथ की यात्रा की इच्छा करते हैं उन को बद्रीनाथ यात्रा का फल मिलता है।

बदरीवासिनो लोका विष्णुतुल्या न संशय।

येशां दर्शन मात्रेण पापराशिः प्रणश्यति ॥ ३१ ॥

अर्थ—बद्रिकाश्रम में रहने वाले सब विष्णु तुल्य हैं उन के दर्शन मात्र से पाप का नाश होता है।

तसमात्सर्वं प्रयत्नेन घोरे कलियुगे नरैः।

कर्त्तव्यो बदरी वासः पापिनामपि मुक्तिदः ॥३२॥

अर्थ— इस लिये इस घोर कलियुग में जीवों को उत्तराखण्ड में रहना चाहिये। यहां पापी भी मुक्त हो जाते हैं।

न काशी न तथा कांची मथुरा न गया तथा।

प्रयागश्च तथायोध्या नावन्ति कुरुजांगलम् ॥ ३३ ॥

अर्थ—इस कलिकाल में काशी, कांची मथुरा, गया प्रयाग, उज्जैन, अयोध्या, कुरुक्षेत्र कोई भी तीर्थ यहां की समानता नहीं कर सकता।

अन्यान्यपि च तीर्थानि यथा सौ कलिनाशिनी ।

बदरीतरुणा या वै मण्डिता पुण्यगा स्थली ॥३४॥

अर्थ—बद्रीनाथ के समान कोई अन्य तीर्थ भी नहीं है यही कलि के पाप नाश करने वाला पवित्र स्थान है।

यत्र साक्षात्सरिच्छ्रेष्ठा गङ्गा पापौघनाशिनी ।

विष्णोश्चाप्यत्र सान्निध्यँ सर्वपापप्रणाशनम् ॥३५॥

अर्थ--जहां पापों का नाश करने वाली गङ्गा जी। और भगवान विष्णु विराजमान हैं।

यत्र ब्रह्मा च रुद्रश्च विश्णुश्चैव सुरोत्तमाः।

गन्धर्वाप्सरसश्चैव किन्नरा गुह्याकास्तथा ॥३६॥

अर्थ—जहां ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु, इन्द्रादि देवता गन्धर्व अप्सरा गुह्यक।

प्रमथा यक्ष रक्षांसि वसन्ति हरि मानसाः ।

एतत्परात्मकँ क्षेत्रं न त्याज्यँ मुक्तिमिच्छता ।।३७।।

अर्थ--महादेव के गण और राक्षस नारायण में मन लगा कर रहते हैं, मुक्ति की इच्छा वाले इसका त्याग न करें।

यावत्प्राणाः शरीरस्मिन् यावदिंद्रिय शुद्धता ।
गात्राणि यावच्छैथिल्यँ नाप्नुवँति महेश्वरि ॥३८॥
बद्रीगमने तावद्विलम्बो न विधेयकः ।।

अर्थ--जब तक शरीर में प्राण हैं, और इन्द्रिया सबल हैं जब तक अंगों में शिथिलता (कमजोरी) नहीं आई. श्री बद्रीनाथ की यात्रा कर लेनी चाहिये।

चरणानाँ च साफल्यँ कुर्याद्बदरिका गमात्।
नेत्र यौश्चैव साफल्यँ कुर्याद्विष्णोश्च दर्शनात् ।। ३९ ।।

अर्थ—अपने नेत्रों को भगवान के दर्शन से और चरणों को बद्री नाथ की यात्रा करके सफल करना चाहिये।

तस्य वै जन्म सफलँ तस्यैव सफलँ तपः ।
बदरीबनमध्यस्थो देव एव न सँशयः ॥ ४० ॥
यस्तँ नमति भक्तया वै तस्य पापक्षयो भवेत् ॥

अर्थ—उसी का जप और तप जन्म सफल है जो भक्ति भाव से श्री बद्रीनाथ जी को प्रणाम करता है। उस के सभी पाप नाश हो जाते हैं। और जो बदरी बन में रहता है वह अवश्य निसंदेह देवबन जाता है।

केदारखण्ड से बद्रीनाथ का महात्म्य अध्याय ५७

❀ समाप्त ❀

* श्री बद्री विशाल की बखशीस *



नन्द लाल चौधरी आयु ७॥ वर्ष

पाठकों को विदत होगा, हमारा कार्यालय पाकिस्थान मु० हिम्मतपुर, पो० लमूरी (शुजाबाद) जिला मुलतान में था। वहां के जमीदार चौ० रोशन दास (दम्पति) हमारे साथ १६३२ में बद्री धाम की यात्रा को गये, वहां भगवान से पुत्र प्राप्ति की प्रार्थना की, यह वही चिर जीवी बालक है।

निम्नलिखित स्थानों की ऊंचाई इस प्रकार है—

श्री केदारनाथ	११७६०	फुट
श्री बद्रीनाथ	११४००	फुट
श्री यमुनोत्तरी	१२६८०	फुट
श्री गङ्गोत्तरी	६६५०	फुट
श्री नीलकण्ठ	२१६६६	फुट
श्री कण्ठ	२०१४६	फुट
श्री त्रिशूल	२३३००	फुट
श्री धवलगिरि	२६७६५	फुट
श्री नङ्गा पर्वत	२६७२०	फुट
श्री पञ्च मूली	२३६५०	फुट
श्री कांचन चङ्गा	२८१४६	फुट
माऊँट एव रेष्ट (गौरी शङ्कर	२६००२	फुट

हिमालय की माऊँट एवरेस्ट चोटी जो अब तक अबिजय थी उस को कर्नल हंट के नेतृत्व में भारत के सपूत शेरपा और न्यूजीलेंड़ निवासी हिलेरी ने २६ मई सन १६५३ ई० को विजय कर लिया। और मानव विजय की खुशी में ध्वज फहरा दिये,

पुरी धाम से लौट कर आप पाण्डु केश्वर आईये। यहां से सप्त शृङ्ग (हेम कुंड) लोक पाल पर्वत को रास्ता जाता है।

* प्रथम संस्करणों में दी हुई ऊंचाई में कुछ भूल थी, पर इस में भी प्रथक २ मत हो सकते हैं।

जहां श्री गोविन्द सिंह जी ने पूर्व जन्म में तप किया था। यह स्थान लगभग १२ मील है।

साथ में कोई पहाड़ी भेदिया अवश्य ले जाना चाहिये। एक मील घाट चट्टी जा कर एक साधारण लकड़ी का पुल पार कर के दाहिने हाथ चल दें। आध फर्लाङ्ग पर हेम नदी (लक्ष-मण गङ्गा) आ जाती है। आप इसी के किनारे २ चलो। दो मील पूल गाऊ गांव आ जाता है. रास्ता कठिन और भयानक ऊंचा नीचा जङ्गल का है, पुलगाऊ से चार मील भुंडार गांव है यहां से हेम नदी पार कर के एक मील पर सुन्दर बन आ जाएगा। नाना प्रकार की जड़ी और अनेक प्रकार के पुष्प मन को मुग्ध कर देते हैं मनिराम इस रमणीक स्थान को त्यागना नहीं चाहता। आगे पौन मील घाघरा धर्मशाला स्थान है। यह सप्त शृङ्ग पर्वत की जड़ में है। यह स्थान सुन्दर भी है और भय दायक भी। मल मूत्र यहां कर लेना चाहिये। लोक पाल पर्वत पर जो मल मूत्र करता है उसे नाना प्रकार के कष्टों का अनुभव करना पड़ता है, जूता, चमड़े की भृष्ट वस्तु आगे साथ नहीं ले जानी चाहिये। आप का मार्ग ३ मील का है। पर है कठिन प्रथम साधारण चढ़ाई, पश्चात कठिन चढ़ाई आ जाती है। बीच में एक गुफा है। जहां टिहरी के सन्त सोहनसिंह जी निवास किया करते थे। यहां ब्रह्म कवल बहुत होता है जिस की सुगन्धी से सारा स्थान दूर दूर तक महक रहा है। पृथ्वी से दो फुट इस की ऊपर नाल होती है। यह स्थान समुद्र तल से १२,००० फुट ऊंचा है। कई मीलों के घेरे में है। थोड़ा ही

आगे चल कर वत स्थान है जहां कलगी घर (गुरु गोविन्दसिंह) जी ने तप किया है। यहां एक सरोवर है जिसकी परिक्रमा १ मील की है। यह स्थान समुद्र तल से १४,००० फुट ऊंचा है यहां तप शिला और सिख भाईयों ने कुरुद्वारा बनाया है।

---

* नौवां प्रकरण *

❀ नन्द प्रयाग व देव प्रयाग को ❀

पीपल कोटि वापिस आ कर आप मोटर पकड़ सकते हैं। यहां से १२॥) रुपया ऋषिकेश का लगता है। यात्रि समय की बचत कर के शीघ्र पहुँच जाता है। पैदल चलने वाले अलकनन्दा के किनारे २ जाते हैं। लाला सांगा से सात मील नन्द प्रयाग है। मार्ग पथरीला है बीच २ में दुकानें मिल जाती हैं। दो मील कुहेड़ चट्टी आगे दो मील मठाणा है स्थान अच्छा जल सुन्दर है। यहां से नन्द प्रयाग सात मील है, अलकनन्दा में नन्दा नदी का सङ्गम है। पांच प्रयागों में चौथा प्रयाग है। नन्द नामक राजा ने यज्ञ किया था, इस लिये इस जगह का नाम नन्द प्रयाग हुआ सभी देवताओं ने प्रगट होकर अपना २ भाग लिया था। यहां से एक योजन पर विरह नदी है जहां शङ्कर जी ने सती

के लिये तप किया था। कण्व ऋषि का भी आश्रम यहीं बतलाते हैं।

गोपाल जी का मन्दिर है छोटा बाजार है, केदारखंड के भाषा टीका करता श्री पं० महेशानन्द जी का प्रधान कार्यालय है यहां से तीन मील सोनला चट्टी है। मार्ग सीधा सम रहने का स्थान अच्छा है। आगे तीन मील नंगासू दो मील जय कंडी है। यहा से ४॥ मील पर कर्ण प्रयाग है यह पांच प्रयागों में पांचवां प्रयाग है। मार्ग में कई दुकानें आती हैं। कर्ण प्रयाग एक साधारण कस्बा है। डाक घर तार घर हस्पताल मोटर स्टेंड पुलिस चौकी है। पिंडर नदी का अलकनन्दा में सङ्गम है। करणेश्वर महादेव के दर्शन हैं। सङ्गम नीचे उतर कर मैदान में है। बस्ती चढ़ाई पर पुल के पार है। बाबा काली कमली वाले की धर्मशाला सदावृत है। कहते हैं महाराजा कर्ण ने यहां यज्ञ किया था। यहां से दो मार्ग हैं एक ऋषिकेश को दूसरा काठ गोदाम राम नगर को।

॥ ऋषिकेश को ॥

हम आप को प्रथम ऋषिकेश ले जाना चाहते हैं। कर्णप्रयाग से बटुआ पीपल चार मील है आगे दो मील गोचर सैण है चार मील आगे कमेड़ा ३॥ मील आगे शिवनन्द चट्टी है। यह मार्ग बहुत अच्छा है, जल का झरना और सब वस्तु मिल जाती हैं। यहां से रुद्र प्रयाग सात मील है। मार्ग सीधा और साफ है। कहीं तो मार्ग ऐसा सुहावना है जो चित्त आनन्दमय हो जाता है। मार्ग में कुछ नई चट्टी भी बन गई हैं गोचर भूमि

वह स्थान है जहां अपना देश याद आता है, सुन्दर मैदान है चौड़ी सड़क है बड़ के पेड़ हैं। कहते हैं कि इस पहाड़ में लोहा और सोना है। कुछ काल पहले बद्रीनाथ की हवाई यात्रा का हवाई अड्डा भी यहीं था। शिव नन्दा चट्टी से रुद्रप्रयाग सात मील है। रुद्र प्रयाग से ऋषिकेश ६१ मील, पिछले मार्ग से सीधा जाना पड़ता है।

॥ कर्ण प्रयाग से गणाई राम नगर को ॥

करण प्रयाग से शिमली ४ मील है। मार्ग सीधा और धर्मशाला है आगे २ मील सितरौली मामूली चढ़ाई है। आगे १॥ मील भटोली यहां से कुछ दूर चान्दपुर गढी गढ़वाल का पुराना किला है किसी समय गढ़वाल नरेश की राजधानी थी, आगे चार मील आदि बद्री भगवान का मन्दिर है यहा पर झरने का जल पीना चाहिये स्नान नदी में करना चाहिये। आगे ३॥ मील खेती चट्टी है मार्ग चढ़ाई का है बाबा जी की धर्मशाला है, आगे दो मील दिवाली खाल है। पानी का नल धर्मशाला है। आगे ४॥ मील ग्वाड़ गधेरा है, मार्ग उतार का। १॥ मील की दूरी पर धुनार घाट है भगवती रामगङ्गा का प्रवाह है, यही मुरादाबाद के पास को बहती है डाकखाना हस्पताल पुलिस चौकी है, दुकानें हैं जिन में सामान आवश्यक मिल जाता है यहां से ५ मील चौड़ी है आपके यदि कुली हैं तो यहां बदल जायेंगे, नई सवारी का प्रबन्ध हो जाता है, यह स्थान बद्रीनाथ से ९६ मील पर है करण प्रयाग २८

मील पर है मैल चौड़ी से पटुआ ग्वाल १ मील खेत दो मील आगे गणाई (चौखुटिया) ५।। मील है मार्ग उतार का है। राम गङ्गा पर लोहे का पुल है धर्मशाला डाक तार घर सरकारी चौकी हस्पताल भी है, यहां से दो सड़क हो जाती हैं, एक सीधी रानी खेत अलमोड़ा को गई है, दूसरी सड़क द्वारा आप राम नगर को जा सकते हैं

।। गणाई से राम नगर को ।।

यहां से दो मील पर भरकोट है, कुछ दुकानें हैं पास ही में है, एक मील आगे भगौती चट्टी है, आध मील पर पानी का झरना है १ मील स्यार (गणेष) चट्टी है, आम का बगीचा धर्मशाला है, आध मील आगे राम गङ्गा के तट पर नर मदेश्वर महादेव जी का मन्दिर है, पास में धर्मशाला दुकानें हैं। यहां से २।। मील मासी है। और यहां से चार मील बूढ़े केदार हैं, गङ्गा जी के पार।

आगे ३।। मील नाला चट्टी है, दुकाने हैं और जल है, गङ्गा जी के पास बागड़ी धर्मशाला है ३ मील आगे भकिया सैण है जहां राम गङ्गा में गङ्गेश्वरी नर्मदेश्वरी नदियों का संगम है डाकखाना तार घर धर्मशाला है, गङ्गा जी के पार ६ मील श्री कोट है जल का अभाव है, यहां से गाड़ी की सड़क शुरू हो जाती है, २ मील बसोट है यहां पानी पास में है मार्ग सब चढ़ाई का है, बासोट से ३।। मील ग्वाल खान है एक छोटी सी धर्मशाला भी है मार्ग बहुत खराब हैं पानी लाने के लिये ३ मील कुलाब घाटी है मार्ग चढ़ाई का जल और स्थान का कष्ट

है, यात्रि जल मोल ले कर निर्वाह करते हैं अब रास्ता सीधा गया है। बैल गाड़ी, घोड़ा भी मिल जाता है। आगे तीन मील पर मच्छौर है, एक दुकान, जल बिल्कुल नीचे से लाना पड़ता है, आगे पनवा घोख दो मील है। धर्मशाला और जल पास में है।

यहां से दो मील गोंदी चट्टी है जल के लिये नल, आगे ६ मील पर टूटा आम, सरकारी धर्मशाला जल पास हैं। आगे दो मील सौराल चट्टी, फिर दो माल पर कुमारिया चट्टी जल कौसी नदी का आता है, वह भी आध मील पर, ६ मील की दूरी पर मोहन चट्टी है। सरकारी डिपो पानी कोसी नदी का है।

आगे पांच मील पर गर्जिया चट्टी है। रास्ता उतार का, लगभग ८ मील यहां से राम नगर, यह एक मंडी है। सब प्रकार का सामान मिल जाता है। बड़ा बाजार रेलवे स्टेशन है अब धर्म शाला भी बन गई, श्री रामचन्द्र जी का मन्दिर, पेड़ों की छाया जल कोसी नदी का पीया जाता है। चौर-कुटिया पुल से महा कालेश्वर ४ मील है। आगे ६ मील द्वारा-हाट चन्द्रेश्वर ३ मील और ४ मील ककरा है, यहां से भागस ४ मील, ३ मील कोटली। और यहां से २ मील रानी खेत यहां से मोटर मिल जाती है, काठ गोदाम पहुंच जाइये, मार्ग तो वापसी के बहुत हैं परन्तु सीधा रास्ता कम खर्च का ऋषि-केश वाला ही है। चढ़ाव उतार भी कम है। शास्त्र की मर्यादा भी यही है जहां से यात्रा प्रारम्भ करे वहीं वापिस समाप्त

करे।

॥ टेहरी को ॥

ऋषिकेश से देव प्रयाग हो कर यमनोत्री १५२ मील है देव प्रयाग तो हम पीछे लिख चुके हैं, कि अधिकतर यात्रि गङ्गोत्री जमुनोत्री को देव प्रयाग होकर जाते हैं। हम उसी का वर्णन करते हैं. देव प्रयाग से गङ्गा जी का पुल पार कर के किनारे २ सड़क जाती है। दस १० मील पर खरसाड़ा, स्थान अच्छा मार्ग चढ़ाव उतार का है। यहां से ४ मील कोटेश्वर महादेव जी। आगे ६ मील बड़वा, स्थान अच्छा है। आगे ८ मील पर क्यारी चट्टी है एक दुकान पानी का झरना समीप है। आगे ६ मील खास टेहरी, मार्ग बहुत खराब कष्ट प्रद है गंगा जी का पुल पार कर के टेहरी नगर में जाते हैं। पुल पर पहरा रहता है, नियत समय पर फाटक बन्द हो जाता है। अब हम एक और रास्ते का वर्णन करते हैं। ऋषिकेश कैलाश आश्रम के पास से नरेन्द्र नगर को सड़क जाती है इस की दो शाखा हैं एक मोटर लाईन और एक पग डंडी। छोटे रास्ते से थोड़ी चढ़ाई ज्यादा है चारों ओर सघन बन हरा भरा मन को मोह लेता है। देहरादून मन्सूरी की पहाड़ियां दिखाई देती हैं। नरेन्द्र नगर एक कस्बा है। महाराज के महल मोटर स्टेशन हैं। मार्ग में अनेक पानी के झरने हैं। नरेन्द्र नगर कैप्टिन हाईनेस भूतपूर्व राजा सहाब नरेन्द्र शाह बहादुर सी० एस० आई० ने बनवाया है। आप को याद रहे अन्य रियासतों की तरह यह भी अब भारत सरकार ने यू० पी० में मिला दी

है। अब इस की अपनी सत्ता कुछ न रही।

अब आगे टेहरी को चलिये। रास्ता अच्छा है दो तीन जल के झरने आते हैं। तीन २ मील पर दुकानें आती हैं। परन्तु जल का अभाव है। नरेन्द्र नगर से ११ मील पर कोर्ट सरकारी पडाव है। एक दो दुकानें खाने की सभी वस्तु मिल जाती हैं। यात्रि बना बनाया भोजन दाम देकर खा सकता है। यहां पर बद्री यात्रा की लाईन के अनुसार बर्तन नहीं मिल सकते सरकारी बङ्गला रहने को स्थान साधारण है पाच मील आगे जङ्गल है, पानी का नाला पास चलता है। दुकानें भी हैं यात्रि यहां ठहर सकता है।

इस पहाड़ में जायफल, अखरोट, आँवला आदि के पेड़ हैं। पांच मील आगे नांगणी सरकारी पड़ाव है मगर रहने का स्थान अच्छा नहीं, पांच मील के मध्य में कोई दुकान नहीं आती। हां मार्ग में ठण्डे जल के झरने अवश्य हैं। नांगणी से भैरो चट्टी ३। मील पर है। नीचे पानी का सुन्दर झरना है। सात मील पर चौंपड़ी है। मार्ग साधारण चढ़ाई का उतराई का है, एक रास्ता यहां से १२ मील भलड़ियाना को चला गया है। २॥ मील पर एक चट्टी आती है. एक स्तम्भ जर्मन युद्ध में मारे गये वीर का है सवा मील आगे सड़क ढलाव पर गई है यहां से टीहरी सन्मुख दीखती है लगभग दो मील होगी। मार्ग में उत्तर की तथा मन्सूरी की सड़क मिलती है। आगे साफ पहाड़ी मैदान में दूर तक खेत बोये हुए दिखाई देते हैं। जिन में स्त्रियें काम करती हैं। आगे छोटा सा बाजार है। इस के

पश्चात गंगा जी का पुल आता है । यहीं पर आप को देव प्रयाग वाली सड़क मिल जाएगी। गंगा पुल पार कर के आप को धर्मशाला मिल जायेगी। पास ही में काली कमली वाले की भी धर्मशाला है । थोड़ी सी दूर पर डाक घर तार घर है मकान यहां के पहाड़ी ढङ्ग के हैं। बाजार चौड़ा व लम्बा है । दक्षिण की ओर ऊपर हस्पताल हाई कोर्ट है, उसी ओर नये राज महल हैं, उत्तर पश्चिम की ओर गङ्गा जी तथा भलिङ्गना नदी का सङ्गम है। यात्रि प्रेम सहित स्नान करते हैं, लौटती बार दाहिने हाथ श्री केदारनाथ श्री बद्रीनाथ के मन्दिर हैं। गङ्गा जी के तट पर महारानी का बनवाया हुआ सूर्य कुण्ड है। प्राचीन समय में गढ़वाल प्रदेश के महाराज श्री बद्री नारायण का रूप माने जाते थे। प्रत्येक यात्रि इन का प्रथम दर्शन करता था।

उक्त मन्दिरों को छोड़ कर और भी मन्दिर हैं। पूर्व उत्तर में भिलङ्गना नदी, पश्चिम दक्षिण में गङ्गा नदी की लहरें दिखाई देती हैं। इन दोनों के मध्य में (ता० २७ दिसम्बर १८१९ को हिजहाई नेस महाराज सुदर्शनशाह जी द्वारा समुद्र तल से २६०० फुट की ऊंचाई पर बनाई हुई अत्यन्त रमणीक राजधानी है) । यहां से ६ मील उत्तर को [समुद्र तह से ४६०० फुट की ऊंचाई पर] सन् १८०० में हिज आई नेस महाराज साहब प्रताप शाह जी द्वारा बसाई हुई प्रताप नाम की नगरी है। और ३० मील पूर्व सन् १८९६ में हिज हाई नेस महाराज सहाब सर कीर्तिशाह बहादुर के० सी० ऐस० आई० द्वारा बसाया हुआ कीर्ती नगर है। जो अलक नन्दा के किनारे

श्री नगर से पीछे ३ मील पर है।

टिहरी से दो मील उदयपुर माली देवल गाव है। जहां श्री १०८ स्वामी राम तीर्थ महाराज ने तप किया था। आज भी उन के तप की झलक दिखाई देती है। यह वही महात्मा है जिन्होंने अपनी बिलखती हुई पत्नी, बच्चों को इष्ट मित्रों को त्याग कर इन्हीं पहाडों में आ डटे थे। समय पाकर आपने अमरीका में वेदान्त का झण्डा लहराया था आज भी स्वामी जी की प्रतिमा अमरीका में पूजी जाती है। राम बादशाह अन्त में योग समाधि में माँ गङ्गा की गोद में समा गये।

॥ टिहरी में नवयुग ॥

टिहरी युक्त प्रान्त की सब से बड़ी रियासत थी। जिसे टिहरी-गढ़वाल के नाम से जाना जाता है। यह एक पुराना राज है। इस में कई प्रतापी राजाओं ने राज्य किया है। इस का वर्तमान क्षेत्र फल ४००० वर्ग मील व जन संख्या ५ लाख है। इस की आय करीब ५७ लाख रुपया सालाना है। इस की उत्तरी पूर्वी सीमा तिब्बत बाजार व नैपाल से मिलती है। पश्चिमी पूर्वी पञ्जाब से तथा दक्षिण युक्त प्रान्त से इस राज्य की परम्परा बहुत पुरानी है, वि० सं० ७४५ से वर्तमान पंवार राज्य वंश का पता है। जब कि उस समय के शासक राजा सोम राज, जिन की राजधानी देवल गढ़ थी। अपनी कन्या का विवाह धारा नगर के पंवार जातीय के राज कुमार से किया। और उसे ही अपना उत्तराधिकारी बनाया। वही कनकपाल के नाम

से विख्यात हुआ । और तब से ही कनक वंश की नींव डाली ।

कनक वंश की १३ वी पीढ़ी तक राज्य का नाम केदार-खण्ड ही था । तेरहवीं पीढ़ी से राजा अजयपाल द्वारा आस-पास के राज्य को जीत कर अपने राज्य में मिला दिया । और अपनी सीमा निर्धारित कर दी । वर्तमान गढ़वाल उसी गढ़वाल का अपभ्रंश है । कहते हैं वह राजा महा प्रतापी था । इसने अपनी राजधानी देवलगढ़ से बदल कर श्री नगर में बनाई, जो कि गढ़वाल विभाजन तक इस राज्य की राजधानी रही । यह बात उल्लेखनीय है कि यहां का राजा बद्रीनाथ की गद्दी का मालिक होता है ।

॥ गढ़वाल का अंग भंग ॥

इस तरह कोई ४४ पीढ़ी तक राज्य निर्विघ्न चलता रहा परन्तु बाद में उच्च कर्मचारियों ने षड़यन्त्र रचा जो पकड़ा गया सेनापति ने विद्रोह कर दिया और वह युद्ध में मारा गया इस पर उस की स्त्री ने जो कि गोरखा थी नैपाल जा कर गोरखों को भड़का कर आक्रमण करवा दिया । इस तरह सन् १६०३ में गोरखों ने चढ़ाई की और गढ़वाल को तहस कर १२ वर्ष तक कठोर शासन किया । इस से महाराज सुदर्शन शाह ने अंग्रेजों की मदद से सन् १८१५ में गोरखों को हटा कर स्वतन्त्र किया । अंग्रेजो ने लड़ाई के खर्च की मांग की । राजा गढ़वाल को स्वतन्त्र रखना चाहता था, इस लिये आधा गढ़वाल जो कुछ

पूर्व तक "ब्रिटिश गढ़वाल" के नाम से पुकारा जाता था। लड़ाई के खर्च के रूप में दे दिया। देहरादून तो अंग्रेजों ने वैसे ही ले लिया था। इस तरह से गढ़वाल का बिभाजन हुआ।

॥ भारत की स्वतन्त्रता के बाद ॥

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद सरदार पटेल ने, रियासतों के सम्बन्ध में जो नीति ग्रहण की वह सम्पूर्ण देश की सुव्यस्था तथा सुदृढ़ता की दृष्टि से ही क्रान्तीकारी सिद्ध न हुई है। बल्कि उस से रियासती जनता के भाग्य का भी स्वर्ण विहान हुआ। टिहरी नरेश ने भी समय की गति पहचानी, उन्होंने भारत सरकार की इच्छा पर यह बात छोड़ दी कि टिहरी को स्वशासित रक्खें या युक्त प्रान्त में मिलादें। इस नीति के अनुसार गत पहली अगस्त सन १९४९ में रियासत युक्त प्रान्त में मिला दी गई। टिहरी का हाई कोर्ट और नरेन्द्र नगर का न्याय विभाग बन्द कर दिया गया।



* दसवां प्रकरण *

❀ यमनोत्री को ❀

चारों ओर आप को हरे भरे खेत मिलेंगे, गङ्गा जी कल २ करती हुई भाग रही हैं। २॥ मील पर पीपल चट्टी आती है. पानी का झरना कई दुकानें हैं। मार्ग में दो तीन स्थान पर उतार चढ़ाव हैं। ११ मील पर भल्डियाना पीपल का पेड़ श्री बाबा जी की धर्मशाला है। पीने को सुन्दर जल का झरना साधु-सन्त के लिये सदाव्रत है। यात्रि जल के पास ही टट्टी कर देते हैं जो गन्दगी होकर स्वास्थ्य को गिरा देती है। वैसे रहने को स्थान अच्छा है। आगे पांच मील पर छाम चट्टी है गङ्गा जी पास में बहती हैं। पार किनारे गङ्गा के पर्वत में अनेक गुफा दीखती हैं। जिस से प्रतीत होता है प्राचीन समय में ऋषि मुनी तप करते थे। यहां से एक पग डण्डो गङ्गा जी के किनारे २ जाती है। दो मील पर एक प्याऊ आती है, आगे तीन मील पर धरासु है मार्ग सीधा किसी प्रकार का कष्ट नहीं। यहां पर चार दुकानें बाबा जी की की धर्मशाला सदाव्रत है। गङ्गा जी पास ही बहती हैं। पश्चिम की तरफ से एक पहाड़ी नाला आकर मिलता है। इसी जगह से एक सड़क यमनोत्री को जाती है। आप को याद रहे यहां तक मोटर भी आती है धर्मशाला सदावृत दुकाने डाक घर

मोटर स्टेशन है उत्तर काशी यहां से १६ मील है। और यमनोत्री ४८ मील है।

आप बांई तरफ यमनोत्री का रास्ता लीजिए। चार मील पर कल्याणी चट्टी है। मार्ग दो मील का चढ़ाव उतार का है बीच में पानी का झरना आता है। आगे पांच मील पर ब्रह्मखाल है। यह स्थान जंगल का है और ठण्ड भी है। यहां से सड़क चक्कर काट कर गई है। मार्ग में पहाड़ी गांव खेत देखने योग्य हैं। चीड़ दयाल के पेड़ इधर बहुत हैं ५ मील पर सिरक्यारी चट्टी है। मार्ग रमणीक और सीधा है, यहां पर पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र का सदावृत बाबा जी की धर्मशाला है। दुकानें छप्परों में हैं शीत अधिक है चारों तरफ जङ्गल भयानक है। पहाड़ों का तो कहना ही क्या है।

यहां से ५ मील की विकट चढ़ाई है, मार्ग में अनेक प्रकार की जड़ीबूटी तथा फल फूल दृष्टि गोचर हुए। अनेक बनचरों के अतिरिक्त कस्तूरी वाले मृग भी पाये जाते हैं। जिन की नाभि से कस्तूरी निकलती है। इसी पहाड़ से एक बड़ा भारी नाला पानी का निकलता है। जो धरसु जाकर गङ्गा में मिल जाता है। सड़क पहाड़ों में चक्कर काट कर जाती है इस स्थान को डण्डी धार कहते हैं। यहां से एक सड़क बड़कोट चकरौता को जाती है, मार्ग में जो दृश्य दीखते हैं वह दर्शनीय होते हैं।

दो मील उतार पर पण्डाल गांव है। मार्ग में खुमानी के पेड़ अधिक हैं, पहाड़ी लड़के लड़कियां आप को फल तोड़ते मिलेंगे आगे दो मील उतार पर सिमली चट्टी है पानी का नाला

दुकानें हैं यमुना जी के प्रथम दर्शन यहीं होते हैं। दो मील पर गङ्गानी चट्टी है मार्ग सीधा बाबा जी की धर्मशाला है यमुना जी के तट पर एक कुण्ड है। उसी को गङ्गा जल कहते हैं, १॥ मील की साधारण चढ़ाई और १॥ मील की उतराई पर शेष धारा नगर नाथ चट्टी है, आगे दो मील पर यमुना चट्टी है, दो तीन दुकानें हैं जमुना जी पास में बहती हैं, ठण्ड का यहां बोलबाला है, क्योंकि खास बर्फानी प्रान्त है मिट्टी इधर की बिलकुल काली है। इस लिये यात्रियों के कपड़े काले हो जाते हैं सड़क यमुना जी के किनारे २ जाती है, कहीं २ तो इतने पत्थर सड़क पर हैं जो यात्रि के नेत्रों में जल आ जाता है, सड़क भयङ्कर पहाड़ों से चक्कर काटती हुई जाती है, रास्ता सभी चढ़ाव का है, कहीं २ थोड़ा उतार भी आ जाता है वैसे मार्ग मनोरञ्जक है क्योंकि बन बहुत सुहावना मन भावना है इस स्थान का नाम ओजरी है यहां से ३॥ मील पर डंडोरी आगे दो मील पर सीधा चल कर यमुना जी का पुल आता है, इसे पार कर के दो मील पर राना गांव है, आध मील चढाई उतनी ही उतराई के बाद सीधा दो मील हनुमान चट्टी है, मार्ग सीधा है और हनुमान गंगा है, धर्मशाल है रहने का स्थान है, यहां से चार मील खर्साली पंडों का गांव है यमुनोत्तरी के पंडा गण यहीं रहते हैं दाईं तरफ से एक बड़ी विकट धारा आती है जिसे देख कर मनुष्य घबरा जाता है पुल पार कर के गांव में जावें, श्री यमुना जी और श्री यमराज के मन्दिर हैं, मन्दिर और मकान लकड़ी के बने हैं। इन को देख कर काश्मीर की याद आती है

दाँहिनी और बर्फानी पहाड़ों का झमघट। १ मील नीचे जमुना जी पर जानकी बाई (बम्बई वाली) जी की धर्मशाला है।

यहां से उत्तर की तरफ सड़क जाती है यद्यपि पहिले जैसी सड़क नहीं है तो भी इस के सुधार की आवश्यकता है। इस चढ़ाई में गरीब अमीर सब एक हो जाते हैं। सब को अपनी सवारी त्याग कर पैदल चलना पड़ता है। यह पहाड़ सघन बन से लदे पड़े हैं, दो चार यात्रियों का भी मन दहल जाता है, अकेले की तो बात ही क्या है, तीन मील पर भैरव घाटी है। जहां यात्रि को जल मिलता है बीच में हरि का नाम यही कुछ विश्राम की जगह हैं। भैरव जी के दर्शन कीजिए और आगे जाने की आज्ञा मांगिये। आगे बेढंगी उतार उतर कर श्री यमुनोत्री हैं। यहां का शीत मत पूछो अमरनाथ जी की याद आती है। खाल के बीच पहाड़ों में यह स्थान है। यमुना जी का मन्दिर और मूल धारा तथा तीन कुण्ड हैं। जल तीनों का गर्म है परन्तु भिन्नता को लिये है।

प्रथम कुण्ड में स्नान करके यात्रि तप्त कुण्ड पर पहुँचते हैं। तप्त कुण्ड में आप चावल कपड़े में बान्ध कर पोटली के रूप में डाल दो। आलू लोहे की शलाका में बींन्ध कर डाल दो, बस पानी ही में सिद्ध (पक) जायेंगे। बाद में निकाल कर अपने काम में लाओ। रोटी बना कर पानी में डाल दो। पक कर पूरी की तरह ऊपर आ जायेगी परन्तु आप को पूर्ण स्वाद नही आयेगा। लोग चावलों को सुखा कर

प्रशाद रूप में इष्ट मित्रों में वहां से लाकर बांटते हैं। तीसरा कुण्ड वह है जहां श्री यमुना जी ने तप किया था। छोटी सी शिला जो गोलाकार है इस में से छोटी सी धारा निकलती है। उसी को जमुना जी कहते हैं। प्रथम का नाम तप्त कुण्ड दूसरे का नाम सूर्य कुण्ड है। इसी स्थान पर पंडा गण दान लेते हैं। तीसरे का नाम गोरख कुण्ड है, यमुनोत्री की यात्रा बहुत कठिन है हमारे जैसे जीवों को तो केवल भगवान ही ले जाता है।

भजन नं० १७

ऐसो को उदार जग मांही !
बिन सेवा जो द्रवै दीन पर। राम सरस को नाहिं ॥टेक॥
जो गति वैराग जतन कर, नहीं पावत मुनि ज्ञानी।
सो गति देतगीध शबरी को, प्रभु न बहुति जियेजानि १
जो सम्पति दशशीश अरपकर, रावण शिव सों लीन्ही।
सो सम्पदा विभिषण कहुँ अतिसकुच सहित हरिदीन्हीं।२।
'तुलसी दास' सबभांति सकल सुख, जो चहिये मनमेरो।
तो भज राम काम सब पूर्ण, करै कृपा निधि तेरो ॥३॥

ऐसे भगवान् के भरोसे कठिन काम भी सुगम हो जाते हैं। इस यात्रा में कई स्थान अगम्य हैं। बद्री नारायण की अपेक्षा यहां खाने की वस्तु तो सस्ती है, परन्तु अन्य सुखों का

नितान्त अभाव है। सड़क की खराबी चट्टियों का ठीक न होना धर्मशालाओं का अभाव आदि बातों का बड़ा कष्ट है। इस यात्रा में अच्छे २ जवानों की हिम्मत टूट जाती है। दुकनदार इतने मैले होते हैं कि उन के हाथ की वस्तु लेने को चित्त नहीं चाहता यहां के पर्वत अधिकतर घने २ जङ्गलों से लदे हैं ऊंची २ चोटियां बर्फ से अच्छादित हैं। भारतवर्ष में अनेक दानी हैं, यदि कोई माई का लाल यमुनोत्री की इस अन्तिम चढ़ाई का मार्ग सुगम कर दे तो अच्छा है। परन्तु अब वह दिन लद गये स्वतन्त्र भारत में जब हिन्दु संस्कृति ही नहीं रहेगी तब धर्म भावना कहां

❀ उत्तर काशी को ❀

यमनोत्री में धर्मशाला है। चार पांच दुकानें हैं। सब वस्तु महेङ्गी हैं। यहां से लौट कर वापिस सिमली चट्टी लौटना पड़ता है सिमली से ऊपर बायें हाथ को सड़क जाती है आप उसे ही पकड़िये। यहाँ से चार मील जङ्गल चट्टी है, मार्ग सीधा कहीं २ चढ़ाव उतार है। साधारण दुकान और चारों ओर सघन बन पानी का नाला है। ठण्ड यहां पर भी है आगे पांच मील की कड़ी चढ़ाई है। इस पहाड़ में अनेक प्रकार के फूल खिलते हैं। भांति २ के पक्षी बोलियां बोलते हैं। यात्रि यहां आकर अपने को भूल जाता है। यहां की शोभा को देख कर देवराज का नन्दन बन याद आता है। सारे बन में सन्नाटा है। कहीं आप को मनुष्य नहीं दिखाई देगा। इधर की यात्रा

आपाढ़ श्रावण की अच्छी नहीं है।

इधर मीलों का फासला पड़ा है चलते २ मनुष्य थक जाता है। सिमलों से तो इस मार्ग में मील भी नहीं है। चढ़ाई के बाद सड़क पहाड़ पर पहुंच जाती है ये ऊंचा शिखर है। यहां से पांच मील उतराई है, तीन मील पर संगोट पहाड़ियों की धर्मशाला है। पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र की ओर से सदावृत है। पास पानी नाले का, गांव भी है। रहने को यात्रि के लिये स्थान अच्छा है। यहां से तीन मील उतार पर श्री गङ्गा जी के तट पर नकोरी चट्टी है धरासु पर छोड़ी हुई सड़क यहां मिल जाती है। यहां पर सरकारी बङ्गला ब्रह्मचारी जी का मन्दिर है। मार्ग की चट्टियां बहुत खराब हैं। गङ्गोत्री यहां से ६२ मील टिहरी ३८ मील है यहा से उत्तर काशी ६ मील है मार्ग में जल चक्की बहुत हैं जहा वर्षा में बैठ सकते हैं। रास्ते में कोई ऐसा स्थान नहीं जहा यात्रि वर्षा में सुख पा सकें। उत्तर काशी एक चौड़े मैदान में बसी है चारों तरफ मनोहर पहाड़ों की झांकी है कुंडलाकार श्री गङ्गा जी की धारा बह रही है। अनेक साधु-सन्त त्यागी भजनानन्दी यहां पर निवास करते हैं। उन के भोजन आदि के लिये प्रधान अन्न क्षेत्र है। बाबा काली कमली वाले का शाखा कार्यालय है अन्न क्षेत्र पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र का भी है महाराज जयपुर की ओर से भी गरमी में दो मास अन्न क्षेत्र खुलता है। देखने के लिए श्री विश्वनाथ जी का मन्दिर अन्नपूर्णा देवी के दर्शन हैं। परशुराम जी का मन्दिर देवासुर संग्राम में छुटी हुई शक्ति के दर्शन हैं। वर्तमान काल में अनेक महात्माओं

के दर्शन हैं प्राचीन काल के अनेक महात्मा जिन की आयु ५०० वर्ष तक की है। वह इस पर्वत में निवास करते हैं। सत्पुरुषों का कहना है कि अब भी श्री गुरु दत्तात्रैय तथा अस्वस्थामा के दर्शन होते हैं। यहां पर तार घर डाक घर कचहरी सुन्दर बाजार है। माघ मास में ५ दिन यहां मेला लगता है। सफाई का पूरा ध्यान दिया जाता है। सड़के साफ सुथरी हैं और यहा का जल बायु न अति गर्म न शीत। जयपुर के महाराज का एकादश रूद्र जी का भव्य मन्दिर है। आप को यहा बहुत आनन्द मिलेगा। कलिकाल में उत्तर काशी की महिमा गाई है गङ्गा जी में असी गङ्गा और वरुण नदी का संगम है। इस जगह कई घाट हैं उस में मणिकर्णिका घाट प्रधान हैं। केदार घाट पर मुर्दे जलाये जाते हैं। वरुण पर्वत पर विमलेश्वर महादेव हैं। भक्तों को सङ्गम से जल ले कर सदाशिव पर जल चढ़ाना चाहिये।

❀ गङ्गोत्री का ❀

यहां से चल कर १ मील पर बङ्गला और दो मील पर गंगेरी है। यहां से एक मार्ग डोडी ताल को गया है। जहां से असीगङ्गा निकली है लगभग १७ मील बाई तरफ को है। यह ताल सात मील के घेरे में है अब रास्ता बन गया है। बर्फानी चट्टानों से घिरा है। स्थान दर्शनीय अद्भुत है गंगेरी से ३ मील नेताला चट्टी है। आगे ४ मील मनेरी है, बाबा जी की धर्मशाला और गङ्गा जी का घाट है। पास में एक पहाड़ी नाला भी है।

सड़क साफ फूलों से लदी है। साथ २ गङ्गा जी का प्रवाह देखने योग्य है, पहाड़ों की सीनरी देखते ही बनती हैं मनेरी से एक मील पर पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र का सदाव्रत है। आगे ४ मील पर कुमालिया चट्टी है। मार्ग सीधा लेकिन पथरीला है। पास में पानी का नाला रहने को स्थान अच्छा है।

आध मील नीचे गङ्गा जी के तट पर शिव जी का मन्दिर है, यमुनोत्री के मार्ग से इधर की चट्टी अच्छी है। गङ्गा जी की धारा का तीव्र प्रवाह है और तट की शोभा भी अकथनीय है यात्रियों को बड़ी सावधानी से स्नान करना चाहिये। पहाड़ रुंड मुंड है, जिन पर वृक्ष का नाम तक नहीं सड़क पथरीली चढ़ाई धीमी है कहीं २ चढ़ाव उतार भी आ जाता है, इस प्रकार ४ मील की यात्रा कर लेने से भटवारी आ जाती है बाबा जी की धर्मशाला सदाव्रत दुकानें हैं इस स्थान को भास्कर प्रयाग भी कहते हैं। पानी का झरना गंगा जी का घाट है, यात्रि यहां आनन्द से रह सकते हैं कुली यहां बदले जाते हैं।

यहां से ढाई मील पर एक चट्टी है पास में जल का नाला और चढ़ाई शुरु हो जाती है। २॥ मील गङ्गा पार कर के छावनी चट्टी आती है, पर्वतों का दृश्य यहां मनोहर है, गंगा जी खूब चक्कर काट कर जाती है दिशा का पता तक नहीं लगता। चार मील आगे गंगानी चट्टी है पुल से उतर दो फलांङ्ग ऋषि आश्रम है। जिस को पाराशर कुण्ड भी कहते हैं, दो कुंड

हैं एक का नाम व्यास कुण्ड दूसरे का नाम पाराशर कुण्ड भी कहते हैं, यहां स्नान करने से चर्म रोग नष्ट होता है। गंगानी में पीली भीत के राजा सहाब की धर्मशाला है सदाव्रत है दुकानें हैं ४ मील आगे लुहारी नाग है. चारों तरफ ऊंचे २ पर्वत हैं, आकार बड़ा रंग लोहे जैसा है, मार्ग बहुत कठिन है गंगा जी के दो पुल पार कर के ब्रह्मचारी सहजानन्द की धर्मशाला है आगे एक मील सोन गंगा है मार्ग चढाव उतार का है। गंगा जी बड़े वेग से जाती हैं साढ़े तीन मील पर एक रमणीक बन आपको मिलेगा। जिस में अनेक प्रकार के वृक्ष हैं मुखी नाम की चट्टी है बाबा जी की धर्मशाला सदावृत है, पास में पानी का झरना दृष्य मन को हर लेता है।

यहां से सड़क पहाड़ में चक्कर काटती हुई जाती है। मार्ग में दो पहाड़ी गांव हैं आगे ३ मील झाला चट्टी है पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र की तरफ से सदावृत है रहने के लिये स्थान उत्तम है, जल का झरना पास है, गङ्गोत्री की यात्रा लाइन जमुनोत्री से अच्छी है पर इस का श्रेय बाबा काली कमली वाले को है जिन्होंने सेठों को उपदेश देकर मार्ग के कष्टों को कुछ हल्का कर दिया, झाला चट्टी से आध मील पर श्यामा प्रयाग [श्यामगंङ्गा भागीरथी का संगम] है इस स्थान पर गंगा जी अनेक धाराओं में [देश की तरह प्रवाह बहने का] चित्ता कर्शक अत्यन्न अद्भुत दृष्य है, यहां पर पहुंचते ही हम को मालूम होने लगता है कि दिव्य लोक में पहुँच गये।

पौने दो मील पर गुप्त प्रयाग है और उस से आगे हरि

शल हरि प्रयाग है, यहां एक सेवों का बगीचा है. जिस के फल बढ़िया होते हैं, यह प्रथम तो लन्दन जाते थे. अब तो अपना राज्य है देखो देश को मिलते हैं कि नहीं, यहां बीं दान भी पैदा होता है, और भी अनेक वस्तु पैदा होती हैं धर्मशाला सदावृत ब्रह्मचारी राजाराम जी की ओर से है, श्री लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर है, हरिः गंगा के पास दोनों ओर तिब्बत के भोटियों की बस्ती है, जिन के पास ऊनी वस्त्र पट्टू शालथुल्मादन आदि मिल जाते हैं। आगे आध मील पर अंगिया पुल है। उसे पार करके सड़क सुहावने मन भावने बन में चली जाती है उस समय प्रकृति की छटा देख कर—

❀ भजन नं० १८ ❀

प्रभु की महिमा अपरम पार ॥ टेक ॥
पढ़त विरन्च वेद नित चारों ।
तोऊ न पावत पार ॥ १ ॥ प्रभु०
शेष, गणेश; महेश, शारदा। निशि दिन करत विचार।
हार मान चुप रहे रटत फिर, उरमें धीरज धार ॥ २ ॥ प्र०
बाल्मीकि-नारद-वशिष्ट-भृगु खोजत बारम्बार ।
नेति २ कर कहत सकल मिल, धन्य २ करतार ॥ ३ ॥ प्र०
बड़े २ सुर सिद्ध मुनि जन, तन मन धन बहु वार ।
'शालिग्राम' लेत शरणागत, सकल जगत आधार ॥ ४ ॥ प्र०



ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः ।
नमस्ते विष्णु रूपिण्यै ब्रह्म मूर्त्यै नमोऽस्तु ते ॥

दो मील आगे धराली गांव है। जो गङ्गा जी के उस पार बसा हुआ है। गङ्गोत्री के पण्डा गण यहीं निवास करते हैं। यहां पर धर्मशाला सदावृत है। यहां से १ मील पर ऋषि मारकण्डे आश्रम है। जहां शरद ऋतु में छः मास श्री गङ्गा जी का पूजन होता है। नील कण्ठ से निकल कर दुग्ध धारा आती है, संगम पर महादेव जी का मन्दिर है। यहां धरसाल जाति के लोग बसते हैं। जो तिब्बत के साथ नेलंग घाटी में व्यौपार करते हैं। कैलास मान सरोवर जाने वालों को इस मार्ग से इन के साथ जाना चाहिये. धराली के आस पास अनेक महात्माओं की कुटि हैं। जहां पण्डा गण रहते हैं उस को मुखना मठ भी कहते हैं।

धराली से ४ मील जाङ्गली चट्टी है। मार्ग बन में हो कर जाता है, गङ्गा जी का पुल पार कर के आप को साधारण चढ़ाई चढ़ कर डेढ मील पर नेलॆन्ग घाटी हो कर एक मार्ग तिब्बत को भी जाता है। मार्ग बहुत मनोरञ्जक है पूर्व दिशा से जाह्नवी गङ्गा आकर मिली हैं इन दोनों का सङ्गम देख कर मन आश्चर्य में डूब जाता है। भयङ्कर पहाड़ों से निकल कर जब दोनों की तीक्ष्ण धारा परस्पर मिलती है वह दृष्य भयभीत करने वाला हो जाता है।

सवा मील की कठिन चढ़ाई के बाद भैरव घाटी आ जाती है यहां भैरव जी का मन्दिर और बाबा जी की धर्मशाला जल की बांवली है जिस में झरने का जल आता है। साधु-सन्तों के लिये सदावृत है। मार्ग में गन्धक का पर्वत है। ठण्ड यहां

अधिक है देव दारू का सघन बन है, इस पर्वत में अनेक तपस्वी तप करते हैं। परन्तु उन का दर्शन भाग्यशाली ही को मिलता है। भैरव घाटी से गङ्गोत्री सात मील है। श्री गंगा जी का विशाल मन्दिर है। जो यह राजा जयपुर का बनवाया हुआ है मन्दिर के बीच में गङ्गा जी, यमुना जी, सरस्वती जी लक्ष्मी जी, पार्वती जी, अन्नपूर्णा देवी जी की मूर्तियां हैं। महाराज भागीरथ हाथ जोड़ कर खड़े हैं मन्दिर दर्शनीय है पूजा का सब सामान स्वर्ण का है। स्थान कुछ दूर तक सम है कुछ नीचे केदार गंगा का संगम है। वहां से ३ फर्लाङ्ग नीचे गंगा जी बहुत ऊपर से नीचे शिवलिंग के ऊपर गिरती है। इसी को गौरी कुंड भी कहते हैं। गंगोत्री में बाबा जी की अनेक धर्मशाला हैं जिन में यात्रियों को सुख मिलता है। पञ्जाब सिन्धु क्षेत्र भी है। दस बजे सन्तों को भोजन मिल जाता है बाबा जी के कार्यालय से ओढ़ने को गर्म कपड़े मिल जाते हैं। सैकड़ों यात्रि प्रति दिन आते और चले जाते हैं। गंगा जी की मूल धारा यहां से १८ कोस पूर्व को है। गंगा जी के किनारे किनारे मार्ग जाता है। जाने वालों को दो तीन दिन का साथ में खर्च ले जाना चाहिये। शीत यहां अधिक है वृक्ष का नाम तक नहीं चारों ओर बर्फ ही बर्फ है, ऊंचे पहाड़ की जड़ में गौ मुख) है जहां से श्री गंगा जी प्रकट हुई हैं। यात्रि के आनन्द का ठिकाना नहीं रहता। प्रेम से आचमन करते हैं, इस जल का अद्भुत मिठास सुगन्धि युक्त है। परन्तु इस बात का पता नहीं गंगा जी की धारा कहां से आ रही है। शङ्कर की महिमा को शङ्कर

ही जाने। यहां पर गुफा है जिन में पानी टपकता रहता है। आप यहां पहुँच कर अपने पुराण इतिहास के कथन पर विचार कर मुग्ध होगे।

गंगोत्री स्थान रमणीक है, अनेक जड़ी बूटी पाई जाती हैं ममीरा-यहां बहुत है जो भाद्रपद में पकता है। गंगा जी के उस पार श्री महाराज रामकृष्णाश्रम अपूर्व योगीराज हैं। इस पर्वत में और भी योगी महात्मा रहते हैं जिन की भिक्षा का प्रबन्ध बाबा जी की ओर से होता है। यात्रि लोग यहां से गंगा जल लेकर जाते हैं, गंगा मन्दिर में गंगा महात्म्य में दिये हुए मन्त्रों का पाठ करना चाहिये।

* ग्यारहवां प्रकरण *

❀ बूढ़े केदार को ❀

गङ्गोत्री से वापिस भटवारी पहुंचना चाहिये। यहां से दो मील मल्हा चट्टी है, पुल पार कर के तीन मील पर सौड़ गांव है। चढाई सीधी और मार्ग अच्छा नहीं। हां पहाड़ रमणीक है और अपनी लगन में इसे गाना चाहिये।

❀ सवैया नं० १६ ❀

सुनिये सब की कहिये न कुछु । रहिये दत्ति के भवनागर में ।
करके वृत नेम सचाई लिये । जिन से तरिये भव सागर में ॥
मिलिये सब से दुर्भाव बिना । रहिये सत्सङ्ग उजागर में ॥
'रसखान' गोविंद हियों भजिए । जिमिनारि को चित सो गागरमें

मल्हा चट्टी से गंगा जी छूट जाती हैं, जल का नाला पार कर के ३ मील पर प्यालू चट्टी है । मार्ग कठिन और चढाई का है । पालकी आदि सब सवारी छूट जाती हैं । महान् विकट चढ़ाई के बाद छूना चट्टी आती है । मार्ग पथरीला और पानी बहता है बरसात में महान कष्ट होता है । भटवारी से यह स्थान ११ मील है, परन्तु यात्रि को २० मील मालूम होता है मीलों का कहीं भी निशान नहीं । केवल तीर्थ की आशा पर ही चलना पड़ता है यहां गोकुल चन्द की धर्मशाला पंजाब सिन्ध क्षेत्र का सदाव्रृत है । यात्रि को पडाव पर ही ठहरना चाहिये । आगे भूल कर भी जाना आपत्ति को मोल लेना है, छूना से चार मील बेलक है, यह पर्वत की चोटी पर है, ये चढ़ाई बहुत सीधी है वर्षा में भय प्रद है इस पर्वत की मिट्टी चिकनी है । वर्षा के कारण यात्रि रपट कर गिर जाता है शीत भी यहां बहुत है अग्नि की धूनी लगी रहती है पांच सात दुकानें हैं जो छप्पर में हैं, मार्ग में जौंक बहुत हैं जो यात्रि के पांव पर चिपट जाती है बन ऐसे हैं जो मन को मोह लेते हैं, इस छट्टा को तो

देखने वाला ही जानता है, बेलक से पंगूराना ५ मील पर है रास्ता सख्त उतार का है। पंगूराना दो भागों में बंटा है, यहां भी ठण्ड अधिक है। यात्रि अपनी इच्छा से ठहर सकता है। अब आप को पांच मील की तेज उतराई है। जिस में बलवान् से बलबान को थकान आ जाती है। नीचे जांगला तथा झाला नाम की चट्टी आ जाती है। केदार गङ्गा के दर्शन हैं गूजर लोगों का मुकाम होने से दूध सस्ता मिल जाता है। इस गङ्गा को धर्म गङ्गा भी कहते हैं। यहां से बूढ़ा केदार ४ मील है। गङ्गा किनारे २ मार्ग जाता है। यह प्रान्त स्वच्छ हरे खेतों से भरा है। बूढ़ा केदार अच्छा गांव है, बूढ़े केदार की मूर्ति पाषाण की है। पुजारी नाथ सम्प्रदाय के ग्रहस्थ योगी हैं। जो खेती बाड़ी भी करते हैं, जल की यहां तकलीफ थी अब नल लग गये हैं।

❀ त्रियुगी नारायण को ❀

केदार से ३।। मील पर एक चट्टी है १।। मील आगे हथकण्डी है मार्ग सीधा चारों तरफ हरे २ खेत हैं। जल का सुख रहने को स्थान अच्छा है। आगे आप को चढ़ाई चढ़ना है १।। मील पर ग्वाल चट्टी है, इतनी ही दूर पर भैरव चट्टी है शीत बहुत है भैरव जी का मन्दिर है। आगे दो मील पर मोट चट्टी है लगभग आध मील की चढ़ाई है। यहां से पांच मील पर घुतू है जहां जाने में गति हो जाती है। मार्ग सभी उतार का है रास्ते में कोई विश्राम की जगह नहीं। हां

इधर उधर कहीं पहाड़ी गांव आ जाते हैं घुतू में गङ्गोत्री पहाड़ से निकली हुई भृगु गङ्गा आती है एक बाबा जी की धर्मशाला रुद्रनाथ का मन्दिर है। पुलिस चौकी रहने को स्थान अच्छा नहीं। पर जैसे तेसे रात तो काटनी ही पड़ती है।

❀ भजन नं० २० ❀

तजोरे मन हरिः विमुखन को संग ॥ टेक ॥

कहा भयो पय पान कराये, विष नहीं तजत भुजंग ॥१॥
जाके संग में कुबुद्धि उपजे, परत भजन में भङ्ग ॥२॥
काम क्रोध मद लोभ मोह में, निश दिन रहत उमङ्ग ॥३॥
कागहा कहा कपूर चुगाये, श्वान नहाये गङ्ग ॥४॥
खर को कहा अरगजा लेपन, मरकट भूषण अङ्ग ॥५॥
पाहन पतित बान नहिं बेधत, रीतो करत निसंग ॥६॥
"सूरदास" खल काली कमलिया, चढ़त न दूजो रंग ॥७॥

अब आप को पवाली की चढ़ाई चढ़ना है। इस सारी यात्री में आप को यही दुखद चढ़ाई है, वर्षा में इस को पार करना टेढी खीर है। वैसे तो सभी यात्रा दुःख प्रद है, पर इस से भयङ्कर कोई नहीं। गङ्गोत्री से त्रियुगी नारायण की यात्रा कठिन है। इस का अनुभव वही कर सकते हैं जो कभी इधर आये हैं, इधर यात्रियों को मार्ग में जहरीली मक्खी काटती है। जिस से हाथ पांव पक जाते हैं मार्ग में कोई औषधालय नहीं

जहां यात्रि दवाई लेकर लगा ले एक छोटा सा औषधालय पवाली पर बाबा जी का है। दुकानें हैं चारों ओर मैदान है। सड़क ठीक न होने से यात्रि बहुत गिरते हैं, दुखित अङ्गों को और भी ज्यादा चोट लगती है, कईयों को ज्वर भी हो जाता है जिन का सिवाय भगवान् के और कोई रखवाला नहीं।

भजन नं० २१

भक्त के प्रभु आप ही हो सहैया।
संसार सागर के तुम हो खिवैया ॥टेक॥
अशरण की शरण हो, अनाथों के तुम नाथ।
घनघोर विपता से तुम हो बचैया ॥२॥
अकथ वेद कहते नहिं भेद कोई।
निराकार साकार रचना दिखैया ॥३॥
दधि में मिला घी, अग्नि काष्ट में है।
इसी भांति सब में हो व्यापक रमैया ॥४॥
दुःख सुख का चक्कर, चला है अनादि।
संभालो 'बुद्धिचन्द्र' मेरी टूटी नैया ॥५॥

घुतू से १॥ मील गोपाल (गवान) चट्टी है। चारों तरफ सुन्दर खेत हैं। पहाड़ी लोग अपने खेतों में काम करते हैं। जैसे योगी अपने योग में मस्त रहता है वैसे ये लोग अपने

काम में। १॥ मील चढ़ाई चढ़ कर एक चट्टी आती है। यहां पर दूध सस्ता मिलता है, सभी यात्रियों को यहां दूध पीना चाहिये। क्योंकि चढाई में दूध शक्ति देता है, लगभग १॥ मील पर एक और चट्टी है, यह मार्ग सभी घने जंगल का है चढ़ाई ही चढ़ाई पर दो मील पर फना चट्टी है। यहां पर बन समाप्त हो जाता है, यहां से पञ्वाली शुरू हो जाता है। जहां बैशाख में हजारों फुट बर्फ होती है, पञ्वाली खास कैलाश की शाखा बतलाई जाती है।

ज्येष्ठ आषाढ़ श्रावण भादों चार मास बर्फ का अभाव बढ़ जाता है, इस लम्बे दीर्घाकार पर्वत में वृक्ष का नाम तक चारों तरफ आपको बड़े चांदी [बर्फ] के पर्वत दिखाई देंगे आप इस अकथनीय दृष्य को देख कर चकित हो जाएंगे। यदि आप को मनुष्य जन्म पाकर भगवान् की नटी [माया] का चमत्कार देखना है तो आईये पञ्वाली की सैर कीजिए। ग्वाण से पञ्वाली ३ मील हैं आप को एक दम साफ पहाड़ मिलेगा। अनेक प्रकार के पुष्प दृष्टि गोचर होंगे जो आपने कभी न देखे होंगे। कहीं २ सरोवर बर्फ की चट्टानों और बन चर जीवों के दर्शन होंगे, पञ्वाली में ठण्ड अधिक है। आप १२ बजे स्नान नहीं कर सकते, बाबा जी की धर्मशाला, कई दुकानें हैं, आप रात्रि यहां रहिये। प्रातः काल चल दीजिये।

अभी आप को पञ्वाली का शेष भाग पार करना है। मध्यान के बाद इस मार्ग को भूल कर तय करने की कोशिश न करिये। आप को एक कठिन मार्ग से जाना है, जो पहाड़ की

धाए समझी जाती है एक ओर तो पहाड़ दिखाई देंगे और दूसरी ओर खाई जिस में गिर जाने से हड्डी का पता तक न लगे। आप एक छोटे से मार्ग पर चलेंगे। कभी नीचे कभी ऊपर आप को ले जावेगा, मार्ग में आपको कोई मनुष्य नहीं मिलेगा। बाबा जी की तरफ से दो जगह पानी की प्याऊ है दिन में कूहड़ा उठता है जो सूर्य ढक जाता है जिस में कुछ भी नहीं दीखता। उतार चढाव इतना है कि प्राणी घबरा जाता है। एक से एक पहाड़ी बढती जाती है और मार्ग का पार नहीं मिलता। उस समय तो हमें पञ्जाबी भाषा में अपना गीत याद आया—

❀ भजन नं० २२ ❀

मेरी बेड़ी डुबदी जांदी करदे पार कृष्णा ॥ टेक ॥
ए तां है सुराखां वाली, मलाहां विच आफत दे डाली।
घाणी नहीं खतरे तूं खाली, हो आधार कृष्णा। १। मे०
इस बिच रहेंदे जीव बतेरे, लैंदे इस बेड़ी नू घेरे।
डुबदियाँ मूल न लगसी देरे, है मझधार कृष्णा। २। मे०
ना कोई दान दा यज्ञ रचाया, ना कोई धर्म दा कम कमाया।
बैठ के नाम न तेरा गाया, कर के प्यार कृष्णा। ३। मे०
दीन देख न भुलावीं, लजिया नाम दी बचावीं।
"बुद्धिचद्र" गरुड़ दे आवीं, हो सवार कृष्णा। ४। मे०

पहाड़ों की छटा और फूलों की रङ्गत पेड़ों की बनावट को देख कर मन अचम्भित हो जाता है। जहां लाखों फीट वर्फ रहती हो, वृक्ष का नाम तक न हो। वहां भांति भांति के फूल वे भी एक २ पौदे में कई प्रकार के न जाने इस के बीच किस मौसम में कारीगर ने ला कर डाल दिए थे। पहाड़ के ऊपर मुलायम घास मखमल का कालीन प्रतीत होती थी। उस पर छोटे २ फूल मानों प्रकृति ने अनेक रत्नों से सजाए थे। कैलाश के विषय में जो कुछ शास्त्रों पुराणों में लिखा है। महाभारत में जो कुछ गन्ध मादन की कथा आती है उस के अनेक अंश हमने यहां देखे हैं।

जो आनन्द हमने यहां पाया, वह लेखनी द्वारा प्रकट करने में हम में शक्ति नहीं है। एक बार इस प्रदेश को देखने की प्रत्येक व्यक्ति को हम सम्मति देते हैं। पर आप आषाढ़ में आईये। सर्वेश्वर प्रभु की महान् कृपा से प्रकृति देवी का कौन बखान कर सकता है, कोई भी नहीं। इधर के लोग भोले भाले सीधे होते हैं। यात्रि को पूछने पर सहारा देते हैं। चलते २ पांव थक जाते हैं पर मुकाम नहीं आता। मार्ग में कई स्थानों पर वर्फ पर ही चलना पड़ता है। आप अनेक दृष्यों को देखते हुए वहां पहुँच जावेंगे, जहां उतार शुरु होता है। यह उतार भी भयानक है केवल भगवान् के ही सहारे यात्रि इसे पार कर सकता है। नीचे खण्डों में मंगू नाम की चट्टी है, ठण्ड का यहां ताण्डव है। बाबा जी की धर्मशाला दुकानें हैं। जल का भारी कष्ट है पहाड़ियों द्वारा मङ्गाया जा सकता है पञ्वाली में भोज-

पत्र के पेड़ बहुत हैं। और पुष्प भी अनेक प्रकार के होते हैं, कहीं जो सरोवर हैं उन के कमल तो देखने ही योग्य होते हैं। प०वाली पर १२ बजे के बाद यात्रि को न चलना चाहिये। क्योंकि वर्षा और बर्फ गिरने का डर होता है। हमने तो यह यात्रा मध्याह्न के बाद ही की। भगवान् श्याम सुन्दर ने हमारी रक्षा की, नहीं तो हमने कम मूर्खता नहीं की थी। क्या करें प्रेम देवता कुछ सूझने नहीं देता। इस देवता की जब जीव पर कृपा होती है। तब अन्य साधन सब फीके हो जाते हैं। देवाधि देव महादेव ने भी कहा है—

उमा जोग जप दान तप, नाना वृत मख नेम।
राम कृपा नहिं करहिं तस, जस निश केवल प्रेम॥
पन्नगारि सुनि प्रेम मम, भजन न दूसर आन।
यह विचार मम पुनि २, करत राम गुन गान॥

❀ भजन नं० २३ ❀

ऐ दिल जहां में आके, दोनों का ध्यान करले।
अपने आधार के तू, श्री राम श्याम करले ॥टेक॥
अयोध्या का एक वासी; धारे हुए धनुष को।
चित चोर वृज में देखो, बन्शी में कान करले ॥२॥

अहिल्या को उसने तारा, द्रोपद सुता को इसने ।
हो पाठ राम चर्चा, गीता का गान करले ॥३॥
उनके रत्न सिंहासन, सोहे हैं चारों भैया ।
इन की छवि निराली, दृष्टि समान करले ॥४॥
उन ने शिला तराई, इन ने उठाया पर्वत ।
'बुद्धिचन्द्र' अपने अन्दर, इन का स्थान करले ॥५॥

मंगू से प्रातः काल चलिए ५ मील पर उतार उतर कर त्रियुगी नारायण हैं। मार्ग में अति सुहावना बन है भांति २ की जड़ी और पुष्प हैं। यह स्थान भी रमणीक है अनेक सरोवर हैं। बस आप को यह वही स्थान मिल गया। जो हरिद्वार से केदार नाथ को सड़क जाती है। यहां से अब आप आगे उसे पकड़ लीजिए, छठा प्रकरण देख कर अपनी यात्रा कीजिये।



बारहवां प्रकरण

कैलाश और मान सरोवर की यात्रा

हमारे पुराणों में मान सरोवर और कैलाश का महान् महत्व है। हम अपनी इस भारत भूमि के मुकट हिमालय की महिमा को क्या लिखें। प्राचीन ऋषियों का साहित्य जब लोग पढ़ते थे, तब वह मन में इसे निरी गप्प, समझते थे। अब ज्यों २ मानव इधर जाने लगा है। त्यों २ इसे सत्यता का भास होने लगा है।

यह जिधर भी जाता है, उसी शिखर पर कुछ इसे अनोखापन मिलता है। मानव अल्पज्ञ सर्वज्ञ प्रभु की रचना को लिखने में असमर्थ हो जाता है, हिमालय के अनेक शिखर हैं मनोहर बन और अनेक सरोवर हैं। अनेक नदियें नित देश में भ्रमण करती हुई सागर में जाकर मिलती हैं।

॥ महत्व पूर्ण सीमा ॥

अलमोड़ा भारत की अन्तिम सीमा, जो नैपाल और तिब्बत के साथ मिलती हैं। ये दो पड़ोसी देश भी भारत का ही अङ्ग समझे जाते हैं। मान सरोवर के जाने वालों को तिब्बत

की ओर जाना पड़ता है। अलमोड़ा में स्वतन्त्र रूप से कई बार पार्टियें (दल) गया है। यह यात्रा साधारण नहीं है इस में अनेक प्रकरा की कठिनाई हैं परन्तु मधुरता और और आनन्द का मात्रा भी अधिक है। पूज्य पाद श्री १०८ स्वामी विद्यानन्द जी महाराज के उद्योग से कैलाश यात्रा सुगम हो जाती है। आप का कार्यालय "श्री गीता—सत्सङ्ग कैलाश क्षेत्र नैनीताल उत्तर प्रदेश हिमालय) है। गत सन १६५३ से इन की ओर से ऋषिकेश में श्री उत्तराखण्ड कैलाश यात्रा मण्डल कम्पनी स्थापित हुई है, जिस का प्रधान कार्यालय अब ऋषिकेश में है। ये बद्रीनाथ केदारनाथ जमनोत्री गङ्गोत्री का भी प्रबन्ध कर देते हैं। कैलाश जाने वालों के लिये तो यह प्रबन्ध करते ही हैं।। कैलाश जाने वालों को स्वामी जी से या ऋषिकेश कार्यालय से पत्र व्यवहार करना चाहिये। कैलाश जाने में अनेक मार्ग हैं। पर एक मार्ग स्वामी जी का इस प्रकार है। जिन में पूरब से पश्चिम की ओर आने में नेपाल से सम्बन्धित दुगला जुमला घाटियां अलमोड़ा। (यू० पी०) से सम्बन्धिल होती नीती और माना घाटियों के अधिक निकटवर्ती है। इन के अतिरिक्त पञ्जाब की विसेर रामपुर और काश्मीर प्रान्त की लद्दाख घाटियों से भी कैलाश जाने के मार्ग हैं। परन्तु यह मार्ग अधिक लम्बे हैं अर्थात् हजारों मील दूर हैं। पहाड़ी लोग या योगी-जन जा सकते हैं। उन में से माना, दारमा घाटियों के मार्ग अत्यन्त कष्ट प्रद हैं। नीती और जोहार घाटी से जाना न अधिक कष्ट प्रद न अधिक सुविधा जनक है। होती और व्यास

घाट से यात्रा करना अति सुगम है, विशेष कर यात्रि व्यास घाट से ही आया जाया करते हैं। पर इस यात्रा में अनेक तीर्थ छूट जाते हैं। और यह उल्टी परिक्रमा भी है।

जोहार घाटी होते हुए यात्रा करके व्यास घाटी से लौटने में सीधा पड़ता है। जोहार घाटी में कई एक अत्यन्त (सुन्दर कुंड) नन्दा देवी नीलम गोसियर आदि पड़ते हैं। व्यास घाटी में कहीं ऐसे सुन्दर दृश्य दिखाई नहीं पड़ते। सन् १६५० ईसवी में इस की रूप रेखा बिल्कुल बदल गई।

इस का प्रधान कारण प्रान्तीय सरकार की ओर से गढ़वाल जिले में जोशी मठ तक. अलमोड़ा जिले से टनकपुर से पिठोरा गढ़ तक मोटर का कार्य क्रम हो गया है वैसे तो ये मार्ग ३५ मील व्यापारियों ने दुर्गम सड़क को सुगम बना दिया है। १२ फिट चौड़ी समय पाकर यह सड़क यात्रियों को सुखदायक बन जाएगी। जोशी मठ (बद्रीनाथ पथ) से लेकर कैलाश मान सरोवर होते हुए पिठोरागढ़ तक कुल ३३० मील की यात्रा है जोहार घाटी से कैलाश मान सरोवर होते हुए व्यास घाटी के रास्ते पिठोरा घाट तक ४३० मील की यात्रा है। काठ गोदाम से अलमोड़ा होते हुए जोहार घाटी से कैलाश यात्रा करना नितान्त अवांच्छनीय है। क्योंकि इस रास्ते १०० मील पैदल यात्रा अधिक होती है। जोशी मठ से आगे का मार्ग प्रति वर्ष सुगम बनाने का यत्न हो रहा है।

॥ जोशी मठ से यात्रा लाइन कैलाश ॥

जोशीमठ से तपोबन ७ मील तपोबन से मालरी १६

मील, मालरी से होती २० मील (बम्बा होते हुए) होती से शिव चिलम १६ मील, शिव चिलम से मानी थंगा होते हुए व्याज लिङ्ग २० मील। व्याज लिङ्ग से रिमवां लिङ्ग १५ मील इस से आगे तीर्थ पुरी १८ मील, तीर्थ पुरी से शेल चाक १६ मील आगे सेन्यादि १० मील। न्यादि से कैलाश परिक्रमा २० मील (दुर्चिन मंडी) कैलाश से मान सरोवर १६ मील यह ६०, ७० मील के घेरे में है।

यहां पर हंसों का निवास और मोतियों की उत्पत्ति होती है। अनेक सन्त योगी राज यहां पर निवास करते हैं। सरोवर के चारों ओर बौद्ध मठ हैं। उन में महान तपस्वी लामा रहते हैं। तिब्बत के १४००० फिट ऊंचे मैदान में १६, २० दिन भ्रमण करने का मनुष्य को समय चाहिये। यहां का जल वायु बहुत ही अच्छा है इस की गणना हम किस से करें। तिब्बत प्रदेश के पशु बकरी बैल इतने शक्तिवान होते हैं कि चार मन बोझा आसानी से ले जाते हैं।

कैलाश एक अद्भुत स्थान है, इसकी महिमा जड़ लेखनी कुछ भी बखान नहीं कर सकती। यहां जंगल झारी का नाम तक नहीं। हरे भरे घास के मैदान दीखते हैं। मानो प्रकृति ने आप के लिये मुलायम मखमल बिछा दी हो। सुगन्धि के लाने वाले छोटे २ वृक्ष जो डेढ़ फुट से ऊंचे नहीं हैं वह पाये जाते हैं। शीत के कारण कोई भी पौदा गलने नही पाता। यात्रि नंगे पांव घूमने में आनन्द मानता है। गुग्गल-जटा-मांसी वज्र दन्ती, शिलाजीत-अभ्रक-गोरोचन भोजपत्र आदि जहां

तहां पाए जाते हैं।

विषधर सांप बिच्छू मनस्वी मच्छर चींटी कीट जन्तुओं का अभाव है जहां गर्म श्रोतों का प्रवाह बहता है। सुन्दर झरनों का जल दूध के समान बहता हुआ मन को हर लेता है सहस्रों ब्रह्मचारी मधुर वाणी से वेद ध्वनि करते हुए पाए जाते हैं। श्याम करण घोड़े जिन का वर्णन इतिहास पुराणों में आता है। जिसे भारत के राजा महाराजा खूब चाहते थे। और इसी को अश्वमेध यज्ञ में शत्रु की परीक्षा निमित देश-देशान्तर में भेजा जाता था, वह यहां बहुत पाये जाते हैं। संसार में किसी क्षेत्र (कैलाश के अतिरिक्त) नहीं पाये जाते, कस्तूरी मृग भी आप को यहां ज्यादा मिलेंगे देव यक्ष किन्नर यहीं विहार करते हैं, हिमालय की अनेक चोटियों पर रात्रि को उतार्ध में मधुर संगीत सुनाई पड़ता हैं. यहां की गुफाओं में बड़े बड़े दीर्घ आयु वाले महात्मा और लामा पाये जाते हैं इस भूमि के निवासी सच पूछो तो राम राज्य की प्रजा के समान आदर्श हैं कलेवर के बढ जाने के भय से हम अधिक कुछ नही लिख सकते, वह प्राणी धन्य हैं जो हिमालय के किसी भी भाग की यात्रा करते हैं। मान सरोवर से गौरी बुड़ि-यार (गुसल गुम्फी होते हुए) ३० मील है। यहां से तकला कोट ३० मील है। आगे गम्याङ्ग २२ मील है और खेड़ा नामक स्थान ३७ मील है। लगभग १० मील पर धर चूला है, उस से आगे असकोटा २५ मील। अस कोटा से पिठोरा गढ़ २५ मील है. अब आपको मोटर का रास्ता मिल जाएगा जो टनक पुर पहुंचा देगा टनकपुर ओ० टी० का रेलवे स्टेशन है।

॥ आवश्यक सूचना ॥

श्री बद्री केदार यात्रा में जो वस्तु हमने साथ ले जाने को लिखा है। उस के अलावा अमीर धनी पुरुषों को निम्न लिखित वस्तु भी ले जानी चाहिये।

(१) सूखे फल (सब मिले हुए) पांच सेर। (२) अचार १ सेर ३) सुपारी इलायची लौंग (४) मन पसन्द मिठाई अढ़ाई सेर। (५) बिस्तर बीस सेर जिस में कम्बल चार तकिया १ बरसाती १ चादर तिब्बत की यात्रा में गर्म कपड़े अवश्य चाहियें। टार्च का होना भी बहुत जरूरी है। ट्रङ्क सूट-केस भूल कर भी न ले जाना चाहिए। भोजन बनाने के बर्तन भी साथ होने चाहियें। जाने वाले यात्रि को ईश्वर पर भरोसा रख कर जाना चाहिये।

॥ देहरादून ॥

ऋषिकेश में मोटर द्वारा देहरादून १।) किराया है। और हरिद्वार रेल से देहरादून १॥=) डाक का, १।=) पैसिञ्जर का। हरिद्वार से कई गाड़ियें जाती हैं। देहरादून जिला है इस के लम्बे बाजार हैं। दूर तक बसा हुआ अच्छा शहर है। अंग्रेजों के समय के अनेक विद्यालय हैं। यह पहाड़ी प्रदेश का अच्छा सुन्दर शहर है, श्री गुरु रामराय महाराज की गद्दी है। जिस के वर्तमान महन्त श्री १०८ श्री इन्द्रेशदास जी शास्त्री हैं मन्दिर दर्शनीय है पश्चिम की तरफ चकरोता रोड़ पर टपकेश्वर महादेव हैं। पहाड़ी नदी के किनारे गुफा में दर्शन हैं। चाय के

बगीचे और भांति २ के पेड़ों का संग्रह उपवन देखने योग्य है यहां के चावल बहुत प्रसिद्ध हैं। देवी जी का मन्दिर और गीता भवन देखने योग्य है। यहां गोरखा लोग बहुत रहते हैं। अजायब घर सरकारी भवन छावनी है। पञ्जाब सीमा प्रान्त के हिन्दुओं के आने से जन संख्या यहां की बढ़ गई है, मन्सूरी उत्तर की ओर सन्मुख दीखती है, चारों तरफ पहाड़ बीच में सुन्दर मैदान है। देहरादून में पहिले पानी का कष्ट था। अब नल लग गये हैं यहां से चकरौता सहारनपुर ऋषिकेश को सड़क जाती है।

॥ मन्सूरी ॥

यह स्थान भारत में प्रसिद्ध है, संसार के राजा महाराजा सेठ साहूकारों के भ्रमण करने का स्थान है। अंग्रेजों का तो यह क्रीडा स्थल था। यहां मकान बहुत महगे मिलते थे। आज वह बात नही, मन्सूरी जाने के लिये मोटर मिलती है। जिस का किराया, तथा समय, मोटर स्टेशन से मालूम कर सकते हैं राजपुर तक जाने में आपको हर प्रकार की सवारी मिल सकती है, मोटर आप को नियत समय पर ले जाएगी। राजपुर से ये आगे चक्कर काटती हुई शिखर पर ले जाएगी।

यदि आपने पैदल जाना है तो राजपुरा आ जाइये देहरादून से राजपुरा सात मील है। मार्ग बहुत अच्छा दोनों ओर बगीचे हैं। तीन चार आने देकर तांगे से भी पहुंच सकते हैं। यह पुराना कस्बा है बाजार लम्बा है। यहां पर बांबरी और

सहस्त्र धारा देखने योग्य है, जहां साधु सन्त निवास करते हैं गन्धक के झरने हैं, जहां स्नान करने से त्वचा रोग चले जाते हैं, राजपुरा से १॥ मील टोल जहां टैक्स दिया जाता है, आगे २॥ मील खारी पानी १ मील बाला गञ्ज है, मार्ग में महाराजा नेपाल की दर्शनीय कोठी है, आप को यहीं से मन्सूरी समझ लेना चाहिये। अलग १ पहाड़ों पर बने हुए बङ्गलों का नाम ही मन्सूरी है, यहां अमीर पानी की तरह पैसा बहाते हैं लाखों गऊओं की यहां हत्या होती थी। बकरी मुर्गी की तो गिनती ही क्या है लम्बा बाजार है सरकारी कोठियां और कई स्थान देखने योग्य हैं चढ़ाव उतार से मनुष्य थक तो जाता है परन्तु हिमालय की शीतल वायु सुन्दर दृश्यों के कारण सब कुछ भूल जाता है, वर्षा हर समय होती है और बादल आप के समीप फिरते हैं। लण्ढोरा बाजार में श्री रघुनाथ जी का मन्दिर आर्य समाज मन्दिर गुरुद्वारा, आप चाहे जहां रह सकते हैं, हां अधिक रहना हो तो अपने लिये कोठी का प्रबन्ध कीजिए।

॥ यमुनोत्री ॥

एक रास्ता यहां से यमुनोत्री को जाता है उसी से आप चारों धाम कर सकते हैं। जबर खेत १ मील सुवां खेली ५ मील, चौपड़ा १ मील प्याऊ है मील दो मील उतार ४ मील चढ़ाव है, यहां से ६॥ मील का उतार है बाद में धरासु आ जाता है जिस का वर्णन हम पहले कर चुके हैं; सुवा खोली से कान ताल भलड़ियाना होकर धरासु से झाला एक मील यहां

पर महन्त लछमण दास जी की धर्मशाला पानी का नल है, घन कोटि ८ मील है। बाबा जी की धर्मशाला है। घन कोटी से काना ताल आठ मील है। ठण्ड बहुत है धर्मशाला सदावृत भी है। आगे १ मील पर दो सड़कें हो गई हैं। एक भल्डियाना होकर उत्तर काशी को। दूसरी टिहरी को जो लगभग १४ मील है। याद रहे यह रास्ता ठीक नहीं उत्तम मार्ग तो देव प्रयाग है यह मार्ग सैनिक लोगों के लिये था।

देहरादून से चकरौता मोटर द्वारा आगे गङ्गानी १४ मील है। जहां से जमनोत्री पास पड़ती है, यह रास्ता उतार और सीधा है, इस में चढ़ाई नहीं।

❀ चार धाम की महिमा नं० २४ ❀

कौन दिशा जगन्नाथ स्वामी, कौन दिशा रामनाथ है।
कौन दिशा रण छोड़ टीकम, कौन दिशा बद्रीनाथ है ॥१॥
पूर्व दिशा जगन्नाथ स्वामी, दक्षिण रामनाथ है।
पश्चिम दिशा रण छोड़ टीकम, उत्तर दिशा बद्रीनाथ है ॥२॥
कौन कारण जगन्नाथ स्वामी, कौन कारण रामनाथ है।
कौन कारण रण छोड़ टीकम, कौन कारण बद्रीनाथ है ॥३॥
राज कारण जगन्नाथ स्वामी, योग कारण रामनाथ है।
भोग कारण रण छोड़ टीकम, तप कारण बद्रीनाथ है ॥४॥
क्या चढत जगन्नाथ स्वामी, क्या चढ़त रामनाथ है।

क्या चढ़त रण छोड़ टीकम, क्या चढ़त बद्रीनाथ है ॥५॥
अटक्का चढ़त जगन्नाथ स्वामी, जल चढ़त रामनाथ है ।
माखनमिश्री चढ़त रणछोड़ टीकम, मेवा चढ़त बद्रीनाथ है ।६।
क्या देत जगन्नाथ स्वामी, क्या देत रामनाथ है ।
क्या देत रण छोड़ टीकम, क्या देत बद्रीनाथ है ॥७॥
पट देत जगन्नाथ स्वामी, बैत देत रामनाथ है ।
छाप देत रण छोड़ टीकम, कंकण देत बद्रीनाथ है ॥८॥
चार धाम की अजब महिमा, गाय कर सुख पाईये ।
दर्शन दो बद्रीनाथ स्वामी, आवा गमन मिट जाइये ॥९॥

* चट्टियों की दूरी *

यात्रियों को झटपट अपने स्थान पर पहुँचन का पता लग जाये । चट्टियों के नाम, दूरी की सूची नीचे देते हैं ।

नाम चट्टी	दूरी	नाम चट्टी	दूरी
नं० १ सड़क	मील फ०	मुनि की रेती	० ० १ ४
हरिद्वार से बद्रीनाथ	१८३	लछमण झूला	० ० १ ४
सत्य नारायण	० ० ७	गरुड़ चट्टी	० ० २
ऋषिकेश	० ० ८	फूल चट्टी	० ० १

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
गूलर चट्टी	•	०	२	
महादेव सैण	०	०	२	
नाई मोहन	०	०	१	
छोटी बैंजनी (चढ़ाई)			२	
बड़ी बैंजनी (चढ़ाई)			१	
न्यौड ख्वाल (चढ़ाई)			१	
कुण्ड (उतराई)			१	
बन्दर भेल (उतराई)			३	
सेमल	०	०	४	
कांडी	०	०	३	
व्यास घाट	०	०	४	
छालरी	•	०	४	
उमरासू	०	०	२	२
सौड़	०	०	२	२
देव प्रयाग	०	•	१	२
			५५—	६
धनेश्वर	•	०	१	४
देवानी गाड़	०	•	२	
कुलासु	०	•	२	
सीता कोटि	०	०	१	
रानी बाग	०	०	२	
कोलटा	•	०	१	२

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
रामपुर	०	२	२	२
अगकरणी	०	०	३	
बिल्व केदार	०	०	२	
श्री नगर	०	•	३	
			७४	
सुकरता	०	०	५	
भट्टी सेरा	•	०	२	१
छाती ख्वाल	•	०	१	२
ख्वांकरा	०	०	२	
नरकोटा	०	•	२	६
पांच भैया (चढ़ाई)		•	१	२
गुलाबराय	०	•	३	
रुद्र प्रयाग	०	०	१	२
शिवा नन्दी	०	•	७	२
नगरासू	०	०	२	४
कनेड़ा	०	०	२	२
गोचर	•	०	२	१
पट्टुआ पीपल	०	०	१	
करण प्रयाग	०	•	६	६
उमट्टा	०	०	२	
कालद	०	०	२।	६
लंगासु	०	•	१	१

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
सोनला	०	०	४	
नन्द प्रयाग	०	०	२	६
मैठाणा	०	०	३	
चमोली लाल सांगा			२	
मठ	०	०	२	
छिकना	०	०	१	
बावला	०	०	२	
सिया सैन	०	०	१	
हाट	०	०	१	
पीपल कोटि	०	०	२	
गरुड़ गङ्गा	०	०	३	४
टैङ्गनी	०	०	३	४
पाताल गङ्गा	०	०	३	१
गुलाब राय	०	०	२	
कुम्हार (हेलेङ्ग)	०	०	२	
खनेटी	०	०	२	२
झरकुला	०	०	१	२
सिंह धारा	०	०	२	६
ज्योर्तिमठ	०	०	४	१
विष्णु प्रयाग	०	०	२	
बलदौड़ा	०	०	१	
घाट	०	०	३	१
पांडुकेश्वर	०	०	२	६

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
विनायक	०	०	१	४
लामा बगड़ा	०	०	१	३
हनुमान चट्टी	०	०	४	
श्री बद्रीनाथ	०	०	३	
			१८३	

रुद्र प्रयाग से केदारनाथ को ४८ मील है। त्रियुगी नारायण सहित ५३ मील है।

नं० २ सड़क			मील	फ०
छतौली	०	०	१	
तिलवाड़ा	०	०	१	
मठ	०	०	१	
रामपुर	०	०	१	२
अगस्त मुनि	०	०	४	
देवी मन्दिर	०	०		४
सौड़ी	०	०	२	
चन्द्रा पुरी	०	०	२	
भीरी	०	०	२	४
	०	०	३	३
गुप्तकाशी	०	०	२	१
नाला	०	०	१	
नारायण कोटि	०	०	१	२

नाम चट्टी	दूरी मील फ०
व्यूङ्ग मल्ला	१—४
मै खण्डा	१
फाटा	१—४
बदलपुर	३
रामपुर	२
त्रियुगी नारयण चढ़ाई	६
सोन प्रयाग	२—४
धरकटा गणेश	१
गौरी कुंड	१—४
भैरव	१
स्वर्गा निशानी	२
राम बाड़ा	३
केदारनाथ	५

केदारनाथ से बद्रीनाथ

१०१ मील

नं० ३ सड़क

नाम चट्टी	दूरी मील फ०
नाला चट्टी	२३
केदार खंड विद्या पीठ	१—३
ऊषामठ	१—२
कंथा (गणेश)	३—६
ग्वालिया बगड़	२
पोथी बासा	३
दोगल भीटा	१—६
बणिया कुंड	१
चोपता	१
तुङ्गनाथ	३—२
भुलकना	२
पाङ्गर बासा	२—६
मंडिल (गौडि)	३—२
वैरागिण	२
गोपेश्वर	४
चमोली लालासांगा	२—४

यहां नं० १ की सड़क पकड़लें।

देव प्रयाग से जमनोत्री-

१०८ मील

नं० ४ सड़क

नाम चट्टी	दूरी मील फ०
खरसाड़ा	१०
कोटेश्वर	४
वन्डया	६
क्यारी	८
टिहरी	६
सराई	५—४
भलडियाना	६

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
छाम	०	०	२	
नागूण	०	०	४	
धरासू	०	०	३	
कल्याणी	०	०	४	
गौड़	०	०	५	
सिलक्यारी	०	०	५	
गार्डाधार	०	०	५	
डंडाल गांव	०	०	२	
सिमली	०	०	२	
गङ्गानी	०	०	२	
जमुना चट्टी	०	०	६	
ओजरी	०	०	३	
डंढोरी	०	०	२	४
राना गांव	०	०	२	
हनुमान चट्टी	०	०	२	
खरसाली	०	०	४	
यमुनोत्री	०	०	४	
			१०८	

यमुनोत्री से गंगोत्री ९८ मील

सड़क नं० ५

शिमली	०	०	२५	
जगल	०	०	४	
सिगोट	०	०	७	४

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
नाकोरी	०	०	३	४
उत्तर काशी	०	०	६	

उत्तर काशी स गंगोत्री

गंगोरी	०	०	३	
नैताला	०	०	३	
मनेरी	०	०	४	
कुमहाल्टी	०	०	४	
मल्ला	०	०	२	
भटवाड़ी	०	०	२	
भुक्की	०	०	६	
गंगानी	०	०	३	
लोहारी नाग	०	०	४	
सुक्खी	०	०	५	
झाला	०	०	३	
हरि:सल	०	०	२	
धराली	०	०	२	४
जांगला	०	०	४	
भैरो घाटी	०	०	२	४
गंगोत्री	०	०	६	४
			६८	

गंगोत्री से केदारनाथ १२१ मील

सड़क नं० ६

मल्ला	०	०	४४	
स्याली	०	०	६	३

नाम चट्टी	दूरी	मील	फ०
प्यालु	०	०	३
छूरणा	०	०	३
बेलक	०	०	५
पंगू राणा	०	०	५
झाला	०	०	४
बूढ़ा केदार	०	०	५
तोला	०	०	४
भैरव	०	०	३
भौट	०	०	२
गुत्तु	०	०	८
गौ मांडा	०	०	४
दुफन्दा	०	०	३
पंवाली	०	०	३
मंगू	०	०	१०
त्रियुगी नारायण		०	५
केदारनाथ	०	०	२१

सड़क नं० ७

बद्रीनाथ से करण प्रयाग ६८

करण प्रयाग से ऋषिकेश १००

करणप्रयाग से राम नगर ६८-२

करण प्रयाग से राम नगर

सिवाली	०	०	४
सिरोली	०	०	४
आदि बद्री	०	६	४

नाम चट्टी	दूरी		मील	फ०
जौ का पानी	०	०	१	४
दिवाली खाल	०	०	३	
ग्वाल गवेड़ा	०	०	४	५
धुनार घाट	०	०	१	२
मेल चौडी	०	०	५	
गणाई	०	०	६	४
स्याड़	०	०	४	४
मासी	०	०	२	६
वृद्ध केदार	०	०	४	
भिकिया सैण	०	६	३	
श्री कोट	०	०	३	
बासौट	०	०	२	
ग्वाल खान	०	०	३	६
गूजर घाटी	०	०	३	
मछौड़	०	०	३	
पनवा धोखत	०	०	२	
गोदी	०	०	२	
टूटा आम	६	०	६	
मौराल	२	०	२	
कुमारिया	०	०	३	
मोहन	०	०	३	
गरजिया	०	०	५	
रामनगर	०	०	८	
			६८—२	

भजन नं० २५

प्रेमी बद्री केदार में जाया करो, तन मानुष सफल बनाया करो ॥

पहिले हरि के द्वार पर जाकर करो स्नान तुम ।
पैदा किया जिस ईश ने, उसका धरो फिर ध्यान तुम ।
डुबकी प्रेम से तुम लगाया करो ॥१॥

चल के आगे सात मील, मन्दिर नारायण का वहां ।
विश्राम करके पहुँच आगे, है तपो भूमि जहां ।
रवि कुण्ड त्रिवेणी नहाया करो ॥२॥

रेती मुनि की फाँद कर, शेष धारा जाइये ।
लक्षमण झूला भूल कर, संतों के दर्शन पाईये ।
स्वर्ग आश्रम में पाँव बढ़ाया करो ॥३॥

दो मील से है कुछ अधिक, गरुड़ का स्थान जी ।
बल वहां से मांग कर, आगे करो प्रस्थान जी ।
कोई नाम का पेड़ लगाया करो ॥४॥

भागीरथी और अलक नन्दा, का जो संगम है जहां
बस्ती की शोभा क्या कहें, देख लो जा कर वहां ।
तीर्थ देव प्रयाग नहाया करो ॥५॥

भगवान की माया से हाँ, मोहे गए नारद मुनि ।
श्री नगर वहीं मिलेगा, आप को आगे गुनि ।
दृष्य देख प्रकृति हर्षाया करो ॥६॥

अलक नन्दा में जहां, मिल गई मन्दाकिनी ।
मोक्ष की दाता समझ और पाप की है नाशनि ।
प्रयाग रुद्र में रूद्र मनाया करो ॥७॥

आगे चलो अगस्त के प्रेम से दर्शद करो ।
गुप्त काशी में शिवों को जाप से प्रसन्न करो ॥
गङ्गा यमुना की धारा नहाया करो ८॥

फिर मिलेगी देवी तुमको, भूला होगा प्रेम का ।
भूल कर आगे चलो, पर्वत मिलेगा हेम का ।
त्रियुगी धूनी में हवन कराया करो ॥९॥

बन की शोभा क्या कहें, फिर उतर, नीचे चलो ।
धर कटे गनेश से फिर कुण्ड गौरी जा मिलो ।
तप्त कुण्ड में पाप जलाया करो ॥१०॥

चढ़ते हुए आगे चलो, हिम जहां अपार है ।
बस वही सङ्कट हरण, नाथ का दरबार है ।
चारों तरफ को नजर दौराया करो ॥११॥

भेटा चढ़ाओ प्रेम से, मन्दिर में जब प्रवेश हो ।
खुद समाधि लग चलेगी, मन में जब न द्वेष हो ।
शङ्कर प्रेम से छाती लगाया करो ॥१२

दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्ता की संख्या Borrower's No.